

कथा सरवरी

भाग १



हिमाचल कला-संस्कृति-भाषा अकादमी,
परी महल, शिमला-9

प्रकाशक :

सचिव

हिमाचल कला-संस्कृति-भाषा अकादमी

शिमला-9

॥ सर्वाधिकार सुरक्षित ॥

प्रथम संस्करण

माघ, 1898 तदनुसार

जनवरी, 1977.

प्रतियां : १०००

मूल्य : बी रुपये पचास पैसे

मुद्रक :

नवीन प्रिंटिंग प्रेस

बिलासपुर (हिमाचल प्रदेश)

हिमाचल कला-संस्कृति-भाषा अकादमी पुस्तक माला-पुष्प ७

कथा सरवरी

भाग १

[हिमाचल प्रदेश के सिरमौर, शिमला व कुल्लू क्षेत्रों की कुछ चुनी हुई
लोक-कथाओं का संकलन]

मुख्य सम्पादक
लाल चन्द प्रार्थी

सम्पादक मण्डल
हरि चन्द पराशर
मौलू राम ठाकुर
डा० बंशी राम
विद्या शर्मा



हिमाचल कला-संस्कृति-भाषा अकादमी

परिमहल, शिमला - 171 009

प्राक्कथन

पहाड़ी लोक-कथाओं का प्रथम भाग हिमाचल कला-संस्कृति-भाषा अकादमी की ग्रन्थमाला में सातवां पुष्प है। बर्फ के किसी बड़े तोंदे (लुठित हिमपूँज) में बर्फ के इलावा कितनी शिलाएँ, पेड़, पौधे, पशु साथ में ढेर हुए पड़े हैं, यह अनुमान नहीं लगाया जा सकता। परन्तु वह हिमपूँज कुछ अदृश्य रूप से चलित होता है, कुछ शरित होना रहता है, कुछ नीचे भूमि में रिसता है कुछ ऊपर पसीजता है। लोक कथा भी हिमपूँज की मानिंद है उसमें देवगाथा, पुराण कथा, इतिहास वार्ता आदि के कई तत्व समाए रहते हैं। और सबसे बढ़कर है उसका गल्प और आख्यायिका तत्व जिसका कथक्कड़ी रस उसे साहित्य क्षेत्र की परिधि में घेर कर ले आता है।

हिमाचल प्रदेश में आदिकाल से विभिन्न जाति समूहों का मेल जोल रहा है। अतः यहाँ का लोक साहित्य विविध और विभिन्न है। लोक साहित्य में से लोक कथा सर्वाधिक व्यापक रूप है क्योंकि इसके सुनाने वाला यत्र तत्र परिव्रतन कर लेता है क्योंकि उसकी अपनी साहित्यिक कल्पना कथा सुनाते सुनाते कार्यशील रहती है।

‘बडुकथा’ (बृहत्कथा सरित सागर) भारतीय लोक कथाओं का ऐसा भंडार है जो समय-समय पर भारतीय भाषाओं के ग्रन्थ साहित्य को सामग्री प्रदान करता रहा है, साथ ही उससे तत्कालीन भाषा रूपों का ज्ञान होता है और उस समय की भाषाओं के शायद लिखने में मदद मिलती है।

पहाड़ी भाषा और साहित्य की इस विकास बेना में लोक कथाओं से एक साथ दो वस्तुओं की प्राप्ति हो सकती है, साहित्य के लिए कथानकों का ज्ञानवाना और भाषा के ठेठ रूप। हमारा प्रयत्न है कि पहाड़ी लोक-कथाओं की सरबरी को ग्रन्थ साहित्य के लेखकों को निरन्तर उपलब्ध कराते रहें। यह पहला भाग हिमाचल प्रदेश के मध्यवर्ती क्षेत्रों, सिरमौर, शिमला तथा कुल्लू के सम्बन्ध में है और दूसरा भाग चम्बा, कांगड़ा, मण्डी व बिलासपुर क्षेत्रों से सम्बन्धित है।

मुझे आशा है कि यह पुस्तक उपयोगी होगी और पाठक इस प्रयास को पसन्द करेंगे।

लाल चन्द प्राणी

अध्यक्ष

हिमाचल कला-संस्कृति-भाषा अकादमी

एवम्

मन्त्री, भाषा-संस्कृति, हिमाचल प्रदेश

भूमिका

जो प्रदेश जितने विभिन्न प्रकार के जनपदों से बसा हो वह प्रदेश लोक-कथाओं में उतनी ही विभिन्नता रखता है। लोककथा मानव इतिहास के उस चरण की उपलब्धि है; जब मानव अपने से बाहर के संसार को और विराट प्रकृति को भावात्मक दृष्टि से देखता है और उसे अप्रयोज्य इकाई (अनयुटेलाइजेबल होल) समझता है। लोक कथा में कल्पना का फन्तासी रूप किसी अदृष्ट घटना को मनचाहे ढंग से चित्रित करता है। इसलिए सामान्य जनों में से प्रभावी ढंग से भाषा प्रयोग करने वाले कुछ एक ऐसे व्यक्ति अवश्य होते हैं जो गल्प में रस घोल सकते हैं।

प्राचीन साहित्य में उल्लेख है कि लेखकों की परम्परा ने भारत के आदिवासियों में प्रचलित सवा लाख कथाओं का संकलन किया था और कथा सरित सागर में उनमें से अधिकांश विरचित है। भारत के कथा साहित्य को उन कथाओं ने प्रचुर मात्रा में प्रभावित किया है। हिमाचल प्रदेश में विभिन्न जाति समूह और सांस्कृतिक समुदायों का आरम्भ से ही मिलन होता रहा है। विभिन्न वसु यहाँ आपस में मिलकर जनपद बनाते रहे हैं और आपस में मेल जोल के कारण उनकी गल्प में लेन देन होता रहा है। सदियों की इस रेल पेल से जो लोक कथाएँ आजकल सुनने सुनाने में मिलती हैं उनके अन्तर्गत की कथावस्तु में अनेक सांस्कृतिक रुढ़ियाँ (कल्चरल मोटिफ्स) हैं, जिनका निर्वचन सामाजिक, मनोवैज्ञानिक सांस्कृतिक दृष्टि कानों से किया जा सकता है।

हिमाचल कला-संस्कृति-भाषा अकादमी ने प्रदेश के लोक कथाओं के संकलन की एक विशाल योजना बनाई है इसके अन्तर्गत प्रथम प्रयास के रूप में दो पुस्तकें प्रकाशित की जा रही हैं प्रथम भाग में कुल्लू, महासू और सिरमौर की लोक-कथाएँ संकलित हैं और दूसरे भाग में चम्बा, कांगड़ा, मण्डी व जिलासपुर की कुछ एक लोक-कथाएँ एकत्र हैं।

इन कथाओं से जहाँ प्रदेश के मौखिक गल्प साहित्य का अनुमान लगेगा वहाँ इन क्षेत्रों की कथ्य भाषा के सहज रूप के उदाहरण भी उपलब्ध होंगे।

इन दोनों पुस्तकों के संकलन और सम्पादन में तकनीकी सहायक श्रीमती विद्या शर्मा ने मनोयोग से कार्य किया है। अनुसन्धान अधिकारी डा० बंशीराम और सहायक सचिव ठाकुर मौलूराम ने समय समय पर बहुमूल्य सुझाव दिए हैं।

अकादमी के सभी प्रकाशनों का कार्य अकादमी के अध्यक्ष श्री लालचन्द प्रार्थी जी निकटता और निष्ठा से देखते हैं। वह अकादमी की गतिविधियों के महाप्राण हैं।

हमें आशा है कि इसी शृंखला में हम शीघ्र ही किन्नौर और लाहुल स्पिति की कुछ लोक कथाओं के हिन्दी रुपान्तर को पाठकों की सेवा में प्रस्तुत कर पाएँगे।

हरि चन्द पराशर

सचिव

हिमाचल कला-संस्कृति-भाषा अकादमी
परिमहल, शिमला-9

विषय सूची

भाग १ :-सिरमौरी जनपद से सम्बन्धित लोक-कथाएं

क्रम संख्या	संकलक	लोक-कथा	पृष्ठांक
१.	विद्यानन्द सरैक	नीरो रो नांटेण दुधाधारे देव देवीटी रा जिम्पर देवे वलेंआ	२ ३ ५
२.	डा० खुशोराम गौतम	पीटू पीटी री कथा	७
३.	अमरसिंह चौहान	एक थिया साहूकार शिरगुल देव री कथा भाई भाई रा प्यार	६ १४ १८
४.	जगदीशचन्द शर्मा	राजे रा राज गोआ वाटो रा काज गोआ नी लाखा बार	२३ २४

भाग २ :-महासवी जनपद से सम्बन्धित लोक-कथाएं

५.	जगदीश शर्मा	नो लाख हाथे वेडमानी-मानदारी हूण्डू	३० ३३ ३४
६.	आचार्य केशवराम शर्मा	घोने री ठोडु	३७
७.	सुमित्रा ठाकुर	सोतेली मां	३६
८.	हरिराम जसटा	ब्राह्मण-ब्राह्मणी टुंछी राकस	४४ ४५

भाग ३ :- कुल्लुबी जनपद से सम्बन्धित लोक-कथाएं

९.	ठाकुरदत्त शर्मा	अनांखा स्वयं	४८
१०.	सुरेन्द्र	फूल दी वेटी चालाक जट चार तयार वारेहू ओंस	५० ५२ ५३
११.	एम०आर० ठाकुर	हुरंगू नारायण नेजली देवी काग भाखे राखसणी री मीत	५६ ५६ ६२
१२.	एन० सी० शर्मा	दादी हिड़मा	६८
१३.	विद्या शर्मा	रूप-वसंत सुरू री देवी रुभू री कथा	७१ ७५ ७७
१४.	नरेन्द्र कुमार	बाबा फुआरी	७६
१५.	व्योमेश चन्द्र	जचौली जातर दिआरी ठाकर	८२ ८३

पहाड़ी लोक-कथाएं - ३०

भाग १. :- सिरमौरी जनपद से सम्बन्धित लोक-कथाएं

क्रम संख्या	कहानी का नाम	संकलक
१.	नीरो रो नोटेश	विद्यानन्द सरक
२.	बुधाधारे बेव बेवठी रा	विद्यानन्द सरक
३.	जिम्पर बेवे शल्लेष्ठा	विद्यानन्द सरक
४.	पोंटू पोंटी रो कथा	डा० लुशीराम गौतम
५.	एक धिया साठुकार	धमरसिंह चौहान
६.	शिरगुल बेवते रो कथा	धमरसिंह चौहान
७.	भाई भाई रा प्यार	धमरसिंह चौहान
८.	राजे रा राज गोम्रा बाटो रा काज गोम्रा	जगदीशचन्द्र शर्मा
९.	नौ लाख्वा झार	जगदीशचन्द्र शर्मा

नौरो रो नोटणे

आज नौरे रा गांव रिणके तसीलो (सिरमौर) रे संघड़ा द्लाको रा सोबी दू बोड़ा रो प्रसिद्ध गांव ओसो पर ऐसी गांव रे बजुरग पछादे तसीलो रे गिरी पार मान्दर परगणे रे नौरे गांव दे बोसो थें। आज बे नौरे रा येह प्राचीन उजड़ा दू गांव ढोले दू थोड़े घोरो, मन्दिर रो आंगणों री साफ थाती (खण्डर) सुरक्षित राखे ओसो। ऐनी रे घौरे दो म्हाण्डे जे खाड़े नौरे री खाड़ी रे नांव पलाल नोदि दे मिलो ओसो।

कोई चऊ शौए बोरघं रे बात ओसो जे ऐसी नौरे रे गांव दा कोड़ था। हर घोरो दे कोड़े थे। देवी देवते पान्दे लोग बिश्वास कोरो थे पाँडतो पावचो रा जमाना था। सारे गांवो रे माल गणबेओ गठावेओ रोजे गोए, पर कोड़ न टोला जागरे चेरशी शांते ओखणे, भूण्डी भाइठो कान्का न किओं तिने एकी दिनो रे बात ओसो जे एक नोटए (नट) रे एक पार्टी गांवों दे आए से क्या देखो जे जेतयो देखणे आल गांव दे आए तिनो माहे भोइतो कोड़े थे ऐ। एखो दा कोड़ लागदा तयार था कोरने काम भोगवानो रे थे। एक नोटणे विउने तींए बोलो तुमोरा कोड़ टोलो सोको जे तुमे सारे गांवों रे मिले रो एक काम कोरो। मेरे बात मानण पोड़ले। गांवोरे कोड़े टाटे माठे सोब ढालो कोरदे लागे मांतिण म्हारे भगवान तो तू आँसे जे गांवों दो कोड़ टालो। वंली गांव रे ठोगड़े स्याण घोरे पूजे तो खुमले बेटे। नोटए बे गांवो दे थे। नोटणे खुमली दे थे। नोटणे ऐ गांवो रे ठोगड़े आगे वोलो जे सामणे रे ढाको दो थोड़े खे बेड़ लागणे ओ। तोड़ने बीख रो बाकट बेड़ो पान्दे खे लागणो ओ दिन किओ रो नोटए ढाको दो बेड़ आण्डे थोड़ खे लाए। बाजा बाजदा लागो रो नोटणे नाचदी बेड़ो पान्दे झूमदे लागे बेड़ कोड़ फरलांग भेरे थे।

तब क्या बीख रो बाकट एक कदम एक बकरा कोटो। कोई मढ़ाले खोतम होई। एकी री वारी जोवे आई तिनिए सुंचो २ रो चूपी बेड़ बे काटे। नोटणे आधी बेड़ो पान्दे वे पूजे बेड़कोटे के से हून्वे बे रीड़े। तींए रिड़दे २ बोलो, जे कोड़ गोआ टोले नौरो गो गील, तेसी दिनो दो मोरो ढोले रो नौरो

गोलदो लागो एक आदम बोली था नोगरे तिणिऐ जोवे तेतो शोणो तो से जाएरो नोरे बोसा रो नोरे नावो रो गांव बसाया। भगवाने रे माया ओसो जे ऐवे तोरो गोल गो। माटलो रा गांव आग बे नोरालो रे बरादरी रा ओसो। आज बे नोटुऐ ऐसी गावो दे नी डोव्रे। कुछ बोरषो पोएले तो पूछो थे जे एथा कुऐ नोराल तोनी हामे तमाशा नी कोरदे।

एस तोरे नोरालादू कोड़ टोला रो गांव खतम होआ। आग होली दो थोड़े देवठी मकान तोलणे खलेण नोरे रे यादगार ओसो तोई ऐरा पोता लागो जे ते गांव सुख सम्पन गांव था लोक धोणे थे। खाई जीवी थे। वोहतो रा पोलटा इनो रिणके बसाए गोआ वाकी रा। सर्वनाश होए गोआ।

शब्दार्थ

गद्य	अर्थ	गद्य	अर्थ
1. बोसो	रहना	6. बड़ो	बड़ा
2. डोगड़े	अकलमन्द	7. नोटुऐ	नाचने याने या तमाशा
3. खुमले	गांव की पंचायत		विलाने वाले
4. टाको	ढंकार	8. टोला	चोटी
5. बाकटू	टाछो बकरा		

दुधाधारे देव देवठी रा

सिरमौर जिला रे देवठी मभगांव रे गावों दा आज बे सुन्दर कला-कृति रा अनमोल रो सजीव रत्न देवो रा मन्दिर एक यादगार ओसो। ऐसी मोन्दरो दो आज बे एक (मूरत-पुतला) देव रत्नो रा प्राचीन पुतला ओसो। ऐसी पुतले रे मुहों दे हलके-र काल नशाण कुछ ऐतिहासिक सबूत देओ ओसो।

कोई दारो शोण बोरषो रे बात ओसो। देवठी रे नजदीक बड़ोग गांवो दा डिवरे घलेवीगो रा डनराल भाट रो भाटणे रो थी। एकी दिनो री बात ओसो जे भाटणे दूधो छाटदे लागे रोवे थे। कोरने काम भगवाने रे थे ऐ, दूधो रे कठा एंडे दो शोणण-शणण सोरो। भाटणे हाथ बे छाड़ो रो तीन्दो कीऐ बे न। बस तोबे तोई छाटदे लागे रो सीऐ शणाका—रो सीऐ घमाका तोबे तोई हाथ धोओ रो हाथ कठा एंडे ले राखो तोबे बे सीऐ शणाका तोबे डवराल भाटो ले बोली तीऐ, माता ओरा आबो देख तो इन्दो कीऐ ओसो। भाटे हाथ धोवे रो कठाएंडे ले छाड़ाहाथ देखो तो तीन्दा एक पुतला। भाट बोड़ा हंरान परेशान होओ तोबे तीनिऐ पोडतो मे जाए रो गणाओ गठा वों पर पोता न चाला। आखिर सो ठाकरोगे मभगावों

डोवा । ठाकरे बोली जे तो होला दोश तो लागेलो चटी ओ रो खोज नातो जे होला भूत प्रेत तोवे न होलो कीऐ बेन । बोस डबराल भाट घोरे डोवा नो ओवरे दो लीग फाटो तीणिऐ ओरज लाए जे तो नू देव देव देवता तो आपणा रेख रखेनी, जं ओसे भूत परेत तोबे देखमें तेरो । कोरने काम भगवानो रे थेऐ जे जोबे सोबिए ओरज लाए तोचटी ओ रो खोज बड़ोगे दो मभगावों रो मभगांव दो देवठी लबाणे कुन्थलो तोबे देवठी आवेरो स्थान रेखा । रो थड़ोटो रे जागा बणावे देशे धारटिए मिले रो मन्दिर बणावा रो सात जागरे कीऐ सातव देस देवो रे केदश लागे रो नाच मुजरा स्वांग कीऐ । भ्राज बे सेऐ प्रथा ओसो । ओखणे चेरशे जागरे, शात देवो रे पूजणे मानने रे जोग ओस जागरे माहे देव कलण नावको बड़ा सुन्दर भेला हाओ ओसो । देव बालगी सगासनो दा डोवो । कुछ वधन वे ओसो जेरा सारे देशो दा सहवास नी कोरदे, शकार नी खान्दे, ऐरी बातो बो ओसो जे देवठी गलत बात स्थानो रे नाते नी कोरदे ऐरे केतण प्रतिबंध ओसो जो मान्य ओसो ।

दोओ से कीऐ बोले भाइठो नी चोददो ऐथी कोई ने देव दूणो रे कठां एंड दा उपने रोआ ओसो आज बे दोओ रे स्थान थाडोटु, मोड़ डूमो रा चौतरा बड़ोगे, थड़ोटका, पूजनीय रखेनी ओसो ।

रोज भण्सेरे पाच् रे बंली, बेल नागत बाजा बोजो ओसो । कंदशे रो जागरे माहे राते धवेले साथ देओ ओसो रो चोगड़े धरेवणे वाजे देवकरे बाजे बोजो । ठेका सूरज न्हाण देव री यात्रा रे बाजे ओसो ।

ऐबे जो पुतला देवो रा दूधो माहे फाबा था से जेठो मूल ओसो रो आखणू चेरशू रो दवोणू नावों रे देव रे पुतले नये बणवे होन्दे ओसो । ऐरा वचार ओसो । जे थे सोब पुतले लगभग 800 वर्ष पराणे ओसे । हारो बे कोई देवो देवते रे पुतले सगासनो दे देखणे से फाबो ।

शब्दार्थ

शब्द	अर्थ	शब्द	अर्थ
1. छाटवे	मथना	4. नोगत	बाजा
2. ओवरे	कमरा	5. फाबो	मिलते हैं
3. भण्सेरे	सुबह		

जिम्पर देवे दलेंचा

लगभग एक हजार बोरसो दो वे पोएले रे बात ओसो। झोलो रे डरे रो चीन्दे दू भाए बोली थे। दोसो दा काल था। तीने दूएँ भाइए आपणा साज सामान थागा रो नोगरो खे निकलें। कोई दिनो वे बाद लादे पालवे पूजे। ऐरो बोलो जे भेखलू नावो रा एक आदमी तीनों फाबा जो भाट आये खे जातेरा बोलो था। तिनिए बोलो आज ऐसी नालो दा जीओँ रा जागरा ओसो। तिने दूएँ भाइए डेरो चीन्देगे बोलो चालो हामें बे देखमें। से तीने भोणे डरे, चीन्दे, भाखलू निओँ डाबरे खे डोवे जेना जीओँ रा जागरा थेआ। एरो बोलो ओसो जे आगे से भेखलू पाछे डरे चीन्दे डाबरे दे उतरें। गाची २ ताई जोबे से डूबे तो तिनाखे बार फाबे। तीऐ बाटे तीनो भोरे माछ देखिए। जो हान्दरदे नाचदे पूजदे लागे रोवे थेऐ ऐबे से तीने भोणे कनारे दे बेटे गोऐ। खूब पूजा पातरे देखे कोई किशम रे माछ हाण्डदे ज़ान्दे देखे। जोबे ऐ पूजणे रा काम पूरा होआ तो जागरे रो खाण खुतो। पंगते लागी रो खान्दे देन्दे लागे। जीओँ रे देव एक थाल, एक कोरवा तीन चीजे थी। बस भगवानो रे कोरने कामथे एकी ऐ कोरवा, एकीऐ डोंरू, ऐकिए थाल थागा रो चपी तीने ओणे डरे, चीन्दे, भेखलू तीनों रे जागरे दो भागे। खूब फंटे दीते आखिर दिन रात भूले प्यासे झलोटी (जिला शिमला ठियोग तहसील) गावों री सोई सेरे दे पूजे। तोवे तीऐ भोणे से देवे रा समान थाल, डोंरू कोरवा, राखा भोंइदा रो आपे कीआ राम। पाण्डे परोडति वेदे भाट पजेरे गोणने गाठणे आल तोव हाडरो री सेरे दा सोबी दो पोलका स्थान देवे रा वणावा गोआ। भेखलू जो लादे पालवे रा भाट था तेसी दो तीने पूजदी बोई नगारे वजावे। ऐके जाते पाते रा टाडम था। बस से तूरे वाजगे वणावा रो देवे ऐ देश कारा। तोवे बोलो जे रोजका आदम देवे री ताई लागो था। तोवे पूजे जोजेओ रोजके बाकरे गाए ल्हओ। तोवे आठवे दिनारा बाकरा, तोवे म्हीने रा तेरा कोरेओ शोउजो रे नोगाते खे भोटा (भंसा) रो चौईची रे नोगाते खे एक २ बाकरा रो भोटा चोंडोद थेआ ऐ रोआज आज २ ताई था। कुछ बोरसो पोएले ऐ रवाज खोतम होआ ओसो। तोवे हाडरो दो देवेऐ चटीओ रो खोज लाओ रो झलोटी, होलो न्हाउलो वणजडी टेली मानलू बगाइलो दलेऐ ताई लागो। दलेऐ आपणो स्थान रेखो। तेनी दा बाद टेली आपणो मीड रेख तेरा कोरेओ देवे रा देश बोणा। आज बे देवेरा प्रत्यक्ष देखणे खे फाबा। हर बोरस चौईची रो शोऊजो री आठवे गलणे रे जात पारमपारिक देवे रे मेल ओसो। जोबे कोसरे देवे रे देशो दा पोएलका छोटा जाओ तो बाल बहावेओ नौराते माहे जडूले देवे रे स्थानों दे काठणे कार ओसो वधावे सोबी दो पोएले दलेऐ चोडा ओसो। आजबे ऐ रवाज लच्छमणो रे रेखा ओसो। आज वे गीतो रे बोल अमर ओसो।

दलेंओ गाणो केलिवो न्होउलो रे ठाए डेरी चीन्दी भेखलू संगे पोहाडो खे आए आजबे कुछ कड़ी इओ पाजडे रे बोलो री गायणों दी गाणे खे फाबे।

देवे रा देश अल्टी डोलों न्होउली कूड डिबरे बगाइली ओसो। देवे रे मानता आखणें ऐ जिव्हे कोण्डे देव झाओ हेरो जागर ले देवे रे पालने नेजे छोड़े बोड़े सुन्दर समारोहे मघालू रे घोरे डोम्रो खूब दाल, पटाण्डे, घीऊ बकरो खाणें ले फाबो ओसो।

शब्दार्थ

शब्द	अर्थ	शब्द	अर्थ
1. जीम्रो	जिसका	7. चोइचो	चंद्र
2. गाचो-गाचो	कमर-कमर	8. नीराते	नवरात्रे
3. डावर	रुका हुआ पानी	9. फाबो	मिलना
4. भोइंदा	नीचे	10. पोएलका	पहले का
5. भाट	ब्राह्मण	11. भ्राजवे	भ्राज भी
6. ओटा	भैंसा		



पीटू पीटी री कथा

एक थिया पीटू एक थी पीटी। दुईने एकी बोणो में रहिओं थिए। एकी दिनों पीटिए पीटू ख बोला जे म्हारे ओस्कली कारेने तू बोणों में जाईये मोटी मोटी छोड़ी ले आ। पीटू त्योंरी बात माने ऐ छोड़ी लेओणी चला गया।

सो एकी रीछो रे बोणों में जाई से खूब मोटी मोटी शूकी-छोड़ी काटणी लागा। छोड़ी काटणी रा शब्द (शाद) शूणी ऐ रीछे जोर दी हाक (धाह) देई रो पूछा—कूण रे तू जु मेरे बाणों में छोड़ी काटणी लाग रवा ?

पीटू बोला, मामा ई तो हों असू।

तू कूण ओसी ? हों अमू पीटू।

तू मेरी छोड़ी क्यों काटणी लाग रवा ? भाग एईदा निभांगुए (मारुए)

पीटू पेईली तो कुछ डोगा, पीर तेणिए रीछो री खशामद कोरी ऐ बोला, मामा म्हारे घोरे ओस्कली बनावणी। तेनी री खातरी छोड़ी न्हीणी लागरवा।

रीछे बोला, ओस्कली तो त्हारे खाणी। छोड़ी तू मेरी न्हीणी लागरवा। मीं का मिलणा ?

पीटूए बोला, मामा हाम ताई ले बि ओस्कली दे ओले।

रीछे खाणे रा लोभी हो ओ। तेणिए बोला, मीं किश। पोता चालणा जे तुमें ओस्कली बना राखी।

पीटूए बोला जे भालको जब म्हारे गाए खोड़ा धुआं चालला तो सोमभ ली जे हाम ओस्कली बनावणी लाग रवे। तोब तू खाणी आ जाई। रीछे बोला, आछा, तोब तू छोड़ी लो जा। पीटूए खूब मोटी मोटी छोड़ी काटी, एक बोड़ा सा पूला लाया रो घोरे ख होटा।

रेके दिनों पीटू रो पीटिए खूब ओस्कली बनाई रो खूब खाई। खाई पी ऐ तिने एक एक ओस्कली चुल्ही रे अगले रो पाछले आंवदी पांद राखी एक एक चुल्ही रे दुई नाको पांद, एक चुल्ही री खेडली दी, एक घोरो में भुईदी रो एक द्वारो पांद। तोब तिने चुल्ही दे खूब शूके सीने छीटे ओरो रा भण दिया रो प्राणी सूतणी चले गवे। पीटू तो एकी तूम्बड़े दा बोड़ गया रो पीटी चाकी गोल् में बाड़ि रो सुत गई।

रीछे जोब खोड़ा धुआं चालदे देखा तो सी ओस्कली खाणी रे चाव में पीटू रे घोरे री काहनी चाला। घोरे पोंहची ऐ तेणिए देखा जे तेथ कुई बिनी एंथी रो दू चार ओस्कली घोरो में जेगा जेगा राखी होई ओसों तेणिए धाओ दी।

रीछो रो धात्रो चुणी रो पीट रो पीटी चप हो गोए । थोड़ी बेरी में पीट पादणी लागी । तेणिए सूले शी पीटी ले बोला जे मी पादणी लागी । पीटिए बोला जे सूले शी पादी बाहरो रीछ ओसो । पारे पीटू रे हुड़िए (खूब जोरें) पादिया जेविए तुम्बड़ी फाट गोई । तुम्बड़ी फाटणे रो बाज (शब्द) चुणी रो रीछ डोरी रो भाग गवा । तेसरे घोरो में राखी होई ओस्कली बि नि खाई ।

जांब रीछ भाग गवा तो पीट रो पीटी बाइण्डे^{१०} निकले रो खूब होसे ।

शब्दार्थ

शब्द	अर्थ	शब्द	अर्थ
1. पीटू	एक कल्पित लघु प्राणी खूब खाने पीने वाला	24. नाको	चूल्हे के सामने का ऊपर का कोण नुमा भाग
2. बुईने	दोनों	25. खेड़ली	चूल्हे की हद प्रकट करने वाली भूमि के साथ लगने वाली गोल बनी ऊंची भेड़ जहाँ तक चूल्हे की राख फैली रहती है
3. बोणों	जंगल में	26. भुईंदी	नीचे
4. ओस्कली	सिरमौर में त्योहार अथवा शुभ अवसरों पर चावलों के आटे से बनाया जाने वाला एक स्वादिष्ट भोजन	27. द्वारो	दरवाजे पर
5. छोड़ी	सूखी जलाने की पतली-पतली लकड़ियाँ, ईंधन	28. शूके मीने	सूखे तथा गीले
6. त्यों री	उसकी	29. छोटे	लकड़ी की पतली-पतली छड़ियाँ
7. जे ओणी	लाने	30. भेण	खूब ईंधन डाल कर अग्नि को प्रज्ज्वलित करना जिस में जे प्राग की लपटें और धुंआ साथ-साथ निकल रहा हो
8. शाव	आवाज	31. मूतणी	सोने, नांद लेने
9. हाक (घाह)	जोर से पुकारने की आवाज	32. तुम्बड़ा	तुम्बा
10. ओम्	[मैं] हूँ	33. चाकी	चक्की के ऊपर पाट का वह तंग गोल भाग जहाँ पीसने के लिए अन्न डाला जाता है
11. भांगुए	साकू गा पीहूंगा	34. काहनी	शोर, तरफ
12. तेणिए	उसने	35. नेथ	वहाँ
13. खशामब उई खुशामब	मिन्नन समाजत	36. जेगा	स्थान
14. घोरे	घर में	37. ओसों	हैं
15. मी	मुझ को	38. सूले	अहिस्ता से
16. ताई ख	तुझ को	39. हुड़िए	जोर से
17. लोबी	लालची, लोभी	40. जदिए	जिस कारण
18. ओलको	आने वाला कल	41. बाज	आवाज
19. खाड़ा धुंआ	खड़ा, ऊँचा उठने वाला धुंआ	42. बाईण्डे	बाहर की ओर
20. पूला	लकड़ी या घास का गट्टा		
21. होटा	बापिस आया		
22. रेके	बूँसरे		
23. आवाबों	चूल्हे के आंच निकलने के छेद		

एक थिया साहुकार

एकी गांव बा एक साहुकार रौअ थिया। मां बाबा तेसके मरी गोवे थिए। पाछु तिनका आठी आदमि रा कुड़बा थिया। जिनु मुंजी तीन तेसके भाइ, तीन तिनकी तिरोंइ एक आपू रो एक तेसरी आपणी तिरोंई थी। घरों रा काम खूब धूम धड़ाके शा चाला हंदा थिया। फकं सिफं एतौड़ा थिया जे तीअग्ने भाई आपणे बड़े भाई से खुश नी थी। क्यों के सी आपणी तिरोंई का गुलाम जिया रौअ थिया बणा हंदा। इयो बातों लोई सी नराज थिए। तिनुवे एक देस आपणी एक खमली करी रो आपणे बड़े भाई से बोलो जे या तो तु आपणी तीरोंई री गुलामी करणी छोड़ी दे ओरो या तु घरों शा निकली जा। लो महाराज जु घरों भीतरा सेयाणा थिया, जेसको घर थियो, तेसो खेइ सी घरों शा निकाल दे लागी रोवे थिए। परों भई जिये सी बड़ा भाई आपणी तिरोंई रा गुलाम थिया तिये ओकी ढब्बे सी भोतई आच्छे सभाव रा थिया। तेने बोलो जे मुले घरों शो निकली जाणो मंजर असो। परों हांव तुवो सोब्बी से खुश देखणे जाऊं। लो जी बड़ा भाई जेसीसे साहुकार बोलो थिए सी आपणी तिरोंई सेअता घरे गा आपणे भागो री खोजो दा निकली गोवा। जाणो तिनके कोइके थियो ए पता कोसीइ कोई बी नी थी। आपु बी तेसकाई एजा पता नी थो जे आमोर कोइके जाणो। दुइने जणे चालदे रोवे चालदे रोवे हारी खड़ीइबा सी बिशा करदे एकी डालो मुली बाइशे। तेसकी तिरोंई बी बाइशो गोई री सी बी बाइशो गोवा एगोड़ी तिनुवे आपस मुंजी बातों लाई ओरो बातों वाअदू २ दुइने जणे तेसी डालो मुली सुती गोवे। दुई से एशी नौद आई जु इयों जाणो थियो ज पता नी ए मखमला र बछाण गाशी सुती रोवे। बस्ती रा फेर कुछ ऐसा पड़ा जु तेतीए से काअ हो जे तेसी डालो रें खोंगरों शा एक डानव निकला जेने तेसी साहुकारा की तीरोंई दा डंग मारा। तिरोंई से नौद एशी आई रौई थो जु तीयो कोई बिल्कुल बी पता नी लागी। रो तेशखेइ सुतीई सुती हंदी मरी गोइ। तियोंरी री आखी कोउव खाई पाई। एब्बे जी आगे काअ हो जे तेतीए से साहुकारो री नीज बी खोली गोई। सी ऊबा बिउजा अण्डो पुण्डो तेने देखो। देखो काअ ज तेसकी तिरोंई मरी गोइ थी। लियो री आखी कोउवए खाई पाइ थी। लो जी जब तेनीए आपणी तिरोंई रे एशे हाल देखे तो सी तो लागी जी लेअरो मारदा। रौई रौई रो तेसकी आखी बी ऊशाई गोइ। परों भई एब्बे जु मरी गोइ थो तिम्रोसे कुण लेआंदा थिया पाछु। सी तो मरी गोई थी। खयर जी तेने साहुकारे सोचो जे एब्बे ए तो मरी गोइ परों मेरे बी इयोइ आरी मरी जाणो। तेने लाकड़ी लुकड़ी कठी रों ढेरी लाई दी। बस्ती रा रेंका मोड़ आया।

शिवजी रो पावती जी घुमदे फिरदे आए। पावती जी ए तेसी डालां मुली देखां। तो सी एकदम रुकी गोई। तिये शिवजी से बोलां जे इनके हाल चाल पुछो। शिवजी ए बोलां जे हे पावती ए दुनियादारी भांत लाम्बी चौड़ी असो आमे कसी-२ की देखभाल करदे। ए तो आपणे-आपणे कर्मां रे फल असो जंशो कोबे बांधला तेशणोई काटला। पावती बोली जे हांव तो इथेशी आगे एक कदम नी राखदी पयले इनकी पूछताछ करो तबे जाइरो आगे इथे से आगे जाऊंगे। शिवजी से रुकणो पड़ो। क्योंकि सी जाणो थिये जे पावती एब्बे आपणी जीदो पांदी झडी रोई। इयो आशे एब्बे ज्यादा टेअड़ करणी वेकार असो। शिवजी रो पावती तेसी साहुकारो कांई आये रो तिनुवे तेसी से पूछा जे भई तु किवं से बांइशी रोवा माथे पाण्डा हाथ लाइबा। तेनीए बोली जे महाराज माथे पाण्डे हाथ एब्बे बी लाअणी नी ? तिरोंइ तो मेरी मरी गोई जु मेरे सोन्बी शी प्यारी थी। पावती जी ए बोली जे शिवजी महाराज करो कुछ लाज। शिवजी ए बोली जे देखां पावती जी इयो रो उअर पूरी हयो गोइ थी, यानी शमल कामल चुकी गो, तो तबे ए मरणीइ थी। पावती जी ए बोली जे भांव कुछ बी हयी रो हलो, परो इयो से जीवंदी करी दे। शिवजी लागे बोलदे जे एक ही बाट असो एब्बे, सी बाट असो एशो जे साउकारो से आपणी आधी उअर इयो से देणी पड़ली तबे जाइरो एसकी तिरोंई तुबे जीवंदी हई सको। साहुकारे बात मानी पाई रो बोली जे हे महाराज मेरी तिरोंइ तूबे जीवंदी करदी देव मुखे भांव आपणी जान बी देणी पड़ी जांव, हांव तो जान देणो से बी तयार असो।

शिवजी ए बोली जे तु आपणे हाथो दा पाणी का लोटा कअर रो एशेले बोल जे, हे भगवान मेरी आधी उअर मेरी तिरोंइ से लागणी चेइं। लो जी साउकारे एशेलेइ पाणी का लोटा हाथो दा किया रो तेशेले बोली दियो। बोलणो की देर थी तेइ तेसकी सी तिरोंइ जीवंदी हई गोई। शिवजी रो पावती चाली पड़े आपणी बाटो दे। औरो ओकी ठब्बे सी साहुकार रो तेसकी रांगडी बी चाली पड़े आपणी बाटो दे। चालदे-चालदे सी एक गांव दे पोंउचे। तेसीगांव दा एक साधु रोअं थिया जु कि भोतई आच्छा एकतारा बजावं थिया।

लो जी आगे बात केशी हयी जे साहुकारो रो तिरोंइ का साधु आरी प्यार हई गोवा। एशेलेइ कयो देस तुड़ी बातो चालदी रोइ परो तेसी साउकारे कांई इयो बातो रा कुछ बी पता नी थी। सी जाणो थिया एशेले जे मेरी तिरोंइ बी एब्बे भगवानो री भक्ती दी लागी रोइ। एक देस तेसकी तिरोंइ ए साधु से बोली जे हांव तांव आरी आणो चाऊ। साधु ए बोली जे औरो तेरा मालक कोइके जाला। तिये बोली जे इयो बातो से नी तु तइपीया, हांव एसीखे मारी देउबी रो तेई तु रो हांव आपणी जिनदगी हसी सेलियो काटुबे। लालची साधु बी इयो बातो से तयार हई गोवा। तिनुवे आपस मुंजी बात बीत लाइबा सारा प्रोगराम तयार किया जे केशेले हांव एसीखे मार बी रो तबे आगे दुइने जणे कोइके भेटीउंगे।

तो जी पाक्के ठाअक्के वादे हयी गोवे । साउकार रो तेस की तिरोंइ एब्बे तेसी गांव ने बी चाली पड़े । चालदे-चालदे सी एकी पाणी रे कुए काई होते जिये सी दुइने जणे बिशाव करदे बोइशी गोवे । काफी देर तुड़ी बोइशी बासीए तेसकी घर वाली ए बोलो जे मुखे पाणी ले आंव पीणो खे । तेने बोला जे तुई जा औरो तुई लेआव पाणी । सी गोई भाजी जे हांव ए डअरू कुवे अदी जाणो खे । हां एशेखे कोरुबे जे आगे-आगे तु जा कुवे ऊदा रो पाछे शी हांव आऊबी । साऊकारे बात मानी पाई रो भोला भाला साऊकार कुवे मांय जाणो खे त्वार हयी गोवा । तेसीगे काअ पता थिया जे मो आगे काअ छल कपट असो । साऊकारे कुवे भीतरा उतरी गोवा पाणी लेआणो रो तेंड गयल पाछे शी तेसकी तिरोंई बी तेसी आशे थी । जेइ साऊकार पाणी निकालणो रो खातरी ऊदा निउडा, तेइ तेसकी तिरोंइ ए तेसदा धाक्का दिया रो साधु सीअता किया हंदा वादा तिये पुरा किया । एब्बे सी बडी भारी खुशीथी । आपणी टअल करीयो सी कुवे शी ऊबी निकली रो बायरे आइ गोइ । आज तियों के एशे जाणीइ रो थियो जे मुखे आज नोइ जिन्दगी भेटी रोइ । सी बडी भारी खुश थी । तियोंगे बी पता नी थी जे ए थोड़े देसो रो खूनी एक देस तियों खे सदा-सदा खे मिटाइ देली । सी तिथे शी चाली पड़ी तिथे खे जिये तिये साधु आरी मिलणो रा वादा करी थोवा थिया । साधु एकतारा बजाव थिया रो सी नाचो थी । एशेखे तिनुवे सोम्बी खे मोई राखे थिए । रजवाड़े भोय तिन की बडी भारी इज्जत हंदी लागी । राजा बी तिनके नाच गाणे पांदी मोहित थिया । राजा ए आपणे रजवाड़े मांय तिनुखे एक घर बी देइ राखो थियो, रो तिनका गुजारा खूब खड़ाके सीअता चाली रोवा थिया ।

ओकी दब्बे जेसी कुवे मांय साऊकार थिया । तेसी कुवे काई तीन चार भेड़ वाले आये । जु कि आपणी भेड़ो आरी तिथे बीशाव करदे बोइशी गोवे । बोइशी-बोइशी बा तिनुवे सोचो, जे पाणी तो इथे असो इ ए क्यो नी खाणो खे बी इथोइ बणायो जाव । तिनुवे आनणी सोंपोअ की बुरी खुली रो आपणा खाणो वाणणो रा समान निकाली बा सामणे राखी दिया । एब्बे होटा बे एक भेड़-वाला पाणी खे । तेने बाल्टी पागांड दी बानी रो तेइ कुवे ऊदी छोड़ी दी । जेइ सी बाल्टी कुवे भीतरा होटी एकदम साउकारो की पाचो तियो बाल्टी दी पड़ी । भेड़वाला बाल्टी ऊबे खे खोइघो परो तेमके सी बाल्टी नी खोइचीयां । तेने आपणे ओकी साथी खे धाव दी जे वेइ ऊण्डोइ आव ए बाल्टी तो कोथी एशी अड़ी गोई जु ऊबोइ नी खोइचीवी । दो भेड़वाले ओके आये । तीइ ए जेबे जोर लाया तो समेत साऊकारो सीअतो तिनुवे बाल्टी खोइची पाई । आगे तो सी तेसी आदमि ख देखियो डरी ने गावे । परो जेबे तिनुवे तेसका शरीर छुजा तो पता लाग़ा जे तेसदा एब्बी खोडा शा सास रोइ रोवा । तिनुवे आपणा बिछाणा बिछाइबा तेसी खे बिछाणे पान्दी सुताली दिया । बिस्तीड़ा तेसी साऊकारो दा होश आया ओरो सी ऊबा बिउजा तेई बोइशी गोवा ।

एब्बे सी भेड़वाले तेसी खे पुछदे लागे जे तु कून तो तु असो ए कोइके शा

तु आइ रोवा रो तेरे जाणो कोइके थियो। साऊकारे आपणी दुख भरी कथा तिनु लोइ शुणाइ। जे आमे चार भाई थिये रो हांव आपणी तिरोंइ का गुलाम थिया क्यों के सी मेरे भोतई प्यारी थी। तियो पाछे मुखे घर बार छोड़णा पड़ा। भाई आरी बुरो बणणो पड़ो। आने घमड़े फिरवे एसी कुंवे गाशो विशांव करदे बोइशी रांवे थिए। तिये मुखे बोलो जे तु कुंवे शा पाणी निकाल पीणो खे रो हांव बी तांव सोअती गयल आऊबी। जबे हांव पाणी निकालदा ऊदा निउड़ा तो तिये मो दा घाक्का दिया रो मुखे तो पाया कुवे भीतरों रो आपु पता नी कोइके होटी हली। भेड़वालेए तेसकी सब्बी बातो शुणो शाणी बा, तेसी लोइ रोटी खेआइ दी रो तेसी खे बोलो जे तु एब्बे पाछु जा आपणे घरों खे तिरोंइ रा भरोशा नी करणा चेइ। तेने साऊकारे रोटी राटी खाई रो चाली पड़ा राहण्डा आपणी बाटो। बाटो पुण्डो सी सोचदा लागे जे मेरे भाई साच्चे थिये। देसों के दोपाहरे सी एकी गांव दा पोंउचा सी गांव तेजाई थिया राजे का रजावाड़ा जिये सी साधु रो तिसकी तिरोंइ थी। गांव मांय तेसी साधु रा रो तियो रा नाच गाणा हंदा लागी रोवा थिया। सब्बे लोग नाच गाणे देखणो खे कअठे हयी रोवे थिये। साऊकार बी बचारा तिये पोंवची गोवा रो एक ढबा खलीइबा सी बी तमाशा देखदा लागे। आगे बात काअ्र हयी जे नाचदू नाचदू तेसकी तिरोंइ रो झेठ साऊकारो पांदी पड़ी। देखोबा सी हयरांन हयी गोइ जे एसी खे तो मोवे मारी दिया थिया। ए पाछु केशेखे आया हला खंयर जी। तिये काअ्र किअ्रो जे तलोइ राजा काई होटी रो तेसी साऊकारो के बारे माय तिये राजा काई चुगली लाई जे ए एक भोतइ खतरनाक आदमी असो। राजा बी तियो पांदो मोहित थिया। तेसोखे तियोरी बात मानणी पड़ी। राजा ए बोलो जे तु काअ्र चाए। तिये बोलो जे एसो साऊकारो खे फांशो देइ देव। राजा ए बात मानी पाई। दुजे के राजा रे दरबारो मांद साऊकार साधु रो सेजो तिरोंई बी हाजिर थी। इतके अलावा रजवाड़े रे सब्बे लोग बी तीथे कअठे हयी रोवे थिए। साऊकारो खे फांशी देणो रा इन्तजाम बिल्कुल तयार थिया। राजा ए साऊकारो खे बोलो जे तु कुछ एब्बे आखरी बेइ बोलणो तो नी चांए। साऊकारे बोलो जे महाराज मेरी इयो तिरोंइ काई एक चीज असो हांव सी चीज मांगणी चांऊ। तेसकी तिरोंइ ए सोचो जे या तो एसके कांगणी मांगणी हामीया कुछ रूपीया पयसा मांगणा चांव हलां। राजा ए तियो की ढब्बे देखो रो बोलो जे तांव काई जु एसरी चीज असो, तीयो चीज पाछु देणो खे तु तयार असो। तिये बोलो जे महाराज जु बी एसकी चीज मो काई असो हांव देणी खे तयार असो। राजा ए साऊकारो खे बोलो जे हां साऊकार जु तेरी चीज इयो काई असो तु एब्बे मांगी सके। साऊकारे बोलो जे महाराज इयो रे हाथो दा पाणी रा लोटा देव रो पाणी का लोटा हाथो दो करीयो इयो लोइ बोलाव जे, हे भगवान जु एसकी चीज मो काई असो मोवे एसी खे पाछु देइ पाई। तोये हाथो दा लोटा किया रो बोलो जे, हे भगवान एसकी जु बी चीज मो काई असो सी मोवे आज एसी खे पाछु देइ पाई। बोलणो की देर थी रो सी तिरोंइ धोइना सुती गोइ। जबे तियोखे देखदे लागे तो तियो रे प्राण निकली गोवे थिए। सी सुती गोई थी सदा सदा रो तई।

इयो कथा लोइ ग्रामोले शिक्षा भेटौ जे जेसे आदमि के कर्म हंव तेशणाई तेसी खे फल भेटौ । आदमि खे ग्रापु पांदी घमण्ड नी करणा चेइं रो नी हो कोसी धोका फेरब करणा चेइं । रेके री बुराई करीयो आदमी ग्रापु खेइ बुराई भोस लोब ।

शब्दार्थ

शब्द	अर्थ	शब्द	अर्थ
1. कुइवा	परिवार	22. जेसो कोवे बोधला	जंसा बोएगा वंसा ही
2. तिरोई	घोरत	तेजपोई काटला	काटंगा
3. घूम घड़ाकेना	घूम घाम से	23. टेघड़	उलभना (या) बहस करना
4. तिघन्ने	तीनों	24. शामिल कामल	दाना पानी
5. वेस	दिन	25. रांगड़ी	साहसी घोरत
6. खुमली	पंचायत	26. भालक	पति
7. सेयाणा	ठगड़ा (अक्लमंद)	27. तड़पीया	तड़फना
8. लीघता	साथ	28. भेटौऊँ	मिलना
9. तेसकाई	उसे (या) उसके पास	29. भाजी	इनकार करना
10. हारी लडोइबा	हार थक कर	30. निउड़ा	नीचे झुकना
11. बिनांव	धाराम	31. टघल	काम
12. डालो मूली	वृक्ष के नीचे	32. भेडवाले	भेड़े चराने वाले
13. एगोड़ी	एक घड़ी (कुछ समय-तक)	33. सोंपोघ	सामान
14. बानो लाभ्रू-लाभ्रू	बालें करत करते	34. लोइखो	खींचना
15. लोंगर	कोटर	35. घाव	ग्रावाज
16. दानव	सांप	36. सुताली	सुलाना
17. नीज	नींद	37. बिस्तीड़ा	कुछ समय बाद
18. ऊबा बिऊजा	ऊपर उठना	38. कोईके	कहां
19. ऊण्खो पुण्डी	इधर उधर	39. कुंवे गांजी	कूप के ऊपर
20. तेघरो	जोर जोर से रोना	40. वेसो के वोपहरे दिन	को वोपहर के समय
21. कनाई	सूजना	41. ललोइबा	लड़े होकर
		42. भूठ	नजर
		43. कांगणी	धंगुठी (मूंठी)

शिरगुल देव की कथा

शिरमौर जिले की मानी हंडी की मशहूर चूड़ धार भला कृष्ण नी जानदा । बूधो साइ चिटीए धार, गयणी खे छड़णी वाली धार; जड़ी बुटी की धार, लोगो रे मनो खे लुभावणी वाली धार की देव की पवित्र चूड़ धार कृष्ण नी जानदे । जिनुवे ए धार देखी राखीं सी हजो जाये बिना नी रोगाइ सकदे की जिनुवे ए धार आखी लोइ तो देखी नी राखी परो चूड़ धार रे वारे मांय जानकारी जरूर हांसिल करी राखी सी चूड़धार जाये बंगर नी रोइ सकदे ।

शिरगुल देव की एक मन्दिर चूड़धार रे टिब्बे गाशी बना हुंदा असो जिये हर साल लोग शिरगुल देव रे दर्शन करणो की तेई जांव ओरो आपणी मुखना पुरी करो । शिरगुल देव की कथा एशेले बेताइ जांव जे एकी बेइ शिरगुल देव रे सासो की आवडी जे मेरे दिल्ली खे जाणो । सोच बचाव करीयो एक देस शिरगुल दिल्ली खे ऊचली गोवा । तलो मोटर गाड़ी तो कुछ बी नी हुंव थी पता नी पयदल इ होटा हला । खंयर जी शिरगुल जी महाराज जेसे केसे बी दिल्ली पोंउची गोवे । बेताओ जांव जे तिनु आरी पांच छोअ ओके हाटो वाले बी थिये । एक दो देस दिल्ली सी घूमदे फिरदे रोवे या एशेले समझो जे सी सेयल सपाटा करदे रोवे । सेयल सपाटा करणो बासिये, सी जु शिरगुल आरी हटी आई रोवे थिए सी घरो जाणो खे तड़पी रोवे थिए । तिनुवे शिरगुल देव खे बोलो जे आज की रात तो आमे जेशी केशी आगु काटुबे परो दोती आमारे सोअदा पाता लोअणा की तेई जाणो दोतीइ इथे शो पाछु घरे खे । घरे बी तड़पी रोवे हले । रात जेशी केशी काटी पाई । दुजे के सी सूरजो की किरणो आरी ऊबे बिउजे । थोड़ा भोउता नीना नुन्ना किया । तेइ सी शिरगुलो आ की सोदा पता लोअदे बोइजरो दे निकली गोवे । कुणिये गुड़ लोवा कुणिये आपणे कुड़बे खे खटाणो की तंइ कपड़ा लोवा । खंयर जा तिनुवे समझबे समान लोइ पाया थिया बस नून रोइ रोवो थियो लोअणो खे । एकी बाणिये की दुकानी दे नून लोवदे बोइशी गोवे । भाव की बातचीत आगेइ हई गोइ थी परो तिनके एकी बातो पावो टअली गोइ सी बात थी एशी जे जेइ बाणिया नून तोलदा लागी रोवा ओरो तेने एकदम ताखड़ी दा डाण्डी मारी । बस जी तवे काअ थियो शिरगुले तेसीखे डाण्डी मारदी बेइ देखा पाया थिया । शिरगुलो की कुछ एशी ओक आई दो पड़ताल ले लाये बाणिया दे की हाथो की ताखड़ी ऊण्डी करी की आपू लागी नून तोलदा । बाणिया ए काअ कियो जे तेतीए खे गली बेअड़े रे लोग कअठे किये ओरो जी तिनु हाटी की तो आच्छी मार कुटाई हई गोइ परो शिरगुलो पाण्डा हाथ लाअणो की कांसीई की बी हिम्मत नी पड़ी । सेजे जु राहण्डे हाटी थिए तिनुवे बोलो जे आमोरन तो नून चेई की बाकी जु आमे सोदा पाता लोई थोआ एजा बी त्वारे पाछु करणा तो पाछु करो परो आमोखे छोड़ी देव । लो जी तिनुवे तो आपणे पिंड प्राण अजं करीयो छोड़ोई पाये । तेइ सी सबवो जणे शिरगुलो खे छोड़ीयो घरे खे आये । शिरगुल एकलाई दिल्ली रोवा ।

जबे सी हाटी घरे पोंउचे तो तिनुवे दिल्ली री बिरथा सग्रबे गुणार्ई दी । लोग हयरान हयो गोवे जे शिरगुल केरोखे रोई गोवा एकली पाछु । लोगे गुणो राखो थियो जे दिल्ली मांय राकोअस रोव । जितके कारण कोसांड की बी एशी हिम्मत नी पड़ी जे दिल्ली जाइवा आभे शिरगुलो खे पाछु लेआव ।

लो जी शिरगुल बीच मोइदानो दा बोइशा रो तेने दुई लातो का चूल्हा बणाया । दुई लातो रे बीच आग बालिब। गात्रे खीरो का पतीला धरी दिया । एशेखे जबे राकशसे देखो तो सी बड़े भारी हयरन हई गोवे जे ए कण हला एशणे तप बाला । परो तिनके सासो दी तो एकई बात अड़ी हंदी थी जे एसरी आमारे सामणे एशणी हिम्मत केरोखे हई गोई । सासो ऊदे सबबोई जणे डरो रोवे थिये । परो सामणे जाणो री हिम्मत कोसीइ दी नी थी । एकी राकशसो दी झोक आई सी होटा तेने खीरो के पतीले दी लातो की लाई । बतायो जांव आधी खीर धोइनो पुण्डी ठली जिथू लोई आधी दिल्ली फुकीइ गोइ । लो जी एब्बे तिनके बात फशी गोइ जे एसीखे केराखे काबू किया जांव । आखिर में जबे तिनके कुछ बी दाब नी चाली तो तिनुवे आग्र किओ जे चाम्बड़े की डोरो बणाई एक लाम्बी शी, रो दूर शी सेजी डोर सोदी फेरकाई जु कि शिरगुलो रे गलो दी पड़ी । लो जी तियो चाम्बड़े की डोरी रे कारण शिरगुल तिनके काबू दा आई गोवा । तिनुवे काग्र किओ जे शिरगुलो खे साती कोठड़ी भीतरा बन्द करी दिया ताकि शिरगुलो का अता पता कुछ नी लागी साको । बायरे लाई दिया पग्ररा । एब्बे शिरगुलो के छुटणो चापरी गो । गोचदा लागे जे कोरू तो कोरू परो काग्र कोरू । कयो किस्मो रे बचार सासो दे आये । हठी-हठी शिरगुलो खे एक बाट भेटी । शिरगुलो खे बात आई जे बागड़ देशो माय गुगा देवता असो जु कि एसी बखते मेरी मदद करी सकी । शिरगुले चाउलो रे दाणे मंतरे ओरो कयदी खाने शे सेजे मंतरे हंदे चाउल बाईण्डे फेरकाए । शिरगुल देव दा कुछ एशा सत थिया जु सी मंतरे हंदे चाऊल बाईण्डे फेरकाए तलोई बागड़ देशो माय गुगा जो खे पता लागी गोवा जे शिरगुल देव कीथी मुसीबतो दा असो पड़ा हंदा । बिस्तोबड़ा गुगा कोई एजा बी पता लागे गोवा जे शिरगुल देव दिल्ली कयदी खाने दा असो । पता लागणो री देर थी, तेई गुगा महाराज जी शिरगुलो री मदद करदा चाली पड़ा ।

चूडधार शिरगुलो रे मंदरो आरी शिरगुल देव रा भग्रइ थिया जेसको नाव थियो चूरू । चूरू का काफी बड़ा कुडबा थिया । तेसी काई जबे शिरगुल देव री विपता रा पता चाला तो सी बी दिल्ली आणो खे त्पार होवा । परो तेतीएखे काग्र हो जे तिनु राक्षसे कुछ एशा खेल किया, एशा करीइमा किया । जितके कारण चूरू दिल्ली खे नी आई सकी । हो काग्र जे चूरू का कुडबा दानोव ए एशा घेरी दिया जु तिनके छटणो चापरी गो ।

आच्छा ओकी ठब्बे गुगा देव बी दिल्ली पोंवची गोवा परो सी जोअंदे-जोअंदे हारी गोवा परो तेसीखे शिरगुलो रा बिल्कुल बी कोथी पता नी लागी । क्योंकि दिल्ली सोबी खे बोली थी थियो जे कुणिये बी शिरगुल देव रा पता दियो तो

तेसका काल बी सामने असो । इयो बातो की उअरो के सबवों जणे चुप्पी थिए । कोवे बी शिरगुल देव रा पता नी बताव थिया । जेसोखे बी पुछी, तेजाई एशो बोलो जे आमो काई नी आयी पता । गुगा देव रे बी बात कुछ उलझी शी गोइ जे एब्बे काअ करी । केशखे लाई पता जे सी कोइके असो ।

बहतो री बात असो—बोलो बी असो ए जे बुरा बहत आंदी बई बी देर नी लागदी रो जबे आच्छा बहत आणा हंव तबे बी देर नी लागदी । यानी के आच्छा बहत आणो रा कोवबी पता नी लागदा । जेसखे एशो बी बोलो ए जे जबे किस्मत सीदी हंव तो छाप्पर ऊपड़ीबा बी रूपीया की बर्खा लागी जांव ।

बात केशी हई जं जेसी कयदी खाने दा शिरगुल देव थिया तेसी कयदी खाने बायरी एक भांगण भाडू लांगदी आंव थी रो तियों काई शिरगुल देव रा पूरा भेद थिया जे शिरगुल तेसी कमरे दा असो बना हंदा । ओकी डब्बे शिरगुल बी बड़ा भारी तड़पी गोवा थिया । तेने जाणो जे एसी बहतो खे गुगा तो आणा चई थिया । पता नी काअ बात हामी जु सी एब्बो तुड़ी बी पोंउची नी । शिरगुल जाणो जे काअ पता ए तेसी खे बी इनुवे बानी दिया हला या तेसी पांदो बी कुछ मुसीबत आई गोइ हानो । शिरगुल देव आपणे सासो ऊंदी एशी-२ बातो सोचदा लागी रोवा थिया । बायरे काअ हो जे तेतीए खे गुगा काई कयदी खाने रा तो पता चालो गोवा, परो शिरगुल देव कोसी कमरे दा असो एजा पता एब्बो तुड़ी बी लागी नी राइ थी । गुगा देव कयदी खाने शा दुरकोडा पात्थरो पांदो बोईशीबा सोच बिचार करदा लागी रोवा थिया । एकदम तेसरी नजर कयदी खाने बाईरा एकी तिरोंई काई होरा । आगे तो सी तिरोंइ तेसदी डरी गोइ परो जबे तेने एशेखे बोलो जे हांव गुगा देव आसो ओरो हांव शिरगुलो खे छोड़ोंदा आई रोवा । तबे सी भांगण कुछ सतीइ शी गोई आगे सी अण्डो पुण्डो लागी देखदी । तबे चुप्पी खलीइ गोई । गुगा ए तियों खे बोलो जे तु मोअ काई एजा भेद देई दे जे शिरगुल देव कोअसी कमरे दा असो । ओरी तु कियोंह बी बातो खे नी डरीया तेरी रक्षा हांव आपु करुवा । भांगणी ए बोलो जे हे गुगा देव एलो तो मोवे एब्बे भाडू देई पाया सारी खे तु एशेखे करीया जे दोती आया एसी बहतो शा आगोई रो जबे हांव भाडू देउबी तु दुरके शा देखदा हांव जबे तेसी कमरे पाछी भाडू देउबी जेसी कमरे दा शिरगुल असो तो तलो हांव तोंयो भीती पाण्डा भाडू लाउबी रो तु समझी पाया जे एशीइ कमरे दा असो शिरगुल देव । लो जे एब्बे गुगा देव रा तारीक बुजे का लागे । इदी कुछ बी शको री बात नी थी जे बाट पुरी करीयो मुखाली बणी गोई थी । गुगा देव ए रात जेशो केशी काटी रो मीअशीइ दा कयदी खाने बायरा आई गोवा । भांगण बी आपणे ठीक बहतो पांदो आई गोई । सी भाडू देवी लागी रो गुगा तियों खे दूर शा देखदा लागे । जेई भांगण शिरगुल बाले कमरे काई पोंउकी तेइ तिये भीती पाण्डा आपणें भाडू भोई इशारा किया । गुगा देव समझी गोवा जे एजाइ कमरा असो गुगा देव ए आंव देखी नी ताव सी कमरे की भीती पाछी होटा श्रीरो तेने पाछु बिआली शी एक खिड़की चुडी रो तेइ तियो खिड़की बाड़ी सोदा कमरे भीतरा पोउचा । जिथे शिरगुल देव तेसी खे

ठमलदे ठमलदे हारी गोवा थिया। शिरगुले बोलो जे एतोड़ी देर तोवे कोइके लाई। गुगा ए बोलो जे एतोड़ा बरत नो आथो बात बेताणो रा एब्बो तूवे आपणे हाथ करो ऊण्डे खे। शिरगुले आपणे हाथ गुगा को ढब्बे किए। तेइ गुगा ए शिरगुलो रे हाथो दी बानी हंडी चाम्बड़े रो डोर आपणे मुंहो लोई काटी दो रो शिरगुलो पांदी गंगा जल छिड़की दियो। तेइ सौ दुइने जण कयदी खाने जे बायरे निकले। बायरे आये तो देखो काअ जे भांगण बी राहणड़ी तेथोइ थी खलीइ हंडी। गुगा ए शिरगुलो खे बोलो जे ए असो एक भांगण जिये मोअ लोइ त्वारा कमरा बेताया नेइ तो मुखे बिल्कुल बी पता नी लागी सको थिया। ए एक भांगण असो जियो खे लोग नीच जाति रो नजरो लोइ देखो। शिरगुले बोन्नो जे आच्छा ? शिरगुले भांगणो खे बोलो जे हे देवी तु एलो शी ऊब्बी मेरी बोइण असो आज तुड़ी लोग ताखे नीच जाती रो समझीयो नफरत करो थिए। परो एलो शी ऊब्बी लोग तेरी पुजा करीया करले। 'लो जी गुगा देव तो इथे शा पाछु होटा बागड़ देशो खे रो शिरगुल रो भांगण चूड़धार खे चाली पड़े। जबे चूड़धार रे नोंजीइक पोऊचे तो शिरगुले काअ देखो जे तेसके भअड़ो रा कुड़बा तो दानोव ए घेरी घारीबा ढांगो रे मेयाला गाशी पो लेआई थोवा। शिरगुले तलोइ शेरू की बखी करी जिथु लाम्हा दानोव तो मरी गांवे रो चुअरू का कुड़बा बची गोवा। आज बी जे कोवे चूड़धार जांव तो तीथीइ ढांगो पांदी चुअरू रा कुड़बा पात्यरो के निशाणो सीअता बणा हूदा असो। जबे शिरगुल देव आपणे मंदरो दा पोवची गोवा तबे तेने तियो भांगणी खे बोन्नो जे हे बाइण ताखे आज जे ऊब्बे लोग भगायण देवी रे नाव लोइ मनाले रो तेरी पुजा करले। डुग भगाइणी आज बी भंगायण देवी रा मन्दर बणा हंडा असो जिये हर साल भंगायण देवी रे नाव का मेला बी मनाया जांव।

एशेखे शिरगुल देवते राक्षसी का तो नाश किया रो छुआछूत रे भेदभाव खे मिटाइबा छुआछूत रा कलंक सदा सदा खे मिटाई दिया।

शब्दार्थ

शब्द	अर्थ	शब्द	अर्थ
1. टिब्बे गाशी	ऊंचे पर्वत पर	11. बिरया	गाथा
2. मुखना	मनोती	12. पअरा	पहरेदार
3. आबड़ी	इच्छा बंधा हुई	13. चाउल	चावल
4. ऊचली गोवा	चल पड़ा	14. तेतोए खे	तब तक
5. दोतो	आने वाला कल	15. छुटणो चापरी	छूटना मूँडकल हो गया
6. हाटो बाले	बाजार से जो सामान खदोने जाते हैं।	16. जोअदे-जोअदे	दूँढते-दूँढते या खोजते-२
7. सोअदा पाता	घर की सामग्री	17. कोइके	कहां
8. नीना नुन्ना	थोड़ा सा नाइता	18. ऊपड़ीबा	उलझकर
9. ताखड़ी	तराखू	19. बाना हवा	बांधा हुआ
10. फेरकाई	फेंकना	20. बुरकोड़ा	थोड़ा बुर

शब्द	अर्थ	शब्द	अर्थ
21. बोइशोवा	बैठ कर	28. पाछु बिगल्लो शी	पीछे से
22. छोइँवा	छुड़ाना	29. ठगलणा	इन्तजार करना
23. ललीह	लड़ा रहना	30. ढांगो के मेयालो	ढंगार के किनारे पर
24. बल्लो शा प्रागोई	बल्ल से पहले	गाशी	
25. भीत	बिचार	31. शोरु	झोले
26. सुखाली	आसान	32. तेण्थी	वही
27. भीमगोह	सुबह ही		

भाई भाई रा प्यार

एक राजा थिया। सी राजा बड़ा ई भागवान राजा थिया। घाईटा शा कुडबा थिया। राणी रो दो बेटे। यानी के चौऊ आदमी रा तिनका कुडबा थिया। राजा पाशे खेलणो माय बड़ा भारी चतुर थिया। राजा हर बल्ल पाशा ई खेलदा रौअ थिया। जितके कारण तेसके दुइने बेटे बी पाशा खेलणो दे काफी तेज हई गोवे थिए। राजा रे दुई बेटे रा आपस मुंजी बड़ा भारी गयरा प्यारा थिया एकी के गंगर ओका नी रोअई सको थिया। खाणा पीणा उठणा बंठणा लिखणा पढ़ना सअवे काम दुई भाई रे कअठेई चालो थिये। राजा, ए बात देखियो मनो दा बड़ा भारी खुश हव थिया। राजा रो राणी काफी बुढीह गोवे थिए, परो भई तिनके जीयो रे जु दो टुकड़े थिए तिनवे कियोई बी बातो शी सेवा करणो मांय कसर नी छुड़ी। अचानक राजा बमार पड़ी गोवा गोवा रो बमारी घटणो रे बजाये देसो रे री बढदी रोह। समाला बी दुअ भाई ए बोहत किया बोलो बी असो जे जेसी आदमी रो शामल कामल चुकी जांव तेसी आदमि से कोवे नी रांकी सकदा। जबे राजा के कुछ जाणोई गो जे एब्बे हांव बच्ची नी सकदा, तेने आपणे दुइने बेटे बोइदे। राजा रे मनो बी एक ह बात थी जे इनका आपस मुंजी प्यार नी बिअगड़ा चंड। राजा ए आपणे दुई बेटे रे हाथो बी एक सूने री तलवार पकड़ाई रो बोलो जे इयो तलवारी से आपणे सुतणो बाले कमरे रो भीती बी लाइ देव। सी दुइने जणे बात गुणदे रोवे। राजा ए बोलो जे जबे बी कीन्वी ए तुवो मुंजी कोसीह से बायरे जाणो पड़लो। तअल्लो ए तलवार देखिया करीया जे तो तुवो मुंजी कोवे ठीक ठाक हला तो इयो तलवारी से दूधो रे टीप्प छुटीया करले रों जे कोवे मुसीबतो दा फशी गोवा तो तलवारी से लोउ रे टीप्प छुटीया करले। जबे लोऊ रे टिप्प छुटले तालो जाणो पाय जे मेरे पाई पांदी कुछ मुसीबत आई

रोई रो जबे तलवारी से दूधो रे टिप्पू छुटले तलो फिकर नी करीया तलो जाणो पाया जे मेरा भाई जिये बी कोथी हला ठीक ठाक असो । एतौड़ी बात राजा के बेताइबा बी चुकी रो राजा आपण दुई बेटे ले रो राणी खे छोड़ीयो सोइसारे शा चाली पड़ा । राजा का दाह संस्कार किया गोवा । दुइने भाई पाछु घरो खे आये मां राहण्डी एब्बे रात देस रोअइया करो थी । तियों खे रोज सुइणे लागो थिये सुइणे मांय तियोंखे राजा आपु काई बोइंदो थिया । सी बी रोज एजीइ रह लाव थी जे हे भगवान मुखे आपण मालको काई भेजी दे । लो जो 2-3 मीन बासीए राणी बी चाल पड़ी । रजवाडे रा सारा बोझ तिनू दूअ भाई पांदी पड़ी गोवा । लोग तिनके राजो मांय बड़े भारी खुश थिए । कियोंइ बी किस्मो रो कोसीइ खे मुसीबत नी थी । राजा पाठ रो टम्रल खब खड़ाके सीअती चाली हंदी थी । तिनू दुअ भाइ ए बाबा रो दीती हंदी तलवार खब मजाइबा आपण मुतणो वाले कमरे मांय टांगी बी । रो जी खब हसी खेलियो दुइने भाई आपण देस काटदे रावे । पासे खेलणो रा तिनूखे बी बड़ा भारी शोक थिया । एक देश बड़े भाई रे मनो दो आखड़ी जे शिकार खेलवो जाणो चेंइ कोथी दूर जंगलो दो । तेने आपण नानड़े भाई खे बोली जे मेरे जाणो आज शिकार खेलवो । सी बोली जे हांव बी गयल चालू । बड़े भाई ए बोली जे तु रोअ इथोइ, एथे तबे देखभाल करणो वाला कोवे नी आथी रो हांव फीअरे तुड़ी पाछु आइ जाऊंवा । तेने बोली जे ठीक असो

लो जी बड़े भाई ए आपणा घोड़ा तयार किया जीन बगैरा धरीयो रो आपणी तलवार रो दो नाली करी रो घोड़े पांदी बोइसी बा शिकार खेलदा चाली पड़ा । जबे सी बीच जंगलो दा पोंऊवा तो तेने देखा जे आगे आगे एक भोतइ बढीया हिरण चाली रा थियो । जु कि देखणो खे भोतई आच्छो थियो । तेने सोचो जे आज ए हिरण ही लोइ जाणो मारीबा । तेने आपणो दोनाली सोदी करो हिरणो की ढब्बे परो सी हिरण कोथी बी दोनाली रे निशाने दो नी आव थियो । एकी बेइ तेने दोनाली चलाई बी थी परो सी हिरणो रे बजाए गोली लागी एकी डालो दी एब्बे सी तेथे हिरणो रा पीछा करदे करदे हारी गोवा थिया । परो पीछा तेने बी नी छोड़ी । सी बी हिरणो पाछी दोऊइदा रोवा । पीछा करदे करदे देस ऊछाई गो परो सी हिरण कोथी बी तेसके कावू दो नी आई । तेने सोचो जे एब्बे काअ करी । मंघ पड़ो गोइ रो एकदम सी हिरण तेसकी आखी काइशा चुरोइ गो । एब्बे तेसांखे हजो पड़ा फिकर जे देश भरी पीछा बी किया रो एब्बी एब्बे ए हारची गो कोथी । तेने जाणो जे इथोइ कोथी हलो ऊण्डो पुण्डो परो सी तेसांखे कोथी नी भेटी ।

तेने पुरी रात जांगलो दीई बिताई । रात भरी सी लीयो हिरणो खे जोअदा परो सी कोथी बी तेसके लेहटे नी लागी । रात बेआइ गोइ थी सूरजे आपणी भांव जंगलो दो बी बिलेरी दी । थोड़ी शी बेर बासीए तेसीखे कुछ शड़का जीया शुणिया आड़ी मुंजी तेने आपणा घोड़ा तेस ढबो खे फेअरा देखा काअ जे

हिरण भाड़ी परोशी निकलो रो आगे आगे भागदो रोओ। सी सासो उँदा बड़ा भारी खुश होवा जे ए तो सेजोइ हिरण असो। एब्बे नी इधू हाँव आज छोड़वा। एतका काल आज मेरेई हाथो लोई असो। तिस्रपरो तुड़ी सी हिरणो पाछी भागदा रोवा परो सी काँथो बी तेसके आड़ो दो नी फशी। देखदे देखदे हिरण एकदम हजो लाश्रपता हुई गो। खयर जी राजकुमार चालदा रोवा आगोइ जाइवा तेसीखे जंगलो दो एक घर भेटो जिये एक भोतई शोभाली तिरोई बायरे बोइशी हूँदी थी। तेने राजकुमारे तियो खे बोलो जे तोवे इथे बाग्रटो हिरण तो नी देखो जांदी बेई। तिये बोलां जे सी हिरण तो मेरो असो रो एब्बो सी भोतरे आसो। राजकुमारे बोलो जे आच्छा एशी बात असो। मुखे माफ करीया, हाँव तो इधू मारणो खे फीरी रोवा थिया इधू पाछी। ए तो आच्छा हो जु तोवे बेताइ दियो। दुजे की बी तेसी राजकुमारो खे रात पड़ी गोई थी। तिये बोलो जे आव आग्र ईथोइ ठग्रो जा एब्बे रात तो पड़ीई रोइ। राजकुमार घोई गाशी शा उतरा रो घोड़ा बानी दिया, आपु तियो कागी भोगटा होटा। भोतरे जाइवा सी हयरान हयी गोवा जबे भोतरे पात्थरो के बणे हूँदे घोड़े बाकरे भेटो रो पता नी काग्र काग्र चीजो थी पात्थरो की बणी हूँदी। राती खे तिनकी आपस मुँजी होइ लागी जे पाशे रा खल खलुबे। जे तो तु जीती गोवा तो तु मेरो से जो करे जु तेरे करणो हलो रो जे हाँव जीती गोई तो तेरो सेजो करबी जु मेरा जीऊ बोलला। राजकुमार पाशे खेलणो मांय बड़ा तेज थिया तेने जाणो जे ए काग्र पाशा खेलदी मो आरी।

आँकी ढबे घरे राजकुमारो रा घाइटा भाई बी तड़पी रोवा थिया क्यो के दो देस हयी गोवे थिए ठगलदे-ठगलदे। संतोष सिर्फ तेसीखे इयो बातो दा थिया जु तलवार एब्बी तुड़ी दूधो रे टीपू छोड़दी लागी रोई थी। इयो बातो लोइ तेसीखे संतोष थिया जे भाई भाँव कोथी बी हला ठीक ठाक असो।

हां जी तो ओकी ढबे पाशे रा खेल गुरू हुई गोवा। बख्त कुछ एशा फीरा, जु राजकुमारो रा पाशा हमेशा उल्टाई पढ़दा रोवा। तो जी आखिरकार राज कुमार पाशे दा हारी गोवा। राजकुमारे बोलो जे भई एब्बे तु मेरो सेजो कग्रर जु तेरा जीऊ चाँव। तिये तिरोइ ए तेसी गाशी हाथ फेरा रो तेसका पात्थरो का बाकरा बणाई दिया। बाकरा बणाणो री देर थी। घरे एकदम तियो तलवारी से लोऊ रे टीपू निकलदे लागे। नानड़ा भाई घबराई गोवा जे एब्बे कुछ मेरे भाई पांदी मुसोबत आई गोइ एब्बे काग्र कोरू।

तेने दरबानो खे बोइदा रो तेसी खे बोलो जे घोड़ा तयार करो ओरो भाई कोथी मुसोबतो दा फशा हूँदा असो। हाँव तो जीऊ तेसका भुजा करदा ओरो तु पाछु मग्नलो का ह्याल राखिया।

तो जी नानड़ा भाई आपणे बडे भाई री खोज करदा घरे शा निकली पड़ा। तेसीइ जंगलो दा सी बी चाली पड़ा। चालबे-चालबे तेसीखे बाग्रटो दो एक बुढ़ी भेटो। बुढ़ीये तेसी खे पुछा जे रे तु कुण असो रो तेरे कोईके जाणो। गोवे

ताले दो बैसे पहले बी हूँयो बाटो पुण्डा देखा थिया। नानडा राजकुमार घोड़े पांवी शा घोड़नो उतरा रो तेने तियो खे बोलो जे नानी जु तांवे देखा थिया। सी मेरा भाई थिया रो आज चार देस हई गोवे सी घरेइ नी आई एतोडा पता तो मो काई असो ए जे सी मुसीबतो दा असो कोथी उलझा हंदा। परो कोईके असो ए पता मो काई नी आथी। एब्बे जाऊ तो जाऊ परो कोईके जाऊ। बुढ़ीए बोलो जे बेटा मेरी बात शूण तेरा भाई मांवे— हिरणी पाछो देखा थिया जांदी बेई, रो सी बेटा हिरणी नी आथी बल्कि सी राकसीण असो। हिरणी का भेष बनाइवा सी सोब्बी खे आपु पाछो लोई जांव रो घरे जाइवा तिरोंइ का रूप धारण करीयो सी सोब्बी आरी पाशे का खेल खेलो। जु कांवे पाशी दा हारी जांव तेसी खे सी आपणे जादु लोई पाथरो के बाकरे, भेड़ो, घोड़े रो गोरू वगैरा बनाइ देव। राजकुमारे बोलो जे आच्छा, एशी बात असो। बुढ़ीए बोलो जे तु पाशा खेलणा जाण ए तेने बोलो जे हांव पाशे रा खेल खूब आच्छा करीयो जाण। बुढ़ी ए बोलो जे सी कोसो खे बी नी जीतणो देंदी। बुढ़ी ए आगे बात बेताई जे बेटा तिमारे पाशे मुली मुशा असो जु कि पाशे खे मुल्ला फंरीया जांव। तु एशेख कअर जे एब्बो मो आरी घरे चाल। हांव घरे शो तांव काई एक नानडो शो बिराल देउबी। तु तियु बिरालो खे चुप्पी आपणे फाकटो ऊंदो राखिया चोरीयो। तबे काअ हलो जे तियारे पाशे मुली जु मुशा असो डअरो को कुछ नी करी सकदा रो तु तेशखे जीती जायला। राजकुमार बुढ़ी का बडा भारी सान माना औरो तियों आरी चाली पड़ा। घरे जाइयो बुढ़ीए तेसी लोई खाणो खे खेआवो आरी तेइ तेस काई एक नानडो शो बिशल देई दियो। बाट बी तिये तेसी लांड बेताइ दी जे सीधा चाला जाव हूँयो बाटो पुण्डा। राजकुमार तियो बाटो पुण्डा चाली पड़ा। काफो देर चालणो बसीए तेसी खे एक घर भेटो जिये एक तिरोंइ खूब बणी ठणी बा बोइशी रोई थो बाइण्डो बिअलो। राजकुमार एक दम समझी गोवा। तिये आगेइ धाव दी राजकुमारे खे जे आव री मुसाफिर शोट मार। राजकुमारे एतोड़ीई बात शुणी रो घोड़े पांवी शा उतरी गोवा। तेइ भिटा होटा रो बोइशी गोवा। तिये तिरोंइ ए तेसी खे बोला जे पाशा खेलणा जाण ए। तेने बोलो जे जाणुइए थोड़ा-थोड़ा। तिये बोलो जे परो एक बात असो जे हांव खेल् होइ लाइयो। राजकुमारे बोलो जे काअ शर्त असो तेरी बेताब। तिये बोला जे तु जीती गोवा तो तु सेजो करीया जु तेरा जीऊ चाअला रो जे हाव जीती गोइ तो हांव बी तेरो सेजो कर बी जु मेरा जीऊ चाअला। राजकुमारे बोलो जे शर्त मंजूर असो।

पाशे रा खेल शुरू हई गोवा। पयलेई तीन दाव राजकुमारे जीते। कयों कि तियारा सी मुशा रोवा चुप्पी दबड़ा हंदा। तेसीखे गोइ थो लागी बिरालो की गंद। रो सी राकसीण हई गोई हयरान जे ए काअ बात हई। सी पाशे री पेटारी दी मुटकुरे की लांव परो मुशा बिल्कुल चुप्पी रोवा दबड़ा हंदा। आखिरकार राकसीण हारी गोइ। तिये काअ कियो जे राजकुमारो खे बोलो जे तु एब्बे से जो कअर जु तेरे करणो ए तिये डअरो के मारे मुशा एकदम छोड़ी दिया बाइण्डे खे कयो के तेसी मुझे पाण्डोइ तियोरी जिवंदगी थी। जांव तुड़ी मुशा जिऊदा रोंव

थिया तांव तुड़ी सी मरी नी सकी थी। परो भई राजकुमारे बड़ी चतुराई शा काम किया जेह तिये मुशा छोड़ा तेई तने एक दम तिथू पाछी बिराल छोड़ी दियो आगे-आगे मुशा रो पाछे शे बिराल। फरलांग मरी नी हुटोइ मुशे के तेतीए खे बिराले सी भपटी पाया। जेह बिराले मुशा भपटा तेह सी राकसीण भी धोनीयो पड़ी। तिये राजकुमारे खे बोलो जे मुखे जीवदी छोड़ी दे हांव सेजो करवी जु तु बुलला। राजकुमारे बिरालो की जाती शामुशा ऊण्डा छोड़ोइया रो राकसणी खे बोलो जे ताखे हांव तबे छुडुबा पयले तु ए सब्बे आदमि जीउंदे करी दे जीन के तावे पात्थरां रे गोरू बाइची बाअणी थोवे। राकसणीए सोन्बी गाशी हाथ फेरा रो सोन्बी खे जीवदे करी दिये। अणगणित आदमि पयदा होवे। जिनु भुंजी तेसका भाई बी थिया। राजकुमारे सोन्बी खे बोलो जे इयोराकसणी खे काअर सजा देणी जेइ सोन्बीए बोलो जे इयो खे मारी देव रो बीच बाटां दो गाड़ी बा हाडी कुत्ते लोई खआव। ताकी एसी ठअड़ो खे देखीबा लोगो खे पता लागला जे बुरे कर्मां रा फल बुराई भेटो। राजकुमारे मुशा बिरालो की ढब्बे फेरकाया रो बिराले सी चाकी चुकीबा घुटी पाया। ओकी ढब्बे राकसणी रे गयल के गयल प्राण निकली गोवे। तिथ फिरे तियो री लाह श बीच बाटो दो रो हाड़ी कुत्ते छोड़ी दिये। एब्बे तियो रा फयसला हाड़ी कुत्ते के जुम्मे छोड़ी दिया। बुइने भाई आपु आरी गले शे मिले रो आपणे-आपणे घोड़े पांदो पाछु घरो खे आये।

शब्दार्थ

शब्द	अर्थ	शब्द	अर्थ
1. बड़ाई	बहुत ही	21. शोभाली	सुन्दर
2. भागवान	भाग्यशाली	22. इधे बाअटी	इधर से
3. घाहटा	छोटा	23. तियो कागी	उसके यहाँ
4. बढीई	बढ़ापा	24. होइ	शतं
5. जीयो रे	हृदय के	25. नानडा	छोटा
6. समाला	इलाज	26. धोइनी	नीचे
7. कोवे	कोई	27. सुल्टा	सोधा
8. लोऊ रे टीपू	खून की बूँदें	28. बिराल	बिल्ली
9. राहण्डो	बेचारी	29. फाकटो ऊबो	जब मैं
10. मुइण	स्वप्न	30. सान	एहसान
11. बाइबो थिया	बुलाता था	31. शोट आर	घर में बैठने के लिए बुलाना (हुक्का पीने के लिए)
12. देस काटदे रोवे	दिन व्यतीत करने लगे	32. एतोड़ीइ	इतनी ही
13. गयल	साथ	33. भिटा होटा	अन्दर चला गया
14. फीअरे तुड़ी	साथ काल तक	34. मूटकरा	मूकता
15. दौउइवा रोबा	दौड़ता रहा	35. जाती शा	मुंह से
16. चुरोइ गो	छुप गया	36. गोरू	पशु
17. हारवी गो	गम हो गया	37. हाड़ी कुत्ते	भुजं कुत्ते
18. लेहटे नी लागी	हाथ नहीं आया	38. ठअड़	जगह
19. रात बेआइ गोई	रात खल गई	39. चाकीयो	खबा कर
20. भांव	चमक		

राजे रा राज गोआ बाटो रा काज गोआ

आजो दे कुई सो साल पेलो रे बात असों, एकी राजें गाछे एक बाट नोकरे करों था। तेसरा नावो था रामें। जिशा तेसरा नावो था तिशा ई तेसरा काम था। सबी कामों मञ्जे से रामपणा दखाओ था। राजें तेसखे सबी री कुसी जाडने रे नोकरे देराखे थे, हेरो साथे तेसरा काम था राजें सबा मञ्जे बलाएरो ले ओणा। एसी कामो रे तेसखे राजा 5 रपेइए मिने रे तनखा देओ था। तियों तनखाए दे तेसरा मिने रा खर्च तो चलजों था पर बाकी कुछ नी बचो था।

राजें तेसखे कई बार बोलो बई तु आपणा चडें बुजणे रा काम न छोडें नई तो तु बाटो मञ्जे जब नोकरे छुटण तो भूखा मरना। पर तेणिए राजें रे बात एकी कानें शुण हेरो रेके काने नकाल दीए। से आपणा गजारा तियोंई तनखाए मञ्जे करदा रोआ जु राजा देओ था। कुछ दिनों बाद से बाट राजें नोकरे दे निकाल दिया ए देखणें री खातरे बई तब एसरे का करना।

थोडें से दिनों तो तेणीए से पैसे खाए जु दो चार रपेइए तेसे गछे बचरोए थे। जब तेसगे सब कुछ खतम ओगा, तब सोचणें लगा बई ना तो आश्रों चणे बुजणे जाणदा, हेरो आब राज गे बे किशा जाऊ। आब तो तेसरा शा आल ओला जिशा दोबी रे कुने रा ओ। 'ना गरो रा रोआ ना गाटो रा।'

जब कई दिन तेसी सूख ओगे तो तेणिए सोचा बई आब तो अतिए ओगे। तब से एकी दिनों राजें री सबा मञ्जे चला गोआ तेसरे बुरे आल देखेरो राजा पूछणे लगा बई रामे ए तं का आल बणाए रखा। तब मरी ओई शी आवाजे दे से बाट बोलणें लगा—'महाराज जी, पेली तो आजों तारे नाकरे करुथा, जु तुम तनखा देओ थे तेदिदे आपणा गजारा करुथा। आवे तुमे आओ नोकरों दे काड दिया हेरो मारो जु खानदानी काम जणे बुजणे रा था से बी मो आबंदा नी एथी।'

तेसरी बातो मुणेरों राजें तेसी पन्दे दया आओगे। तेबे राजें तेसीखे सेजीए नोकरे तइए दे दो आब रामें बाट पेली री तरे आपणी जीन्दगी रे दिन बतावणे लगा। हेरो बडा खुश ओगा बई राजें मेखे नोकरे देदी।

कुछ सालों बाद राजें रा राज खतम ओगा। तब तेसी बाटों रे नोकरे तइए जान्दे रोए। तब तइए तेसरा सिए आल ओगा जु पेली ओआ था।

तब से बात बोलने लगा—‘बई राजे रा तो राज गोआ पर मेरा तो काज गोआ। एकी बारें तो राजे भेले बबारा नोकरे दे दी थे पर आब ना तो राजा रोआ ना नोकरे।’ आब से बात भूला तड़फे-२ रो मरगोआ।

शिक्षा— आपणा काम कबी नी छोड़णा चई, नई तो ऐसी बाटो रा शा आल शा ओ।

शब्दार्थ

शब्द	अर्थ	शब्द	अर्थ
1. जिशा	जैसा	4. तड़फे-तड़फे	तड़फे तड़फे कर
2. तिशा	वैसा	5. चेई	चाहिए
3. भेले	मुझे	6. किजा	कैसा

नौ लाख आर

एकी समें रे बात असौ हिमाचलो मञ्जे तबे राजे रा राज थिया। तेसि गछे पैसे रे तो कुई कमें नी थी। तेणिण आपणी राणी खे एक नौ लाख रपेइये रा आर बणवाया। सारे बड़े-२ राजे हेरो साऊकार तेसे देखणे आए। तब तेसे आरो री साथे राजे रे बे खूब प्रशंसा ओणे लगे।

तेसी राजे गछे दू नोकराणि बी थी, जु तेसरो राणी रे सेवा करो थी। तिनी भन्दे एकी रा नाबो निन्द्रा था हेरो रेकी रा नाबो थिया चिन्ता। एकी दिनो तिनीए दुइए मिलेरो राणि रा आर चोरणें रे सकीम बणाए। कुछ दिनो बाद तिनिये राणि रा आर चोर लिया। जब आर राजा तो राणिये राजे गछे बताया बई मेरा आर पता नी कुणिए चोर लिया।

तब राजे आपणें शपाए बलाए हेरो तेसी आरो दुइणे बेज दिए। तिने सारा राज्य छान दिया पर आरो रा बे पता कोथी नी लगा। तब राजे बड़े-२ पण्डत बलाए। पण्डते वे बतेरें प्रश्न लगाए पर तिने कोथी कुई वे पता नी लगा। आब राजे बड़े चिन्ता ओगे बई आब आओ तेसी आरो कोथी दुँहु। (खोज करना) आब आरो रे फिकरो मञ्जे राजे ना तो राते नोज्ज आओ थे, ना दिनो भूख लागो थे। दिन रात फिक्रो मञ्जे लोया रों था।

तबे कुछ दिनो बाद तंजि ने एकी पण्डतो रा नांव सुणा। बई मारे राज्य मञ्जे एक इशा पण्डत असौ जु बीतर बिठे री रुची ओई खिजो रे बारे में बताओ। राजे सोचा बई से तो बलाबणा पड़ना नेई तो मेरा नौ लाख रपेइए रा आर मिलणा नी एथी।

तबे राजे आपणे नोकर बलाए हेरो तिनीं मे बताया बई इशा शा एक पण्डत असो, तेसरे गरे जाओ हेरो तेशी आपणी साथे लेओ ।

राजे रे शपाए तेसरी खातर तेसी दुडदे-दुडदे तेसरे गरे पोचगोए । पण्डत शपाई देखेरो डरोरे मारे वितरो दे भायडा ई नि निकला । तबे शपाइए तेसरी जवाणसओ गच्छे बोला बई राजे पण्डत जी बलाए तिनीं रा नी लाख रपेइए रा आर राजोरा । हमे शुणा बई तुम राजे ओए चीज प्रश्न लाए रो वादाओ ।

एतणे बात शुणे रो राजे रे तो फूक सिरक गोए । आपणी वेइयरो खे गाले देणे लगा बई राण्डे आब तो राजे रे मेखे फामे कर देणे । हेरो तु केली भूखे तडफे-२ रो मरने ।

तब से पण्डत आपणे पण्डत बणने रे काणें याद करने लगा बई आओ भूखा गरने वाला पण्डत ऐतणा बड़ा किशा बणा जु राजा बे भि याद करने लगा ।

पेली तो से पण्डत हेरो तेसरे जवाणस गांव मञ्जे मांगे-२ रो आपणा पेट भरो थे वादो में तिबो खे लोके भिक्षा देणे वे छोड़दी । तब तेसरी गर वालिए रद्दी कागज कट्टे किए हेरो तिनीं रे एक कताब शे बणाए दी । तब पण्डतो खे बोला बई तु इयो लोएरो गांव मञ्जे मांगणे जाए । से बचारा मुकता बाजा पर तेसरी बेइरे से जबरिए बेज दिया । से बे बचारा आपणा शा मुं लोए रो चला गोआ । जे ना जान्दा तो करदा वे का गरे तो कुछ खाणे पिणे खे था इ नी ।

एकी गावों में गोआ तेथी एकी जीमीदारो रा ऐला लगे रा था । गावों रे बारा आदमी ऐले मञ्जे आओ रे थे । तेसी जीमीदारो रे जवाणस रोटी पकावणे लगरोए थे । से पण्डत बे तेथी जाए रो बिठे गोआ । भूख बे खूब लगरोए थे पर तिए बइरे वे तेसरा रोटी खाणे रा नाव तक नी लिया । से एक-२ रोटे गिणने लग गोआ जब से वेइयर रोटी पकाए रो आटे तो जीमीदार बोला बई रोटी थोड़ी तो नी ओणी । तब पण्डत बोला—बई जे तो एले वाले आठ-२ रोटी खाले तब तो रोटी पूरी असो ज जावे खाले तो कम ओजली । तब जीमीदार तेसरे पण्डतयाए देखणे लग गोआ । लगा रोटी गिणने । रोटी पूरी छयाणवे निकली । जीमीदार बोला बई पण्डत जी तो ठीक प्रश्न लाओ । तेने पेली पण्डतो रोटी खलाई बाद में एले वाले । तब तेने पण्डतो खे थोड़े से चावल हेरो आटा दिया ।

से पण्डत तेसी ले रो आपणे गरे आया । तब तेसरी बेइरे पूछा बई ए ऐतणा आटा हेरो चावल किजे मिले । तेणिए सारे बात बताएदी । बामणे बई खुश ओए । तिने ब्याल चाबलो रे खिचड़े पकाए हेरो खुशी-२ सुतगोए ।

भलखी उठे रो बामणे पण्डतो खे बोलणें लगे बई आज रेके गावों रे कनारे खे मांगणे जाए । पण्डत बचारा बोते लाए रो तियो रद्दी री कताबे चके रो रेके गांव रे कनारे खे भगवानो रा नांव लेंदा ओआ चला गोआ ।

रस्ते मञ्जे जान्दे-२ तेसी कुछ गदे मिले । से पण्डत तिनी गदे गोर दे देखेणें लग गोआ बई ए केतणे असौ, हेरो कोसरा मुं किशके के असौ । आच्छी तरे देखे रो से पण्डत आगे-२ जाणे लगा । रस्ते में तेसी एक कमार मिला । तेणिए कमारें बोला बई पण्डत जी तुमे मार गदे तो नी देखे । तेणिए सोचा बई ए तो तुका मारने रा बड़िया मोका मिलगोआ ।

तब पण्डत बोला बई में तेरे गदे तो देखे नी एथी पर आओ प्रश्न नाएरो तरे गदे बताए दुए बई ऐसी समे तेरे गदे कौथी असौ । तब कमार बोलणे लगा बई पण्डत जी तारे बड़े मेरवाने ओले जे तुम प्रश्न लाए रो मेरे गदे बताओले । आओ तुम छे एक गदा दे दुए ।

तब पण्डत बोला—बई मरे गदे रा का करना । गदा तो मरे कामो रे चीज असौ । कमारे सोचा बई पण्डत तो पोखे ओए मुतें असौ । तब तेणिए बोला बई पण्डत जी आओ तुमोखे एकी गदे रं किमत देऊं । पण्डत समादं लाए रो मिलेगा । हेरो आपणी तिथी रदी री कतावे रे बकें पलटणें लगगोआ ।

थोड़ी शी देगी में से पण्डत बोला बई तरे गदे मिलगोए । कमार बड़ा खुश ओआ हेरो बोला कौथी असौ महाराज पण्डत जी मेरे गदे ! तब पण्डत बोला—जेथी तेणिए से गदे देखे थे सिए बताए दिए । बई फलाणी जगा तेरे गदे असौ जाए रो ले आ । जे तो मिलले तब तो इनाम दे नई तो आओ कुछ वे नी लेऊं ।

कमार खुशी-२ तथी गोआ जेथी पण्डत गदे बताए थे । जब कमार तथी पोचा तो तेसी आपणे गदे मिल गोए । से तिनी एड़े रो गरे खेलेया । पण्डत वे तिनी गदे देखेरो बड़ा खुश ओआ बई एसरे ई निकले । से कोसरे हारी रे ओन्दे तो मारा गोआ था ।

कमारे गरे आए रो पण्डतों से एकी गदे दे जेतणे किमत थी तेतणे पंसे दिए । पण्डत वे तिनीले रो आपणे गदे ले आओगा । गरे आए रो पण्डते गारे काणें आपणी पंडतयाणी मे बताए । बामणे बड़े खश ओए । आब से आगाम दे आपणा पेट बरने लगे ।

तो इशा बणा से गरीब भूखा मरने वाला एक माना गिणा ओआ पण्डत जु राजे याद किया ।

तो तब से पण्ड आपणी इयो काणी रे बारे मेंजे सोचे रो आपणी जवानसो गछे बोलणे लगा बई आब का कछे । तब तेसरे बेइयर बोले बई तु भगवानो रा नांव ले रो होजा जु ओला से सई । जु ओणो से तो ओए रोई रोण ।

तब से पंडत आपणे पोथे चके रो राजे रे शपाई री साथे सोचदा ओआ चला गोआ बई आब तो राजे रे फाशी रे सजा देवणें । जान्दे-२ से राजे रे दरबारो मञ्जे पंसे तब शपाइए बोला महाराज जी हाम तेसी पंडतो दुड़े रो ले आए ।

राजा बड़ा खुश ओआ। पंडतो रा आदर सत्कार किया। तब राजे आरो रे बारे में बताया, बई इशा शा मेरा आर जेसरे किमत नी लाख रुपइए असौ चोरी ओगा। तुम प्रश्न लाए रो बताओ बई से आर कोथी असौ। तब पंडते सोचो बई आब बचणिया तो एथी नी राजे से सजा तो जरूर देवणे। पर आज आपणे दिलो रे पूरे करलु यानि खाने पीणे रे मजे लेनु।

तब पंडते बोला बई कई एकान्त जगा में एक बिस्तर लादो हेरो जु आओ मांगुए दे देया करे। राजे नोकरो ले बोला बई जाओ जिशा पंडता जी बोलो तिशा करे।

तिने जु-२ पंडते मांगा से दिया हेरो चले गोए। खाए-पिये रो पंडते सोचा बई कालो ले पता नी का ओणा, एही मास आज राम दे सुतलु। पर फिकरो रे मारे तेसी नीडज नी आये। तब से बोलणे लगा- 'आ निन्दा जा चिन्ता। आ निन्दा जा चिन्ता।'

आब राणी रो नोकराणी फिकर ओगा बई पंडतो रे हामी मे आर बतावणा हेरो राजे रे हामी खे फांसी रे सजा देवणे। तब से दुए राते उठे रो देखणे गोई बई दया पंडता का लगरोआ करने।

जब से तेथी पोंची तां तिनिए सुणा बई पंडत बोलणे लगरोआ आ निन्दा जा चिन्ता। तिनिए सोचा बई ए हामी बलावणे लगरोआ।

सी दुए बीतर गोई हेरो तेसी दे माफ मांगणे लगी बई हामी ले माफ कर दो। राजे मे देखे बताओ हाम आर तुमोखे देवो ले।

पंडते तिनिसे बोला बई जाओ एसी तेथी दवाए आओ जेथी सारे शेरो रा कुचड़ा फंको। तेथी गोई से दुए जणी हेरो तेसी आरो दवाए आई।

तबतो पंडतो रो खुशी रा कुई ठकाणा इ नी रोआ। से मोज सुतगोआ। भलखी दश बज गोए। राजे रे सारे लोक जु नोकर थे पोच गोए पर पंडत जी सुतेरो इ नी उठे।

तब राजे तेसी ठवाओण खे आपणे नोकर बेजे बई पंडतो ठवाएरो लेओ। शपाए गोए तब पंडतो ले बोलो बई ताई राजा बलावणे लगरोआ। तब पंडते बोला बई पेली मिले नाणे ले पाणी लेओ तब आंओ तयार ओएरो राजे गच्छे चलुए।

नोकरे तेसिले जु मांगा से दिया तब से तयार ओएरो बारां बजे तोड़ी राजे गच्छे पोचा। तेणिऐ राजे ले आत जोड़ हेरो आसनो पन्दे जाऐरो छिठगावा।

तब राजे बोला- पंडत जी प्रश्न लगा या नी लगा। तब पंडते बोला बई प्रश्न तो लगा पर तुम मेरी साथे आपणे शपाई ले रो तेथी चलो जेथी सारे शेरो रा कुचड़ा फंको।

तब राजे आपणे शपाए लिए हेरो पण्डतो री साथे तेथी पोचे जेथी सारे जेरो रा कुचड़ा फंको थे ।

तब पण्डते बोला बई एथी खुणना शुरू करो । तब शपाइए तेथी खुणना शुरू किया । थोड़ी सी देर में निनो राजे री राणी रा नौ लाखा आर मिल गोआ । राजा बड़ा खुश आओआ । तेणिए खुशी ओएरो पण्डतो से खूब धन दिया । पंडते से गाठड़ी में वादा । तब नोकर तेसी छोड़ण तेसरे गोरे रे कनारे से चले ।

जब पण्डत राजे गदे गरे से जाणे रे इज्जाजत मांगणे लगा तब राजे बोला बई आओ ताई छोड़ण चल । थोड़े से दूरो तोड़ी राजा पण्डतो री साथे बातो मारदी गोआ ।

रास्ते मज्जे जान्दे-२ राजे एक फिदरत मुजे । तेणिए एक टिडे (जन्तु-विशेष) मुट्ठी में (हाथ में) बन्द कर ली । तब पण्डतो से बोला बई जे तु तिशा प्रश्न लागे वाला असो तो बता मेरी मुट्ठी में का असो । तब पंडत सोचण लगा बई आब तो मेरे बारे आओगा । आब मेरी पंडतयायी रा पड़ा खुलणा ।

तब से आपणे पंडत बणने रे बात सोचण लगा बई आओ पंडत किशा वणा । तब तेणिए सोचा बई रोटी तो गिणरो बताई, गदे देखे रो बताए । आरो रा पता आपे लग गोआ था । पर वादो में तेसरे जोरे ई बोल गोइया बई आब आए वे टिडा तेरे मोत । हेरो राजे आत खोला हेरो बोलणे लगा बई पंडत जी तुम तो बिल्कुल ठीक बताया ।

तब पंडत सोचण लगा बई जु भगवान करो से बड़िया ई करो । मैं तो आपे से बोला था बई आब आए वे टिडा पंडत तेरे मोत । पर राजे रे हाथो में वे टिडा इ निकला । कई बारे तुका वे जान बजाए दो । तब से गरे गोआ । तेसरे पंडतयाणे रो से पंडत खुशी वे जिणे लगे ।

शब्दार्थ

शब्द	अर्थ	शब्द	अर्थ
1. राखा	गुप्त द्रुप	8. जवरिए	जबरबस्ती
2. हुंड	खोज करना	9. ओजलो	पड़ेगी
3. नीज	नींद	10. ऐतणा	इतना
4. शपाए	सिपाही	11. किशके	किस के
5. वितरों दे	भन्दर से	12. तुमों से	तुम्हें
6. जबाणसो	घोरतों	13. गाठड़ी	गाठड़ी
7. फांसे	फांसी		

भाग २. :- महासवी जनपद से सम्बन्धित लोक-कथाएं

क्रम संख्या	कहानी का नाम	संकलक
१.	नौ लाख हाथे	जगदीश शर्मा
२.	बेइमानी-मानबारी	जगदीश शर्मा
३.	हल्लू	जगदीश शर्मा
४.	घोर्न री ठीङ्	भ्राजार्थ केशरवाम शर्मा
५.	सौतेली मां	सुमित्रा ठाकुर
६.	ब्राह्मण ब्राह्मणी	हरिराम जसटा
७.	टुण्डी राकस	हरिराम जसटा

ती लाख हाथे

ती जी तुएं यो काणी खे नी लाख हाथी री नाओ देओं भाओं भागो ओ लक्ष्मी रा फंसला बोली । बात एक ई ओसी । एकी बार भागी ओ लक्ष्मी मतलब किस्मते ओ रुपौए पोइसें रे लड़ाए होए । लड़ाई रे कोई खास वजह न थे । लक्ष्मी बोली थे कि हांओ बड़े ओसी दूनिये दा मेरा ही बोलवाला ओसी मायें वालें आदमी रा खूब मान हों । दूजो बिल्लो भाग आप्प लछपी दू बलवान् बणों था । भागी रा दावा था कि लक्ष्मी ती भागी वालें आदमी खे ही हों । दूनों भणें आप आपणी बाती खी बड़ा भारी सबूत देओं थे । भगड़े रा आखरी चारा था कि विष्णु जी ही यों बातों रा निपटारा करी ला कुण छोटा कुण बड़ा ।

ती माराज विष्णु जी काए भाग ओ लक्ष्मी पूज्ज । विष्णु जी बेकुण्टी दे तपस्या करदें लागे रोए थे । विष्णु जी री अस्त्रीए तीन रे खूब आदर सत्कार किया । जवें विष्णु जी तपस्ये दू उठें ती भाग ओ लक्ष्मीए आपणे-र बात बोलणे शुरू किए पर विष्णु जी ती पूरे विष्णु थे । विष्णु जी ए सूची आप्प दी बट्टी आणयो ला फायदा । हांओ कौस छोटे आणु कस बड़े । ऐबे ब्रह्मा जी बिल्लो चालें । ब्रह्मा जी इन रा फंसला करी लें । ब्रह्मा जी भी बड़े पाके निकलें । तेनं भी बात आप्प गाओ टालें । एबें एक ही उम्मीद थे शिवजीओं रे कि फंसला स ई करी लें । ब्रह्मा, विष्णु, भाग ओ लक्ष्मी सब्बी अणे शिवजी ओ बिल्लो चाले गोग । शिवजी आसनी गाई विराजमान् थे, पार्वती जी से वे स्तुति करदी लागे रोई थी । राजी-खुशी पूछण बाद विष्णु जी ए सब्बी रे आणे रा मतलब बोला ।

शिव जी बिल्कुल खामोश रोए । सब्बी लोग मनाउदें मजबूर करदें लागें तयें सब्बी भणें शिव जांए मातलोगों गाई आणे ।

ती महाराज मातलोगों गाई देखा कि एक कुम्हार ओ एक कुम्हारें थे । दलीदो रें दूस काटे लागे थे । औलाद थे पर छोटा था बेटा । कुम्हार आपणा भाण्डें वर्तणो बणाणे रा पेशा करी था ओ कुम्हारें थ जू बजीरों री गावी चारी थे । एजा ही खणें पीणें रा जरीया था । ती जी मांओ के बाद बेटा गावी चारी था । ऐबें स बड़ा होए गा था । तेस रा काम था कि रें रोज दूर जांगलो दी गावी नीयों था । खंलो कूदीं था ओ दूस ओडे जाओं थे । एकी रोज स जांगलो दा सूत्ता तेसे खूब नीज लागें । दूस भी गर्मी रें थे । उठा ती छयाल आ कि हांओं ती गावी चारदा आए रोआ । पर देखा कि गावी ती तेई थी ।

सारं जांगली दी खुब तलाश की पर सँ नई भेटी। आखीर तेस खँ एक ही चारा था रुणे रा। रात पड़दे लागे रोए थे। कुम्हारों रा नेठा रुन्दे-र एक सादू काए पूज्जा। तो जी सादू तीं जरूर था पर थिया सँ शिव। तेस हारी सारे पाटें थे सादू रं भेशीं दे मतलब ब्रह्मा, शारदा, विष्णु, शिव ओ पावंते। तेने सादू जी रं दूणें खुब जालें। तपस्ये द उठयो साधूए रोणे-धोणे रा कारण पूछा। तेने बोली मूँ सूख लागे रोए हांओ सूखा ओम् मेरी गावो भी खोवी दी ओसी।

साधू जी ए तेस खँ दू लाडू दिणें ओ बोली कि ऐस रास्ते दी तेरी गावी भी मिली जाली। माराज देखणे री बात ऐजे ओसी कि एककी लड्डूए सारी सूख मिट गेए तेने एक लाडू आपणी आम्में खी छाड़ी।

सारं बात तेने आपणी मानं जी खँ शणाए। कुम्हारीए सूची कि जी हांओ बजीरो खी लाडू देउ लें तो सँ भरी खुशी हुआ। शायद कुछ इनाम-शिनाम भी देओ ला। बात इणें ई होए बजीर खूब खुश होआ ओ रोटी कपड़ा दिणा। बजीरें सूची राजा भरी खुश होला हांओ लाडू राजें खी देऊ। म्हाराज बात आगू दू आगू डेवे। लोभ तो बुरे बला ओसी। हो का कि राजें रं राणें वमार थे राजें सँ लाडू राणी खी दिणो ओ राणें बिल्कुल ताकड़ें होए गोए। राजें बजीरो खँ बोली कि तू दूजो लाडू आज नई तो तांओ फांसे मिली लें।

बजीरो खँ डर फसे गोआ कि एवें ती जाने री बारी आई। बजीरें सेजाई हुकूम कुम्हारी खँ दिणा कुम्मारें रुन्दे लागे। तिये सारं बात बेटे खँ शणाए बेटा डरें तो गोआ पर सँ नेम सादू री लोड़ीदा चाला।

शिव जी ए म्हाराज लाडू तो दिणा पर शतं ऐजे पाए कि आक्की राजें खँ दे ओ जी से कुछ मागणे खँ बोली ला तीं कुछ ना मागे चोऊ पांजी बार न मानो तीं सिर्फ धर्म मांगे। छोट भी राजे काए डेओ तेने मागणे खी बोली पर सँ मानदा भाजा आखीरो दा तेने धर्म मांगा। पर धर्म भी राजें दे गोआ।

राजें मुचा कुम्हार मांगो ला तो का रुपए-पोइस मांगदा। छोट सादू बिल्ली डेआ ओ सारं बात शणाए। साधूए बोली कि तू राज दू आपणी छोटी साथी व्य करणै रं शतं छाड़, सँ तस मानने पड़ो लें। धर्म तो तेने दे पाए।

राजें दरबारी दा सलाह मशवरा किया ओ तस रं बारें दे पूछताछ किये। आखरी दे राजा आपणी बेटा रं जाजड़ें बाणने खी मंजर तो होआ पर तेने चीन शती छाड़ी।

गेणके शतं थे कि सातो दूसी भितरा शादी रा म्हूर्त गाड़ना पड़ो आ।

इणे बरात आणने पड़ो लें न आज ताई आए न एवें आओ ले।

बरातो दा नौ लाख हाथी ओ नौ लाख सादू रा होणा जरूरी ओसी।

आखरी शर्त थे महाराज कि १६ सहस्र गोपी रा नाच बरातो दा हूणा चाई ।

ती जी शर्तों ती तेस र बसो री थी नाई । सं साधु जी ओ काए राजे री छाड़ी शर्तों बोलदा डेआ । शिव जी ए सारा प्रबन्ध किया । मूर्त गाडने रा कामा बहाजी खे दिणा । मूर्त था आजी र सातवे दूसी रात कं १२ बजे रं टैमो रा । माराज मूर्तों रा पता राजे खे दिणा गोआ । शिव जी ए ६ लाख हाथे बेकुण्ठे इ आणे । महाराज हाथी रा आणना था कि सब भूणें जांगली रा मंदान बाणदे लागे भिशी खो सारा जांगल मंदान बणें गोया ।

ती जी बरातो खी नौ लाख साधू आए कि सारं दा तीन री चिलमों, ठोठी करे न्हेरा पड़ा । इया ताई कि सर्गों दा बादली रा भी मुं घुएं ढका । बरात पूजने वाले थे कि इन्द्रासनी द नौ लाख सहस्र गोपियों रा नाच लागे । नाज ला था जी बस भाचणें रा सोदा था ।

शहरो नेड़े पूजें कि सब्ब कर्मचारी मस्त होए नाचो दें । खाणे बणाने वाले जेऊ, ध्याशी करे ई गोपी रं नाचो दें नाचदे लागे । हालत ऐजे होए कि आदम जेजे-जेजे कामी दें थे सब्ब कामी छोडयो गोपी रं नाचो दें मग्न होए ।

सारं दखारं सूचद लागे कि ए कोए मामूल हस्ते नैई । ऐवे राजे हुकम दिणा कि बरात वापिस नियो आपणें ही मूलकों दा सारा इन्तजाम करी । बिस्व कमें सब्बो बराते लाड़ी साथी वापिस लिए ओ पूजवे-पूजवे महल तयोर कियो ।

सब्बो भणें जरूरतो र अनुसार चिजी मिली कोई झूला, प्यासा न रआ । साधु रं जमात कुम्हारी रं जे मनाउदे लागे । विष्णु, ब्रह्मा, शिव, पार्वते, शारदा, भाग ओ लक्ष्में भी सब्बो तिन दें शामिल थिए । लक्ष्मी ओ भागो रा फंसला जगेर निपटाव्यो ही मिटा । भाग बड़ा बणा लक्ष्में छोटे रोए । कुम्हारी रं बेटे रं भाग जागे तबै ते लक्ष्में मिले । आपणे फंसले देख्यो सब्बो इन्द्रपुरी खी डेए । भगड़ा मुके गोआ । “लक्ष्में छोटे रोए भाग बड़ा रोओ ।”

शब्दार्थ

शब्द	अर्थ	शब्द	अर्थ
1. टालें	टालना	7. आक्की	आपने आप
2. रणे रा	रोने का	8. बितली	पास
3. डेआ	गया	9. तेने	उसने
4. मूर्क गोआ	समाप्त हुआ	10. मूर्तों	मूर्त
5. भूणें	व्यक्ति का सम्बोधन	11. नेड़े	समीप
6. बमार	रोगी	12. मुके	समाप्त होना

बेइमानी-मानवारी

एकी देशो दा एक राजा था। तेस रें दूई राणी थी। माराज एकी राणी रें एक बेटा था पर राणें मरे गोए। हो का कि दूज्जे मां तेस बेटे साथी ठीक बर्ताव नहीं करी थे। रोज राज ख उल्टी सीधी चुल्लो पाओ थे। तो जी बात एतने बड़े कि पराई माओ रा डाण्ड तेस बच्चे भी मिला। मतलब घरी जायदादे दू बेदखल करयो तेस छ देशकत दिणे गोए। चालदा-चालदा किस्मती रा मारा दूज्जे राजी दा पूज्जा। राणें बसणे रा ती कुछ ठिकाण था नई पर बच्चा एकी बूढ़ बेसवे रें घरें पूज्जा। बूढ़ बेसवा ती थे ई चालदे रकम नोयें भी मझाफरों रा खूब आदर सत्कार किया तीयों खें भी बातें चितो खी दूज्जा आदमे मिला। बूढ़ बेसवा रोज राज ख शहरो री खबरी नोयें थे ओ वागो दू फूल नोयें थे बस ए ई तीयो रा काम था। एकी दूस्सो तीये खबर आणे कि बजारी रा एक शाउकार चोरीयो खा। पर भई चोरी करण वाला ती सें ई मझाफर, राजे रा बेटा था जू बूढ़ बेसवे रें काम री था। सें अब्बल दर्जे रा चोर बणें गोआ था। था भी ठीक मां बापी रें प्यारा दू बिछडोयों, रोटी-पोली खाणे रा एक ही रास्ता थिया। सें थिया चोरी-डाका करना। ती जी तीयो चोरी रें खबर सार लोक दे बल्के। दूज्जे दू खों राजें रें मोदी रें घरी दे चोरे होए। सेजे खबर भी बेसवे बजारी दू घर आणे। पर तेस खें ती पता था चोरी करण वाला ती सें ई था। तो जी सारा आरोप पुलिसो गार्ड लगा कि पुलिस ठीक ढंगो शें अपणा काम नई करदें पैरा नई दिंदें।

दूज्जे दूस्सो राजे रा दरबार लागा जिन्दा बजीरें सारें पहरेदारी पुलिसियें खें स्तकें रोणे खी बोलो। आगल रोज वजीरें रे चोरे होए ओ बजोर राजे काए रोइयो पूज्जा सब्बी परजा दूखी ओ हेरान थें कि चोरी डाका रोजी रें रोज बढदें लागे रोए। एवं राजें रें खजाने गार्ड वारी थी। राजें पैरा तेज किया ओ अप्प भी चौगस होआ। तौ एब्ब राजें रें खजाने री चोरी भी हाई। सारें पहरेदार नौकर दू बरखास्त किए ओ कींदें द पाए।

एतनी चोरी रें बावजूद भी चोर आंटो दा न लागा। चोरी री तलाशी खी एक तरकीब सुचे गोए। होरे-मोती-रपोए पोइस रें ढेर खजानें वारें लाए गोए राजा अप्पें परें दा आ। सेजे खबर भी बेसवे घर नीए। सें बेटा दर्जी रे काए डेआ ओ बढीया ठाणेदारी रा वाणा बणावा बूट बाल-वाणा सब्बी कुछ पूरा ठाणादार वणा तेंने बूटो दी लाख लाए ओ सें भी ठाणादार बणयो चौकीदारी दा शुमार होआ। तड़-फड़, तड़-फड़ शफी बाठी डेआ ओ राजें खें स्लूट दिणे। पगड़े रूपी दा तौ कोए चोर नई आ पर खजाने गणदी बार 12 अशफी कम होई। अशफी लाखो दी जूडयो बूटो साथी डई। सारें मुल्को दा एलान किया गोआ ओ चोरी पाकडने खी इनाम छाड़ो। पर क्या मजाल थे जू चोरी रा पता लागदा।

तब तेने बेटे बैसवे री मार्फत बोलो कि जव चोरो रा पता मोए ला तो मुख का मिलो तो राजे बैसवे खं ब्राधा राज देणे रं प्रण किया माराज ऐवे किस्मत भरीणे वाले थे तेने बेटे सारे आपणे दुःखो रे कथा राज खे शणाए ओ आपणी चोरी रा पूरा हवाला सबूती साथी दिणा । राज तेस री हालत पांवे तरस आ तेने आपणे बायदे मुताबिक आपणे राजी रा हिस्सा तेस खी दिणा । यो बातों रा पता तेस रं वादो रं राजी दा भी चाला । लो जी, हो का कि तेसरे दूज्जी माओ रं बेटे भी तेस खं निउंदा दिणा ओ ब्रादा हिस्सा देणे रा वायदा किया । एवे सँ भी राजी रा मालिक वणे गोआ । जू कुछ मानदारी हासिल हो सँ बेइमानी हासिल न करी सका ।

शब्दार्थ

शब्द	अर्थ	शब्द	अर्थ
1. डौण्ड	दण्ड	9. मनाउदे	मजबूर करना
2. जिन्दा	जिम में	10. मातलोणों	मातलोग, धरती
3. भ्रांटी	शय्यता की ग्राह	11. भेटी	मिली
4. बंनये	बैसवा, दासी	12. हारी	साथी, साथ
5. पगडे	प्रकट होना	13. तिये	उसने, स्त्री का सम्बोधन
6. जुडयो	जुड़ा कर	14. गाडने	निकालने
7. भरीणे	भरने वाली	15. पूजणे	पढ़ चने
8. टाल	निकालना	16. निपटावणे	निपटाने



हल्ट

एक था जी भाट एक थे भाटिण । तो जी पराणे जमाने रं भाट विद्या शास्त्रो ओ दलीदो खी बड़े मशुर हो थे । भाट दूज्जा जाजडा बाणा । गेणकी भाटणे रं एक हल्ट थो ओ एक छोटे थे । गेणक जमाने दं भेराम ओ कुरुप ओलाद भरी जाओ थे । तेस हल्ट ओ तीयो छोटी साती दूज्जी माओ रा बरताव ठीक नई था बस..... जी तीयो छोटी ओ हल्ट खं दरो (दवारी) पाछू खाणे रो मिलो थी । खाणे रा कोई खास चीज नई मिली थे सिर्फ तूशो री रोटी तिन खं देखो थें दूसो भ्यायो तिन गोरु चारने पडो थें । ऐजो था तिन रे रोज का जीउणा !

हल्ट खं एक दैविक वरदान था तेस रं आपणी वीणे खं खोलदो थो कि जब भी तीओ केजी चीजो री जरूरत पडो तो तोए मेरे शिगी दे लाणे तो जी बात

भी सेज ई थे । जब भी जरूरत पड़ी सँ होल्ड रँ शिगो दे जाओ ओ सब चीज तीयो भेट जाओ ।

से जी बातों रा पता सीतेली माओ खे लागा । तीये भी दूसी आपणे छोटे हल्डू साथी छाडे । आगू बान इणे होए कि तियों भी शिगटी दे लाए ओ तेने तियों रे आख भानी पाए । सँ रुन्दे-रुन्दे घर आए । माओ खे सब हाल शणावा । तियो तेस खँ रोश फाटा बोला तेस घर आणे दे हाओ तेस पूछू । यो बातों रा तेस खास डाण्ड दिणा तेस काटणें रा फँसला होओ । सेजी बातों रा पता तीयो छोटी यनी तेस री वहण खे लागा । सँ तेस आगू रुन्दे लागे । तेने बोलो इन्है रुणे रे बात नई तू घवराए न । जो ताओ मेरो डलकी देओ ल तू चरादे दी दाबे । खाए नई । ताये भी एज्जा ई कियो ।

एकी बारी दूर भरी दूर एक मेला यानी जातरी लागी । सब्बी डावर रँ तेस मेल खी जाने लागे घरी रा सारा काम तीयो रे सपुदँ किया खल्ले खेचो ताई गोरू बोचो दू खाण पकाणे ताई तीयो एज्जी काम करने पडी । ती जी सूचदँ-सूचदँ लागे तीयो खे एक ई हिट घिसँ । सँ ओकर खी डे जेई सँ हाडकी जराडी दो दवाई दी थी । तीये देखो खी सब चीज तिन्द मौजूद थे । चट्टू चट केरू थे सँ तिये खल्ले खेचो रँ कामो दे लाए । लोए कण्ध रेई खे लिमण-घूणण रो काम दिणो यनी सब काम तीये दूज्जे रँ स्पुदँ लियो । आपू नए-नए झुडकँ जू तिन्द थे वाने गीणे लाए ओ आपण घाडा कशा आपू भी जातरी

जातरों देखयो वापसी खी तीये घोड़ा दोड़ाया ओ सब्बी दू आगू पूज्ज । तीये घोड़ा, गीणे, चट्टू चट केरू सब चराडी दँ ई दावँ आपू पराणे कापड़ दे कामो करद जूटे । जब सब लोग वापिस पूज्ज सँ इयो बातों देखयो हैरान होए कि सब काम बिल्कुल त्येर ओसो ।

पणमेसरी का करतब आगू ए होआ कि घर आन्द-आन्द तियो छोटे रे पोलड़ वाटों दे छूटे । स राज रँ शराई खे मिले । ओ तिन्ने घर आणें ।

राज सूचो ए चीज कोयो खास ही ओरती रँ होए सबो तेने आपणे शपाए छाड़ें तिन खे बोला कि तेस रँ मुल्की बी जेती भी छोड़े ओसो जियो खे ए लागी लं से मेरे बेटे खी बणें । एज्जी लोडो दे शपाए इय भी पूज्ज । मेणी ती तीयो काणी छोटी खे नापे पर न लागें । जान्द-जान्द तीयो खे भी परखे कुदरत होए कि सँ पोलड़ तीयो खे लागे गोए । लागदँ भी केथ न । तीयो रँ ई थिए ।

मायँ सूचो राज रँ घरी दे डेओले तिये आपणी काणी छोटी साथी पाणी खी छाड़े ओ छोटे शकौए पाए । पाणी काए काणीए बोले दादीए-दादीए तू

वाढणे की हांओ। स भी पाणी दा आपणा मुं देखदं लाग दूज्जी छोटीए धाक्का दिणा ओ स पाणी माजी पड़ गोए। माराज स काणे छोटे खुशी खूशीए घोरें आए ओ माओ खे सब्ब बात शणाए। कुदरती रे बात थे कि तेओ एक बढीया फूल जमौ। पर स कसी रे हाथ आन्दो भाजौ। बस जू भी तेस नेड़े डेंओ थो ए ई बात निकली थ :-

"झुकु मुकु काणी कभारी र आख टुकु"

एकी बार राज रा बेटा भी आ ओ फूलो चोड़दा लादा फूल राज र हाथो दो भी न आओ। नेने फूलो खोदणे रा हुक्म दिणा देखा कि फूलो री जाग दे स छोटे मिले। तिये सब्ब बात शणाए राजी तियो साथी बंया वाणा ओ तिन दूई खो सजा दिणे।

शब्दार्थ

शब्द	अर्थ	शब्द	अर्थ
1. गोरु	पशु	6. सूचदं-सूचदं	सोचने-सोचने
2. शिगी	शीघ्र	7. छोटे	लड़के
3. रुन्दे-रुन्दे	रोते-रोते	8. डेंओले	जाग्ये
4. शणावा	सुनाया	9. चोड़दा	तोड़ता
5. जातरौ	मेला	10. कसी रे	किसी के



घोने री ठोड़

पराण सौम द म्हार प्हाड़ी द बोड़ बोड़ ठोड़ ओ थिये जिनी री ठिठव्ये सार देशी रा माथा ऊँचा किया था। एकी सौम री बात ओ। एक रेहड़ थिया जेसरो नांव थियो ल्हाली। स बोली थिया बोड़ा बेग ठोड़। आपणी जवानी गैरा थिया तेस बोड़ा ओबिमान। तेस बोगत आपण लाक ओ दूरी दूरी ताई स थिया बेग मौले दा। दूजी बात थी एजी जे तेस सौम इत प्हाड़ी दो थियो मछराज। तेस राजो दा जू जेस जेर लूट सौको था तेर लूटी था।

एकी बोड़ आपण पौरगण कम्हारशणी दी स मांछी काटदा काटदा घुंडी री ठाकुरी दा पूजा। तेस बोगत घुंडी रा राजा मुंका थिया बीण्यो इ। तीनी ल्हाली रेहड़ तेत पूज्यो तेस राजे ओ। तेसरी बादी पौरज क दीता लान जे सार पौरगण दा जू कुंवे ठोड़ ओ सै मू साथ मकाबला कौरी। स रेहड़ बेशा एकी चीशो री बाव आगे रा जेथो बादा गांव चीश लेओ थिया। जूइ तेस नोड़ डेओ थिया तेस ई स भांगी जाओ थिया।

एरी ई देसो री बात ओ। राजा ओ तेसर टाबरी रे बादे भोण मोरी लागे थ चीशे मुखे। तेस राजक दीती कुणिय एरी सला जे इने घुंडी री रास्ती दा तो नई कुवे एरा ठोड़ जु एस भांगी सौकी पौर शूणो जाई जे कल्हांजी पौरगण दा ठेबगो रे लाक मांज एक कनेइत बोसी। तेसरा गांव ओ बतिउड़ा। ठोड़ो री तई बतीउड़ी कनेइत ओमो थ्यो माने दे। तेस कनेइतो नाई घौना। स शूणा जाई बेग डारा ठोड़। मरदेइय नी तेमक कौनरे बी ना टापिदे। जे कुवे तेस लेव बोली तीव केता ऐ रेहड़ भांगियो ला तीव शांति ओई सौकौली।

राज तबिये दो सपाई बेदे ओ से पूरे समभोवे जे तेस बोड़ी इजतिथे पां बेदे ओ मेरी आइती बी दे जे घुंडी रे राजे छाडे उ हामे तां बेददे।

स दूने सपाई तेस बेदणे री तई बतिउड़े पूजे। तेसर घोर डोवे। जेस बोगते स तेसर आगे पूजे स था सूता। तेसरी जनाने बोलो जे एबी ती नी बसल्लिदा। जो ऐ बिबजोला तीबे एमरे तबाखू भोरनी डायणां ओ। जो तबाखू पोवा लागोला तीबे आवे तुमे भिठे। ती बोले आपणी बात। तीने कियो तोरो ई। जो स तबाखू पिदा लाग्गा स डोव भिठे। तीनी से पूछे जे केथो आए ओ कई आए ओ। तीने जवाब दिता जे हम उ घुंडी रे सपाई। हामे छाड़उ राजे। तेन मोलाओ

एक रेहड़। सँ बेशाअरी एकी बावं पोशं। जुई तंतं चीशोक डेयो तेसई भांगी से। राज की ओ ओरोज जे तू आव सोक तो ऐ मसीबोत टोलो लो।

तेस बातो शुण्यो धौना शीगा शीगा तयार ओआ। तीनी तीनी सपाहक खाण रो चणाओ। खायी पीयो सँ तेथो हांडवे लागे। घूड पूज्यो राज तेसरा बौड़ा आदीर किया। तीनी बोलो ज केताओ सँ रेहड़। तेती गोआ सँ रेहड़ बी हासी सँ थिया राज र बासं दो थोड़ा इ दूर। तीनी रेहड़ दीता लान ज सार सार सार पहाड़ी दी ज सीतो सूइयो कूवं कने तिण तो मेरा मकाबखा कोरी।

धौना थिया देवी रा पासोक। तेस दो एक ई भाण आयी ओ तीनी पीगिये गाओ इ आंगणोक छलांग दीती। दूजी चीजी छलांगोक पूजा तेस रेहड़ो आक।

“आहां रे बँ पोलिये तू कोर वार तो रोई मेरी बारी” तीनी बोलो। रेहड़ बोलो ज “ओला कनइता पछताऐला तू तो ना बोले” धौन बोलो—रेहड़ा! बतिये कनइत पोलिये वार नेई कोरदं। तीनी रेहड़ तेबिय तरारी रा वार किया। धौना ना भांगिया। एक्की बौई धौन सनेक ओय्यो डांगरे लाई ओ रेहड़ बचारा चित।

धौन री एई ठिडव्य बादे घंडी रे मांछोक बौड़ी भारी चैन दीती। ओ राज तेसरी बौड़ी इजीत कोरयो सँ तेथो बिदा किया। तो एरे थिय पराण सीम रे मोरौद।

शब्दार्थ

शब्द	अर्थ	शब्द	अर्थ
1. ठांड	सशक्त, जवान	7. भिठे	भीतर
2. रेहड़	एक जाति विशेष का व्यक्ति	8. पोशं	पास
3. मोलंदा	अपनी शक्ति पर गर्वित	9. हांडवं	खलने लगना
4. सछराज	मानुषराज अर्थात् अराजकता	10. भाण	वेचकला के प्रवेश से मनुष्य में होने वाला कम्पन विशेष
5. चीश	पाणी		
6. भांग	मारना		

सौतेली मां

एक ठाकुरी रा गांव थिया। तेंस गांव रा मुख्या रामसिंह था तेमरी पत्नी मरियो दो महीनं हुए थ। आपणी छः महीनं री छोटी (लड़की) छोड़िओं सें भगवानों खी प्यारे हुए। रामसिंह मुख्य कई रूई पिटीयो एक वर्ष एपाए। ओ तेंणं आपणे दूजे शादे किए। तिओं दूजो रं भी दूई छोटी जन्मी।

रामसिंह री पैलकी घरवाली री छोटी रो नांव मुशीला थिअों जिणो तिअों रो नांव थियो तिणें ही सें थियो मुन्दर सें ऐती थिए कि तिओं रा बखान नाई लिखीदा। तिन दूई छोटी रो नांव लच्छे ओ मंन थियो। से बड़ी चंचल ओ लड़ाकी थी। मुशीलें खी सें रोज मार पड़वाअों थी। पर बेचारे मुशीला हें नें हां कौरी थिए।

वर्षों गाई वर्ष बीतदें लागं चीनं छोटी जवान होई गोई थी। एकी दिन रामसिंह शहरों खी डें लागे थिआ तेंणें आपणी चीनं देवी बोदी ओ बोलो बेटा हांव शहरों खी डें लागे सौ ताहरं क्या क्या मंगावणो सौ। लच्छेओ ओ मंन आपूखी झड़कें चड़ी एरी मंगवाई। मुशीलें बोलो बापू मूखी एक बाकरे आणीयों। मुख्या बड़ा हैरान हुआ। पर तेंणें कुछ नाई बोलो। सें मुशीलें दू बेहद प्यार कौरी था पर साची-२ जोरू रा गुलाम भी था। एकी हफतें बासियें रामसिंह शहरों दू आ। तेंणें मुशीलें खी काने भूरें रंगो रे हिरण आणे। बाकरी री जागें तिअों खी एक मुन्दर हिरण जेबे आणे तौ मुशीलें री आखी दे खूशी रे आंसू आई गोए। सें राज डंगर चारदे देओं थिए। जीब स गीत गाअों थिए तौ बादे गोरू एकी जागे खड़े हो थिए जे भी मुशीला डेअों थे तेछीदे सौ हीरण आअों थिए। तिओं रे सौतेले मां तिअों तंग कौरी थे तिअों खी तूशी री रोटी देअों थिए।

एकी दिन सें रूए लागे थिए हीरण तीअों फेरें तीओं फेरें चक्कर काटदे लागे ओ हिरणीए बोलो हे बेटो तू कई रूए लागे सौ। मुशीला हैराण हुए। हीरणणीए बोलो हे बेटो तू हैरान नें हो हाव इन्द्र लोकों रे रहणं आले सौ। इन्द्र देवें मूखी आप दे छाडा सौ जेती ताई हांव कौई रो भलो नाई कौरुले तेती ताई ए आप मूंदू नाई छुटदा। ऐजे बात तू कौई खें नें बोले। आच्छा तू बोल कि कि तू कई रूए लागे सौ।

मुशीलें बोलो हे हिरण माता मेरे मां बड़े खराब सौ सें मूखी तूशो री खाणें खी देअो मेरा पिता तेबी कामो दा डेआ ओंदा हौ। राती मूखी पितें

जी रं डौर तिणो ही देऔ जिणो बादे खी देओ पर तियो भी लण मोचं ज्यादा पाव । तीओ री बात शुणीओ हीरणी री आखी दे आशू आए । हीरणीए बोलो हे बेटी मुशीला तू मूखी तिओ तूओ री रोटी देइओ और ठन्डो पाणे हीरी घास खलाईओ तौबे तेरे जुणजो खाणो होलो मूँह मांगे । मुशीला रोज तिणो ही कौरो थिए । जुण जो भी स खाणो री चांव थिए सेजो खाओ थिए । तिओ री रंग रूप होर भी खोलदा लाग । तिओ री सीतेली माए सूचो जे ए दीन पर दीन मोटे होए लागे आई का बात सौ दाली मांजी कालो तौ कुछ जरूर सौ । तिणें आपणे छोटे लड़के बोदे ओ बोलो आई बेटा इओ साथी डे आई ऐ केये मोटए लागे सौ । मने मुशीले ख बोलो हे बहन जी हांव भी आज ताव साथी गोरू खे आऊ मुशीला बड़ खुश हुए कि आज मू साथी मेरे छोटे बहन गोरू खे आए लागे सौ पर बेचारी खे का पता था कि इन्दरें जियो दो का सौ ।

हे बहन जी तूए का खाओ सौ । तूए मोटए लागे सौ । दीन पर दीन ताहरा रूप गुलाबी रं फूनी नोहरा खिले लाग । भोलो भाली मुशीले सब कुछ तीओ खे बोलो । मने बोलो आई हांव भी इणो ही कौर । तौबे नू कौर रोग । माए कौबे रोके । जिणे ही तिणें हीरणी दे लाए हीरणीए आपणें शींग कौर तिओ रं आख भाने मं रुंदे २ घोरौ ल ओ आपणी आमे खे नमक मोचं लाईओ बादे बात बोले । तौबे का थो जिणो काटे दे गई लूण लाई आण दे आपणें बापू हांव हओ हीरणे काटणे ना नाऊ तौबे भी खाओ ले आई । रामसिंह री घर-वालीए रामसीधो खे बादे बात बोले कि इओ हीरणी काटी । आज एकी रं आख भाने काल रेकी रे । रामसिंह भी ऐती शुणो ओ हीरणी काटणे रे इजाजत देण । ऐजा पता मुशीले खे लाग । तौ स रुंदे २ हीरणी काई डे । हे हीरणी माता तांव का काटो तेरे हतियारीन हांव ही ओसू माए बादो कुछ तेरे बार दो बोलो ।

हीरण बोले हे बेटा तू रूप नाई । ए इन्द्र महाराजी रं कृपा सौ कि मेरा आप खत्म होए लगा । तू इणो कौर मेरो मांस न खाए तेओ कूए गाशी बोलें । दबाए । जा तू डेओ । मुशीले रोए रोइयो आपणा बूरा हाल किया । ओ मन ही मन भगवानो खे बोलो माए भगवान कुणजा पाप किया जू मां तौ छिने के ना ऐबे मेरे मां तू भी प्यारे हीरण माता भी मूँह ओलग होए लागे सौ । मुशीले तिओ हीरणी री मांस कूए गई गई बिलको दबाओ ।

दिन पर दिन डेऊदे लागे एक राजा भेषी बदलीओ तिगीदा आ । जिणां ही स तेस कूए काई पूजा एक सुने रं पेड़ो देखीओ से हैरान हुआ तणे स पेड़ होलाऊणा चाह पर स होला ही नाई । स आपणी राजधानी खी बापस डेओ । तेणे आपणें सिपोह भेजे पर तौबे भी स पेड़ न हिला । राजे बड़े कोशिश किए पर तेरे दाल न गले ।

राजे नगर-नगर गांव डिडोरा पिटवाया कि जू आदमे ऐस पेड़ो गाड़ो ला तेसखी हांव आधो राज देऊला ओर अगर स कोई औरत होले तिओ साथी हांव

शावे कौरुला । सारी दुनिया ते चूटे गोए पर सं पेड़ टस दू मट नें हुआ । मुशीलें रे मां और दूई बोणी भी आई पर तिनरें जानें कुछ नें हुआ । तेस गांव रा एक बड़ा राजे काई डेआ श्री तेणें बोलो कि हे महाराज हमारे गांव दे एक बहुत ही खूबसूरत बेटे सो पर तिस्रों खे कपड़ें लत्ते नाई मूंडो दो जूआ हो जूआं सोर तिस्रों रे मां सोतेले सो सं बड़े अत्याचारीन सो । राजे आपणें कहार पालकी कीरे छाड़ें और दासी भी भेजो गीणें कपड़ें भी भेजें । मुशीलें खे गीणें झुड़कें बामें तिस्रों रें मूंडी दू जूआं गाड़ी । श्री सं पालकी दे बठाले जुणजा भी तिस्रों देखी था सं बेहोश जेआ ही थिया सं देखदा ही री था । जिणें ही सं पालकी दू उत्तरे राजा तीस्रों देखीओ हेरान हुआ ओ मन मन ही तेणें इरादा कौरडा कि शादे कौरु ला तौ इओं साथी नाई तो चाहे ए पेड़ डाली बांव न । मुशीला जेबं पेड़ी काई पूजे स जीर-जीर रुंदे लागे । राजमात तिस्रों काई आए ओ पृथो हे बेटी तू कई हए लागे सी का बात सो तू मूख बांल मुशीले आपणें सारे कहाने राजमातें खे सुनाए जेओ गुणीओ राजमाता ओ राज बड़ा ही हेरान हुआ पर राजमातें बांलो कि एओ री का पोता (परफ) सो कि ए बांत ठीक सी के गलत । मुशीलें तेती गुणी ओ मूल-मूल पेड़ी वील कदम बढ़ाए । सारी जनता ओ राजा राजमातें रे जिऊ घड़के लागे थिए । मुशीलें एक ही धाकें दा स पेड़ डाला सारे जनता सारे बांलदें लागे राणी मुशीला दखी री जय । मुशीलें रे शादे राजे साथी होई गाए । रामसींह भी बड़ा खुश था तेसखें भी आपणी घोरवाली रे कारनाम रा पता लाग़ा । और तेणें आपणें घोरवाले हमेशा खी आपू दू ओलन किए । भगवान रे घरों दे देर सो अंधेर नाई । जुणजा सो सेजा हो री ।

पर सौतेली पांओ री जाऊ ऐबी भी ठान्डो नाई होओ थियां । मुशीलें एकी बेटें खी जन्म देणा सं राजे खी रोटी ओ आपणें बेटें रे देखभाल आफी कौरा थिए । एकी दूस राजे तिस्रों खे बोलां । हे प्रिया ! तू ऐती काम कई कौर दास दासी बतेरी सी करने आली । हे महाराज ! ए तो मेरा धर्म सो हांव अंधमी कीणें बोणू भारती रे नारे चांव गरीब होले बांव अमीर तिस्रों खी आपणा पति ओ बच्चे ही सय कुछ हो सी जी बें हांव ऐती ना भी कौरु ले तो बें हांव मां कयौ रे कदौ रे पत्ने । राजा तिस्रों री बात गुणीओ बड़ा हेरान हुआ । तेसरा मन इणी पत्नी पाईओ खुशी कोरे अमदा लाग़ा ।

एकी दूस (दिन) करमी रे मारे सं कए बोले डे । तिस्रों री सौतेली आमें सं देखे और आपणी वडी छोटी खे बोली । बेटा लच्छीए ! तू मुशीलें खे इणी बोले कि बहन जी आपणें झड़कें मुखें दे आई हांव किणें लागू तू मेरे बाम कि तू किणें लागे । बेचारी झोली झाली मुशीलें भी तिणो हो कियो जीबें सं कुएँ दे भाकें तौ लच्छीए तीस्रों दा धाका दीणा । श्री सं पाणी मांजी पड़े । लच्छीए लाम्बो घुंघट गाड़ो ओ महली खी डे । ऐजा तमाशा एकी कुम्हार देखें ला थिया सं शिगा-शिगा आ । ओ मुशीले राणी रे जान बचावें । बेहोश मुशीलें रे पेटी दू तें पाणें गाड़ो ।

मुशील रा बेटा बड़ा भारी रूझी था। ना ही राज री खाणा स्वाद बोणी था। एक दिन राज तिम्रो दू पूछो हे प्रिय रानी तू मंद घुंघट कोई कोरे और बेटा भी आजकल बहुत रूझी न ही मेरा खाणा स्वाद बणदा। का बात सौ। राणीए कुछ घबराईयो बोलो महाराज एकी पंडत बोलो कि महाराजौ दू घुंघट एक बर्षा ताई गाड़ना जालो। आजकल नेरे तबीयत ठीक नाई सौ। बेटा भी पता नाई कंई रूझी।

मुशीला राती राती आग्री थिए राज खी खाणा ओ आपण बेट खी दूध पिलाओ थिए। राजा बोलो या कि का बात होले भिस्का खाणा बड़ा स्वाद हो। राजा राणी दू पूछो। हे महाराज राती बेटा चैन करी सूतो। तांब मेरे भिस्का खाण स्वाद बोणो दूसो खिरूओ तांब मेरे खाण शिवा-२ कोरे स्वाद नही बौणदा।

एक दिन कुम्हार राज बिल आ ओ बोले हे महाराज राते एक छाया जे ताहरे महलो दे आव। राज बोलो अगर ऐ बात ठीक न होले तो हांव तांव कड़े सजा देऊला।

दुजे दिन राजा पहरे दा रीआ। जिणे ही से छाया भीतरे आए ओ राज से पाकड़। ओ बोलो बोल तू कूण सौ? हे महाराज हांव ताहरे दासे मुशीला ओमु। मुशील आपणे बादे बात बोले आच्छा कोई बात नाई सुबह होणे दे। राजा बड़ा हैरान था।

जीबं सवेरा हीआ तौ राजा बनावटी राणी काई डेओ ओ बोलो राणीए हांव तेरी शौकली देखणे खी तौरसे गा सौ मूख आपणे शौकल दखाओ। बेचारे लच्छे सूख पाछटू (पत्ता) नौदरे कांबदे लागे। राजा तिओ दा एक हंटरौ रा पटाका लाओ तिम्रो रा घुंघट उठाया।

राजा सारी जलत एकी खुल मंदानी दे कोठे कोरो ओ आपू रथो दा बोणा रथो दे स रज बानी मुशील री माओ ओ लच्छी भी तिदे ही बानी ओ रथ दोड़ओ से पाछो चित्लाओ से बूरी तरह घायल होए लच्छे ओ तिम्रो रे मां बोली हे मुशीला बेटोए आमू बचाओ आमे उमर भर तेरे सेवा कीरु ली बचाओ बेटा। मुशीला हाथो जोड़यो राजे काई औरज कोरी हे महाराज इन क्षमा करो हांव ताहरे लातो गाई पौड़। आपणा गुस्सा ठण्डा करौ। राजा जलदी आखी कोरे मुशील राणी बील देखी जब मुशील री आखी रे नम देवो तो राजा बड़ा हैरान होआ तेरा गुस्सा एकबम काफूर होआ ओ तेण रथ रोको। दूई मां बेटो मुशील रे लातो गाई पौड़ी। “भारी बुराई गाई अगर कोई क्षमा कोरी से सभी दू बौड़ा दान हो।” बोलन ही खी कि तौए का पापो खी क्षमा दान देणा। तेहो बासिए सब लोग सुखी थे।

शब्दार्थ

शब्द	अर्थ	शब्द	अर्थ
1. छोहटी	लड़कें।	11. भ्रातृ	भ्रातृ
2. टपाए	व्यतीत किए।	12. मांजी	में
3. ताहरै	तुमने	13. जियो दो	मन में
4. चारदे	चराते	14. नोहरा	की भांति
5. गोरू	पशु	15. शोगे कोरे	सींगों के साथ
6. डेघी	जाना।	16. रुंवे रुंदे	रोते रोते
7. तिम्रों	उसकी	17. होलाऊणा	हिलाना
8. फं रे	गिरा	18. गावे	गादी
9. मूखी	मूक	19. कीणे	कैंस
10. छाड़ा	दिया	20. भिक्षका	सुबह का



बाहमण बाहमणी

एकी देशा दी एक ब्रह्मण आपणी बामणी साथी रोआ ती। सो बामण भरी गरीब ती। सो बामण जे दोता लं कीदा का खाणा ले आणी हेरा ती ता बड़कं खाणीए हीआ ती तेबे फीकर पड़ी नी। एकी बेरा तीने चार पांच धंडे भूखे रहियो होए गए। तेऊ रियासतीयराजीय दूई सपाही बामणी तलाशी दी तं। तीने सपाहीए तेऊ बामणा का जात पूछी और सो तीने आपू साथी राजा काले नीअो और तेऊ लं बोलो कि जे तू राजिए सवालो ठीक जवाब देओ ता ताले इनाम मिलनों। ऐणों शुणीअों बामण बड़ो खुश हुआ। राजीए बामण खूब आदर खातर की।

दूजं धंडे तीनीं पौडले राजीए सवालो ठीक जवाब दिने। राजिए खुश होईओ बामणा लं चार शौ अशफों दीनी। तेबे बामण घौरा ले चालो और सोच सोचो की ऐतरी कमाई देखिअो मेरी बामणी भरी खुश होणी। बामण जेबो जांगला दी न पहुंचो ता तेऊ लं राच पौड़ी गई। तीनी भी धौनी पाई नूं अशफों तेता गाए पाश्रो चादरू और चादरू गाए सूतो आपू। तेऊ बामणा लं ता दीशा फीरी गई। एणो ता तुम्हें जाणा ही हो कि शौ दशाफेर बड़े बुरे होआ। तेऊ, बामण तेबो सूतूआ ही ता कि दीशा भाणछे रूपा करियो आई और से बादा अशफों आपू ले नो जेबो बामण सुतियो ऊबूआ ता सो बड़ो परेशान हुआ कि सें अशफों तां केणिए नो हैरी। बामण राजा काले वापिस डेबूआ और राजा काए सारो हाल शणाऊओ राजो बड़ो दयालू तो, तीती बामणा ले तोई चार शौ अशफों दीनी। ऐणी ऐथले बामणा सीथीजौ दीशो खेल ची, चौऊ बेरा चालदो री लागी। एकी बेरा राजिए सोन्चो कीजौ बामण मुं रोज रोज ठोगा ता नहीं। एकी धंडं बामणा पा चुपा चापी आओ। तेऊ बामणा ले तीन कं भी राच तीदीं ही पौड़ी। बामण तेनिकं भी तंणा ही कीओ। और सूतो। राजिए सोचो कि जी बामण ईना अशफों इंदो चोरा हौणो। राजो भी एकी पेड़ा पाए रो लूकी। आधी राची सौ दीशा तीना अशफों गाड़दी आई। सो अशफों गाड़दी भी लागी ता राजो भी सामने आओ दीशा पूछदो लागो। दीश बोलो कि “ऐऊ बामण ले ता दीशा ही आ ऐणी बेशी नी।” पर राजिए बोलो कि तु ऐरी बादी अशफों वापिस कर। दीश ता बोलें कि राजीआ तू पोरू मान नहीं तो जो दीशो तां बीले आ। राजिए मंजूर कीओ और बोलो कि जो कुछ तू मेरी करो सकी करो पर ऐऊ बामणी बादी अशफों वापिस कर। दीसे भी बादी अशफों बामणा ले वापिस की। तेबे दीशा राजा बीले गई फीरी। तेता बाद राजो शकारा खेलदे डेबूआ और सो राजो शकारा खेलदा खेलदा एकी दूजे राजीए मुल्का दा पहुंचो। सो एकी तलाबे कनारा दी आराम कौरदे बेशो। तेऊ काए खाणा लं खरबूजो ती। जेबो तीनी सो खरबूजो

खाणा ले गाड़ी ता सो खरबूजिए बदले एक माणछो मुंड तो । तेऊ बकता दी तेया रियासतीए राजीए छोटू गड़ाबूआ (राछो) नौ तो । सो मुंड तेऊ राजिए छोटूए मुंडा साई तो । तेऊ राजा ले हाथा और लाता काटणिऔ हुकम हुओ किले की तेऊ गाए तेया रियासतीए राजीए छोटूओ खूनो इलजाम लाओ । हाथा लाता काटणा बाद सो राजी कूड़ा कवाड़ा । माहें दीनो फंकी ।

तेसी बीथी एक तेलण बजारा ले तेला बेचदी डेवा ती । राजीए बोलो हे तेलणीए जे तू मेरे हाथा लाता गाई तेल लाई ता तेरो एक पैसो बडनो । तेलणीए सारी गल आपणी शाशू काए शणावो । तेलणीए श्री आपणी शाशुई गल शूणी और राजिए हाथा लाता गाई तेल लाओ । तेऊ धड़ा दी तेलणीओ बाकी ही एक पैसो बडो । तब तेआ तेलणीए सो राजी आपणा काले नोयो । राजी भेरबे राग बडी अच्छी लय दी गाई जाणा ती । एकी बेरा राजिए छोटिए तेहरो राग शूणी और तेऊ गाए मोहित हुई । और तेऊ सीथी शादी करनीओं फंसलौ किओ राजीए सो आपणी छोटी समझावा पर सो न मानीं । जेबे राजी महला ले आणों और तीनी आपणी सारी कथा तीदी रियासतीए राजा के शणावीं ता सभी लोग हैरान हुए । तेऊ राजिए से हाथ लात भी तीदी एकदम ठीक हुए और सो शादी करिओ आपणी रियासती ले वापिस हुओ और आपणी रियासतीओ राजपाट समझाओ । जे एणे सब ओ दोशे ही फेर त ।

कथा कहनी गोआ बिमरी
आ गोवा एबे घिमरी ।

शब्दार्थ

शब्द	अर्थ	शब्द	अर्थ
1. दूजे-धंडे	दूसरे दिन	5. चुपा चापी	धीरे-धीरे
2. राब	रात्रि	6. मुंड	सिर
3. मूलो	सो गए	7. लाता	पांव
4. उबआ	जागा	8. शाशू	सास

टुंछी राकस

पहले जमाना दी एकी गांवां दी एक बुढी रोआ ती । तेआ बुढीयें चार छोटू ते । तीने नांव ते टांगडी, मुंडडी, बाली और सभी का मांठडे छोटूओ नांव तौ खंकचण । एकी बेरा तीने चारी छोटूयें बोलौ कि म्हारे खाणो हलुओ । ता तीनी मांए बोलौ कि सभी का पौले ता आग जा आणनी । तेऊ जमाना दी आग भरी मुडिकल करीओ जा ती पंदी करनी । तेबी आजकल जेई मार्चिम और

लाईटर नहीं हुआ तँ । तीनँ बोड़इँ बोड़इँ चीनी छोटूयँ ता आगो आणना लँ न कीए । तीनी सभो खा माठइँ छोटए बोलो कि आग ता हाँओ आणु । तीनी ठोठी चाको और आगो आणदी चाली । भरी दूर जांगला बी तेऊ लँ एक आगीयो घँनो घोशँ । सौँ घँनो का लँ डेऊओ और तीनी टुण्डी राख्खा लँ बोलो कि मामा तु मुलँ आग भी देआ । टुण्डी राकसे बोलो कि भाणजा तेरँ आग कीऊतँ चँई । खकचणूयँ बोली कि म्हारे हलुओ चाणनो तँवे टुण्डी राकसे बोलो कि मुँ आग ता देऊ शँई पर मुँ भी आज तेरे पावणँ आणोँ ।

खकचणूयँ आग भी आणी और टुण्डी राकसा सीधी घरा लँ आओ घर कँ पहुँचियो बूडदी ता लागी वँ हलुआ चाणदी और लँ छोटु और राकस बेसँ आपणी गाला लांके । टुण्डी राकसे बोलो कि जेती बूडदी हलुओ चाणा तेती म्हारे कथया देणी खकचणूयँ बोलो कि पहलँ मामा तु दे । टुण्डी राकस भी तँवे कथया देंदो लागी तीनी बोलो एको आ लँ बूडी, एकी आ लँ टांगड़ी, मुडदी बालो और एकी आ लँ खकचणू और एकी आ लँ हलुओ । जबँ टुण्डी राकस कथा देइयो मूकौ ता खकचणूयँ बोलो कि मामा तेबँ मेरी बारी आई कथा देणीयो । सो भी कथा देंदो लागी और बोलो कि

टांगड़ी पाकड़ा टांग का,
मुडदा शाकड़ा मुंडा का,
बाला पाकड़ा बाई का,
खकचणू ला फाट,
बूडदी करा प्रात ।

(मतलब टांगड़ी, मुडदी, बाली तेस चीओरँ घुरँ दो पाकड़ी लँ खकचणु तेस दे फाट लाओला और बूडदी प्रात कोरी ले) ।

टुण्डी राकसँ जो कथा सुणो और सौँ भरी डरी । तीनी बोला कि भाणजा मुँईदा भागणी दे । एवं मुँ केबीयँ भी नहीं आंदी । तँवे सो तीदा भागी तोनँ भी साभिये हलुओ मजा के खाओ । देखो भाइयो तीनी माठइँ जँ छोटए, खकचणूयँ राकस भी तीदा डौरे मारँ भगाऊयो । जो सब अकलीओ ही काम तो तँवे ही ता म्हारे बजुगँ बोला कि, “अकली कँ खाईया संसारी ऐती मतलब जोआ” कि अकली कँ ही सारँ काम होई सौका ।

शब्दार्थ

शब्द	अर्थ	शब्द	अर्थ
1. छोटु	लड़के	3. भाणना	बनाना
2. बोड़के-बोड़के	बड़े-बड़े	4. आगीया घँनो खूब	आग

भाग ३. :- कुलवी जनपद से सम्बन्धित लोक-कथाएं

क्रम संख्या	कहानी का नाम	संकलक
१.	श्रमोन्मा रवर्ग	ठाकुरदत्त शर्मा
२.	कूल बी बंटी	सुरेन्द्र
३.	बलाक जट	सुरेन्द्र
४.	नार नवार बारह ओम	सुरेन्द्र
५.	हूरंग नारायण	एम० आर० ठाकुर
६.	नेकली देवी	एम० आर० ठाकुर
७.	काग भाले राखमणी रा भौत	एम० आर० ठाकुर
८.	दादी हिडमा	एम० सी० शर्मा
९.	रूप-वसन	बिद्या शर्मा
१०.	शूरा रा देवी	बिद्या शर्मा
११.	रुम् रा कथा	बिद्या शर्मा
१२.	बाया कुआरी	नरेन्द्रकुमार
१३.	दिआरी ठाकुर	व्योमेशचन्द्र
१४.	जबोली जातर	व्योमेशचन्द्र

अनोखा स्वर्ग

एक किसान त तेऊये चार छोटअ तें। से बडे नालायक तें पर सभी होछह जूण छोट त स बड़ह समझदार त। तेऊओ नाम त पंकज। किसान तेऊये पंकज के बड़ह ही प्यार करा त जेवी केभी दूर देशा लें डेउआ त ते भी स किसान तेऊ पंकजा लें बीते खेलट और नअऊ-नअऊ कापडें भी आणा त। इना चिजा संगह स पंकज बड़ही खुश हआ त। तेऊ किसाने लाड़ी गई मरी। पर तेऊ किसाने तीना छोटअ खातरी दुजह विवाह नहीं किया। स किसान आपी सवे करा त। भाणने-वाणने ओरु वणा-वुटा हीं सवे काम आपी ही करा त। थोड़ी बहुत साहयता पंकज करा त। पर स पंकज त बेचारह छोटह ज तेऊअ के काम लेंओ त करी जूण कुछ तेऊका हुई सकहा त स तेऊ काम करि लेंआ त। पर तेऊ किसाने सें चन छोट जातीये निखट तें कोड़ीओ काम भी नई त तीनो। अणे कर स बेचारी बड़अ दुःखी रह त। एकी बेरके गला स किसान ढगअ वाणु लें घाह आणदह त डेऊअनह। पर जो भी सह घाह काटदह त लागह नह तेभी सह एक जानी का फिशलह और ऊंदी रुड़ह रुड़दी-रुड़दी स काफी हुंदी रुड़ह तेऊदी काफी चोट आई। तेऊअ ती दे आपणें प्राण जोटें। जेवी तेऊ छोटअ के तेऊअे मरने खबरा पूजी ता स पंकज जोरें-जोरें रोदह लागह। पर अब के लागह त हुई। जुण गल हुई गई सता हुई ही गई ती। पर तेऊ गये एक होर आपतियो पहाड़ चूटह। तेऊये चीये भाई तेऊका अलग हुअ। पर तेऊ पंकज हिम्मत न हारी। एऊ संसारा रचने आईं भगवाने आसरे स पंकज बेचारह अपनी कठिनाई संगह भूभदह रह लागी।

तेऊये पिता जीय जूण खेलट तेऊ लें बारह का तें आणें न तेऊ पंकज सें सबे इबटें किये। ता तेऊए कुछ होर समान भी खरीदह तबें तेऊअें एक दुकान पाई। थोड़ें घेड़ें भीतरी ते अप काफी पैसे हेरे कमाऊई। अणे करा तेऊ सोचह की एकी एकी बूदा करं घड़ह भरिया। थोड़ें ही घेड़ें भीतरी तेऊअें काफी पैसे कमाऊअ। तबें तेऊ पंकज काफी आच्छी दुकान पाई। तेंआ दुकाने के अब स काफी आच्छह धना आइह हुअह। तेइऐे चिये भाई तेऊ का बड़े जलद लागह। तीन तेऊ मारणे री स्कीम बणाई। तीन भी आइ लें बोलह कि भाई पंकज तू अणे कर। हमां तू आपू आगे नीकर डा। तेऊ पंकजा तीना गये काफी देया आई। तेऊ भी टालें सें आपू आगे नीकर डाई। पर सें चीअे आई सारी सारी धंडी कुछ भी काम नें करा तें। तेऊ पंकजे तीना

ले बोलह किबिना परिश्रमा करिया एऊसंसारा किछ भी नही मिलदा । पशु भी कुछ काम करा । तुम्हें ता आइमी चार हाथ परा आल । पर तेइये इना गल तीना गाये कोई असर न हुआह । तीन श्रव तेऊ मारण स्कीम उणाई तीन ची भाई य स पंकज एकी बोरी दी बन्द कीओ और एकी कुएं दी राचो राच चलह फंकी । पर स कुअह काफी डूगह नेती त । स पंकज तेता के भगवाने कृपा के कंणा करी बची गेओ । जैसे स पंकज घरा ले वापिस आओ ता चीओ भाई बड़े हेरान हुआह तीन तेऊ का पूछह भाई तू कण करे वचह । हाम ता तू कुअ दी हेरह त फंकी । तऊ पंकज श्रव जाणा कि नीचा भी ऊचा नीचो ज व्यवहार करन तेऊ तीना का बदलह लेणे ती तीना ले बोलह भाईओ जेऊ कुअ दी तुम्हें म फंकह त स ता स्वर्गो रास्तहआ । तेओ बीतो म माता जी के पिता जी के मंडी माडीआ आओ । स पंकज चीओ भाई मुख ता आसा ही न ! तीन ची भाई ये बोलह हामा भी टाल त बोरी भीतरी भरी भारीआ तऊ कुएं दी । हमें भी मां बापा का मंडी माडीईया आहमें । पंकज सोचह मुख तो मुखो व्यवहार ही करन आछो । तऊ पंकज भी स चीये भाई वागी दी बन्द कीओ और एकी दूज डूग कुएं दी टाल फंकी । जेऊ कुअ का स बची ही न सक द त । तऊ पंकज तीना ची भाई के अनोखह स्वर्ग दसह । तेओ स आपण घर आइया आरामा के रहव लागह । तेओ पञ्चाताप ता किओ कि स आपण भाई यल मारी पर ज स तेओ जानी लदे ते तुलह ने ता स कण के चुपी रही सकद त । ठीक ही आ अगल कि मुखो संगह मुखो ज व्यवहार ही करण जा ।

शब्दार्थ

शब्द	अर्थ	शब्द	अर्थ
१. छोद	छोड़के	८. कीओ	किया
२. खलट	खिलौने	९. राचो राच	रातो रात
३. बाछु	बछड़े	१०. आहमें	हमें
४. फिसलह	फिसला	११. उंउआ	गया
५. प्राण दोटे	प्राण त्यागे	१२. रुइदी रुइदी	फिसलते फिसलते
६. अण करी	ऐसा करने में	१३. डूग	गहर
७. घेरे	झिंझ		

फूलदी बेटी

एक ब्रह्मण तो। तेऊ ऐ दुई छोटी ती। तेऊऐ ब्रह्मणी गई ती मोरी। सो ब्रह्मण दोनो सुतीआ उजिया तो और जंगला का फूल पाची उचिया राजे दरबारा ले निया तो। ऐये दी गई तेऊओ गुजारी चाला तो। तेऊए दुऐ छोटी बोड़ी भक्तन ती। से दोती राची उजिया ती। नहाइया धोइया ती तेथा बाद साफ-सफाई कोरिया 'बि माते' पुजा कोरा ती। एक दिन तिने आपणे बापु ले बोलो कि हे बापु तौ फूला पाची चुंकदे दूर जंगला ले गोआ नाणों। एवे हामें दुए बेणे घोरा हो दी फूल में। तू फूल पाची आच्छी के उचे।

तेथा बाद दुए बेणे दोती नहावी दोहवीया आपणे नाक मुंह सिभा ती और फूल-पाची बोणा ती। ब्रह्मणे फूल पाची आच्छी के उचे और राजये दरबारा ले नाओ। राजो तिना तोखे फूला हेरिया हेरान रोही गो तेऊए ब्रह्मणा का पुछो कि हे ब्रह्मणा तरे जे गेने नांख २ फूल आज किदा का आणे। पेले ता ब्रह्मण डोरे मारे बोली नीसो। बाद राजये डरावणे-धमकावणे गई तेऊऐ सच्चाई बोली दिनी। राजे तऊ ब्रह्मणा ले बोलो कि हे ब्रह्मण मुं एवे तरे आगा ल पाउणें बाणिया आणो।

ब्रह्मण बेचारो दुःखी होइया घोर वापिस आओ दुऐ छोटी ए आपणे बापु का दुःखी होणयो कारण पुछो। ब्रह्मणे बोलो कि जो सारी थारी खोटी आ न मुं थारें फूल-पाछी नीदो न जो सयापो आज पोडवो। एवे किदा का मेरे राजे और तेऊए नौकर चाकरा ले राइन पाणी देई लाओ। राजे पोरणी पाउणे बाणो आ महारे घोरे आणों। दुए छोटी हासदी लागी और बोलो हे बापू तू दुःखी किले होआ। आण दे तऊ राजे। हामे दुए बेणे तऊ आपी सम्भाड़ो।

राजो भी आओ। दुए बेणें तेऊओ आदर मान कियो। गोरख डिबिया दो कई २ प्रकारे पवनान वणाऊए। लोग जुण राजे सी आए ने ते तेऊ नाजा खाईया हेरान रोही गई। तिने आज्ञा तई एणों नाज न खाओ तो। राजो नाज नीसो खाई। तेऊए पेले ब्रह्मण का बचन मांगो ब्रह्मणे भी जो सोचीया की राजये मुं गरीबा का के लाओ मांगी वचन देई दिनों। नाजा खाईया राजये ब्रह्मणा ले बचन सम्भाणना ले बोलो। ब्रह्मणे भी बोली दां महाराजा तोया मूं गरीबा का के चंई। राजे ब्रह्मण का दुए छोटी मांगी। ब्रह्मण बेचारां हेरदो ही रोही गो। एवे न ता सो वचन जोड़ी सोका तो न दो छोटीयां बयोग सोही सोका तो। आखीर प्राण जाये पोर वचन न जाए। ब्रह्मण दुए छोटी रोदा २ राजये हवाले कि और

आखी दी आशरूप राजे के बोलों हे राजा ! मंह तौने आपण फल साही दुई छोटो दें दो लागो नो । ऐरे वे तू जाणें अगर इना ले कुछ हूओ ना तोने ब्रह्म हत्या लागणी । राजये तेऊ ले तिनो आच्छों के डाणयो वचन दिनों ।

महल दी राजये सात राणी ती । जुणा तिनो भाई सोओ का लौउड़ी ती सो आच्छे स्वभावे ती । से दुए वेणे तिदी एक लेदे कमरे दी रोदी लागी । तिदी भी से नित नियमा के नहाईया ती और बारी २ के फलिया ती पहली बहण फलिया ती ता दूजी तेआ उची ती । छो राणीया तिनो का पये इर्षा होदी लागी । से तीना दुई बेणी तंग कोरा ती । एक घ्याड़े राजो जंगला ले शिकारा खेलदी नाओ । दुई बेणें तेऊके एक फलो हार दिनों और बोलें हे महाराज ! जेवो ओ फलो हार मुरभांदो लागे तेवो तू जाणे हमरा गाई कोई बिपदा आई गेई । राजा भी तेऊ हारा गोड़े दो पाईया शिकारा खेलदी नाओ । घोरा के तिनो साता राणीण से दुए वेणे तंग करणो शुरु कि । तिन बोलों की तामे दुए वेणे महारे सामणें भी फलिया । दुई वेणे बोलो कि हमें एक फलयो और दूजी उजा । किले कि तोमा कोरणी हमें चोड़ मरोड़ । से राणी निसो मानी । आखीर तिनो दुई बेणे आपण नाक मुह सिऊए और फूलवी । तिनो छः राणीण से चोड़ मरोड़ कि और फूल पाची डांडी बंगरहा ओरी पोरी फकी दिने । उधर जेवो राजये नोजर फूल हारा गाई पोड़ी तेऊ हेरो सो मुरभांदा लागो नाओ सो छेके २ महला ले वापिस आओ सो दुई बंणा चोड़ मरोड़ी नी हेरिया दुःखी होई गो । तेऊ जाणो एणके ता मुं गाई ब्रह्म हत्या लागणी । तेऊ ब्रह्मणा आगा ले आदमी छाडे । ब्रह्मण बेचारी आया दी आपण छोटिये बुरे हाल हेरिया रोंदो लगे ।

तेऊ से सारे फूल पाची और डांडी बंगरहा ओरी पोर्गिया कोठे किये और तिनो गाई । अमृत छिडकाव कियो दूवे छोटो जीऊंदी हुई । राजये आपणे छ राणी दूर जंगला दी जितदी गाडे दी ताड़ी दिनी । आपु तिनो सी मोजे के राज कोरदी लागो ।

शब्दार्थ

शब्द	अर्थ	शब्द	अर्थ
1. सुनीआ	सोकर कर	6. सोही	महला
2. राची	रात को	7. लेवे	आपण
3. नहावी दोहवाया	नहा धो कर	8. नाओ	गया
4. पाउण	महमान	9. छेके-छेके	जल्दी जल्दी
5. पोरशी	परसो	10. ओरी पोर्गिया	द्वार उधर

चलाक जट

एकी शहरे साहुकार ते बोड़े बेईमान । से लुटा ते लोगा बुरे मुले । तेऊ शहरा दी रोहा तो एक जट और एक जटनी । जटे बाबा जोआ ते देण साहुकारा ले कुछ पैसे । सो सारी उमर तिना पैसे दे दो रो, मगर से निते पुरे हुई । सो साहुकार तेऊ ठोगा तो । जेवीं तेऊ जटे बाबे मोत हुई जटे तेऊ सहकारा का बदलो लेणो चाहो ।

एकी ध्याड़े जट जटणी तोंगा दी ते बेशेने जटे दूरा का आंदो साहुकार हेरो । तेऊए दुई शयारी डाकी और जटणी ले बोलो जेवी साहुकार मेरे बारे दी पुछे तू बोले सो खेचा लेआ नाओ नो । अगर सो मु घांरे आणा ले बोले तू ऐ शयारी एणो बोलो आ छाड़े कि "न शयारी जटा बेददी" जेवी साहुकार जटे घोरा दी आओ तेऊए जोटे बारे दी पुछो । जटणीए भी बोलो दीनो की सो खेचा ले आ नाओ नो । जेवी साहुकार तेऊ घोरा बेदणा ले बोला जटणे सो शयारी एण एणो बोलोआ कि "न शयारीए जटा बेददी" छाडी दिनी जट जुण तसोए तो चोरुओ नो तं आ शयारी हेरोआ घारो के आओ । तेऊए साहुकारा ले नमस्ते की । साहुकारे हेरो की जटे हाथ दी ता तेणों चेलु आ जेणो जटणीए छांडा तो । साहुकारे जाटो का तेऊ चेलुए बारे दी पुछो । जटे बोलो की हमें एक एकी दूजे बेदणा ले भेजी । साहुकारा दी लालच आई गो । तेऊए जटा का सो शयारी मांगी और बोलो मु तेरे सारे पैसे माफ करू तू मुले एक भेलु दे । पहले आडी ले जट ना कोरदो रो । तेखो शयारी तेऊए साहुकारा के देई दिनी । साहुकारे घोरा के नाईया सोभी घोरा वाड़ ले बोलो के तोमें एबे कामा कोरदे खेचा ले न जेवी रोटी सिटे मु तोभा आपी खादे ने दू । जेवी रोटी सिटा साहुकारे सो शयारी एणों बोली आ कि "न शयारी मेरे घोरा वाड़ खांदे बेद" छाडी दिनी । शयारी आपणे उडी गई । से तेऊए घोरा बाड़े सारे ध्याड़ भुले मोरे । साहुकारा जटे चलाकी गई गुस्सा आओ । सो तेऊए घांरे नाओ । जटे भी सो आंदा हेरो हेरो । जटे आपणे सारे कमरे दी लाल रांग फोचो और आपणी छेउड़ी छंडा गई सताबी डाई । आपु एकशे बीन बजाऊंदो लागो । जेवी साहुकार तेऊए घोरा के पोचो सो कमरे दी खुन हेरोआ डोरी गो । तेऊए जटा का एथो कारण पुछो । जटे बां तो साहुकार जो रोवी मु गुस्सा आ तेवां मु आपणी छेउड़ी काटी लऊं । तेथा बाद मु एक बीना बजाऊ और मेरी छेउड़ी शीउदी हुई जा । साहुकारे हेरो जटनी छंडा गईया खोड़ी उजवी । साहुकार पाछलो गोला भुली गो । तेऊए जटा का बीन मांगी । जट न करदो रो । मगर आखीर तेऊ से बीन देई दिती ।

साहुकारा कई ध्याड़े ओरु आपणी छेउड़ी का नाराजलो । तेऊए जाणो जो आच्छो ढंग आ । तेऊए घोरो के नाईया आपणी छेउड़ी सी भगडो कियो और सो काटी दिनी । तेथा बाद सो सारी ध्याड़े सारी राची बीन बजाऊंदो लागी रो पर सो काटी नी छेउड़ी केणके लागी ती जिऊंदी हुई । आखीर रोंदो कलांदो साहुकार फिर जटा आगा ले नाओ । जटे फाट फट सारे कमरे दी दुई बीन

मोरेने मुँहो फँकी डिए। आपु एक संदुका दी चाकु परिया बेशी रो। शेवी साहुकार जटे कमरे दी पोंचो सो बासा के नाक बन्द कोरदो लागो। तेऊए जटणी का पुछो की जो एणी गंदी वास किदा का लागी नी आंदी। जटणे सो संदूक खोजी बिउदी जट चाकु पाइया तो बेशोनो। तेआ संदूका दी एक छेद तो। साहुकार त नाका लाईया शिगदो लागो जटे तेऊआ नाक काटी दिनों। साहुकार आपण नाका ढाकीया बाहरे भागो। तथा बाद सो जटा आगा ले पैसे मांगदो न आओ। चालाक जट और जटनी मुखा के जिऊवे लागे।

शब्दार्थ

शब्द	अर्थ	शब्द	अर्थ
1. ध्याड	दिन	6. मुँहो	घेरे
2. खेच	खेत	7. किदा का	कहाँ से
3. ड्यारी	चिड़िया	8. खोजी	बनाया
4. फोचो	लगाया	9. ढाकीया	पकड़ कर
5. राचो	रात को		

चार तवार वारह मौस

एक ब्रह्मण तो। एक ती तेऊए बेटी। तेऊए ब्रह्मणी गई ती मोरी। तेऊए बेटी बोड़ी भवतन ती। सो दांती उजयोया चुल्हो चौको देआ ती नहाइया घोईया ती और तेखो 'वि माते' पुजा कोरानो। एक दिन ते आपणे बापु ले बोलो कि बापु तू ब्याह कोर। हामें दुई का न घोर चानणों। तेऊए सो बोड़ी समझावी के बेटी मौसी होआ बुरी। पर सो निसी मःनी। आखीरकार ब्रह्मणे भी दुजो ब्याह कियो। पहले ता रोही नो मौसी आच्छी के, पर कुछ महिने बाद गई सो जोड़दी लागी। सो ब्रह्मण तंग करदी लागी कि हे ब्रह्मण जो तेरी बेटी बोड़ी नखटूआ जो सिर्फ पूजा पाठ करनो ही जाणा। न ता जो खेचा लेना, न जो धोरा के काम कोरा। तू ऐ घोरा का पोर काड। ब्रह्मणे मतीदो बी गो तो ऐवे फर्क आई। सो गो तो नोई छेउड़ीए बोषा दी हुई। ब्रह्मणे एकी ध्याडो सी आपणे बेटी छोड़ी आपणे आने जंगला ले नी। दोपहरे से एक बूटा पाड बाप बेटी आरामा कोरदे सुते। छोटी बेचारी भोड़ी ती। ते आपणी पूजटी ब्रह्मण चड़ी सी बानी डाई। जेबी ब्रह्मणे हेरो की छोटी ऐबे नीजे सुती गई, सो छोड़े उजदो लागो। तेऊए हेरो की चड़ी ता बेटीए आपणी पूजटी सी आ डाई नी बानी। ब्रह्मणे सोचो अगर ता

काटू मूं बेटीए पुंजटी ते ता खोणी ऐ शोभा । अगर काटू मूं आपणी चूड़ी ते होणा मेरो धर्म भ्रष्ट । धर्म ता ब्रह्मणो पहले ही भ्रष्ट हुई गो तो । सो उसने आपणी चूड़ी काटी दीनी और आपणी बेटी घोर जंगला दी काली छाड़ीया घोर झाईगो उधर जंबी छोटीए नौज खुली सो घोर जंगला दी अकेली ओर पोर भोटकदी गई । चारी तरफ बराग बगरह भाषदे ते जागेने । सो बेचारी रोंदी कलांदा होउदी गई । आगे एकी तालाब किनारे तें एक बाहटी हेरी । ते जाणीं हो न हां एमो कोई रोहा । सो ते बाहरी ओर पुंजड़ डाको और चालदा २ एकी कुटिया आगे पहुंची । ते कुटिया दी भद्र शिला ती लागी नी । छोटीए मोना दी विचार कियो कि अगर ता मूं मोचे दिने ते तो गोणी जो भद्र शिला खुनी अगर मूं बोया बाड़ी ते न खुनणी । भद्र शिला भी खुनी गई । छोटीए भी माफ सफाई कि और धूप बनी जलादी । ते कुटिया ऋषि ती तंग किनारे सतना कोरदो नाओ नी । जेवो तेउए आपणी कुटिया का धूप वतीए सुगन्ध गिगी सा हेरान रोहीगो । तेउए मोना दी विचार कियो कि अगर ता होए मेरी उपरे कोई ता मेरी वेण होए । अगर मुंका बोड़ी होये तो मेरी मां होये । अगर मुंका छोटी होये तो मेरी बेटी होये । बेटी मोचणे गई भद्र शिला खुनी गई ।

भिदे नाइया छोटीए ऋषि ले प्रणाम कियो और आपणी सारी कथा सुनावी । ऋषिए तए परिक्षा लेणी चाही । तेऊए सो आपणे जानु गई बगेई और मोना दी जो बचार कोरिया कि अगर ता होए जो ब्रह्मण कुले ते ता निखणो मेरी काटी नी गुठी का दुक, जे होए जो होरी कुले ते निखणो खन, आपणी कानी गुठी काटी दिनी । तथा का दुध निखां । तथा बाद सों छोटी ऋषिए आगे रोहदा लागी । एक दिन ते कुटिया आगे राजये घोड़ी आई । सो तिदी छोटीए खाई नी साग भाजी खांदी लागी छोटीए सो आपणे हाथा के छंडी । जी ते ओ हाथ लागो ती मुणेशो हाथ छापवी गो । राजये जेवी आपणी घोड़ी दी मुनयो हाथे छाप हेरी सो तेऊ हाथे नापे छोटी हेरदी चारी तरफ लागो । आखीर सों ऋषिए कुटिया दी पहुंची । ती ऋषिए राजयो आदर सत्कार कियो और छोटीए गोरख डिबिया दी बाणनो नाज राजे सो आए ने दरबारी के खयाऊआ । राजो नाज नी तो खाई । तेऊए ऋषि का वचन मांगो । ऋषिए भी वचन देई दिनी । नाजा खाईया ऋषि ले राजये बचन सम्भाणना ले बोलो । ऋषिए भी राजे का इच्छा पुछा । राजये बोलो कि हे ऋषि मूं जो छोटी चेई । ऋषि बोलो राजा जो न सोका हुई । जो ब्रह्मण कोन्या और तू आ राजपुत । हमारो शास्त्र बोलो की ब्रह्मणो ब्रह्मणा सो और राजपुतो राजपुता सो व्याह्र होणो चेई । मगर राजो न मानो । आखीर बाल हठ और राज होह होआ एक सो ऋषिए छोटी राजे सो सबाई दिनी ।

महला दी नाईया राजये होर राणी तेआ तंग कोरदो लागी । सो ती नाईया भी अलग जे कमरे दी आपणी पुजा पाठ कोरा ती । तिना राणीए सो खुब तंग की और बोलो कि हामा के तू आपणी पेऊको खोज । सो बिचारी बोड़ी दुःखी

हुई। एक दिन तंग आईया दराया वी छलांगा देदी नाई। जेवी मो छलांगा देदी लागी, चार तवार बारह ओंसे ति खांडे हुईंगे। तिन छोटी का आत्महत्या कोरनेयो कारण पुछो : छाटीए बोली कि राणी मुं पेऊके खोजणा ले तंग करदी आ लागी नी। एंबे मुं किदा के तिन के अरणा पेऊकां खोजु। चार तवार बारह ओंसे बोला कि तू फिक न कोरे। काले तू तिन दूर जंगला दी आबुसी निऐ। तो हामें तेरे पेऊके बाड़े बाणमे। दुजे ध्याड़े छोटीये भी तेणा कियो। जेवी राजो और तेऊए राणी नौकर चाकर समेत जंगला का टोपे तिन गावी और मेंहीर बड़े बड़े थाय हेरे। छाटीए बोला कि मेरे मां बाये आ। एक बड़ी सुन्दर शहर आआ। तो बाड़ा काठा ती। छाटीए से तिन सांघी मां आच्छी कोठी दी नियं। ति चार तवार और बारह ओंसी छोटीए मा बाव ते बाण ने। तिन राजयो बोड़ी आदरमान कोओ। राजये होए राणी तेऊ शहरे ठाट बाट होरया हेरान रोही गई। चार तवार बारह ओंसीए छाटी। न थोली की जो माया रुपी शहर व गावीने, मेंई सिर्फे टाई ध्याड़े तेइआ। तथा बाद तू इना वापिस निऐ। टाई ध्याड़े बाद छोटीए राजे ले वापिस नाणा ले बोली। राजयो शा तिता का नाणा ले न बोला ता। मगर तेऊ नाणो गो। रास्ते दी तेऊए जाणी बुझीया ओजो वापिस नाणा ले आपणी एक पोलड़ी फेंकी दिनी। जेवी तेऊए पाछा ले मुड़ीया हेरी तं द्वारा जंगल ही जंगल ती। तेखो छोटीए राजे आगे आपणी सारी कथा गुणावी और बोली कि जो सारो पेऊकयो खेद चार तवार बारह ओंसीए कियो।

राजये आपणी बाकी राणी ले खूब सजा दिनी और आपु ते छोटी सां रोदा लागी।

शब्दार्थ

शब्द	अर्थ	शब्द	अर्थ
1. पोह	परे	6. भोटकदी	भटकती
2. काड	निकाल	7. भाषदे	बोल रहे
3. नीजें	गहरी नींद	8. कानो	छोटी
4. उजदी	उठने	9. पेऊका	माना पिता का घर
5. पूजटी	पूछ		

हुरंगू नारायण

एक जमाना एण्डा थी जौधी म्हारे श्रीज काला रे देऊ बी आसा सेहीं साधारण माणू थी। पर इन्हां आगे बल थी, शक्ति थी, गुण थी ता तप थी। इन्हा तप, बल, गुणा री ताकतिये ए होरी लोका-न ज्यादा बड़े घाइया थी ता होरा इन्हा-बे बड़ा मना बी थी जेण्डा आसे श्रीज काल राजा, महाराजा, ता नेता लीडरा-बे मना सो। तेबे-ए इन्हा-बे देऊ बी बोला थी, यानी एण्डा मनुख जो होरी-बे रक्षा ता अन्न-घन्ना आदि देखा थी सो देणु आला देऊ थी। इन्हा रा आप-आपणा इलाका होआ थी ता श्रीज काला रे राजा से हों आपणा इलाका बढ़ाण री तेईए होरी देऊआ री रियास्ता पांघे लड़ाई केरा थी।

एण्डा-ए भूब जौता री एकी धीरे एकी देऊआ रा इलाका थी ता दूजो धीरे दूजे देऊआ रा। माण्डो धीरले देऊआ रा ना हुरंगू नारायण थी ता कुल्लू धीरले बोला ग्रामंग नारायण रा राज थी। हुरंगू देऊआ रा असल भण्डार शिलबधानी रे नेड़े हुरंगू ग्रामंग थी ता ग्रामंग देऊ जौता रे नेड़ जंह दरयाणी जगह रोहा थी। ए दूहे देऊ आपू न लीडे रोहा थी। केबकी एक माण्डो रे देऊआ रे किछ इलाका पांघे कबजा केरा थी, केवकी माण्डो आला देऊ ग्रामंग देऊआ रे ग्रामंग कबजा केरा थी। पर ते एकी-दूजे रे इलाका पांघे ज्यादा ढेर नी थी रोही सकदे। एक बारी जौत भूब पांघे इन्हा री बड़ी लड़ाई हुई ता हुरंगू देऊए ग्रामंग देऊआ रे एण्डा मुका मारू जे सो सदा-बे ए उठणा हुआ, ता हाजी ताई बी जौधी ग्रामंग देऊ निकलणा होला ता तेईरे कोना आगे भाणा वचाआ सो तेबे सो उठा सा। पर ग्रामंग देऊए बी तौधी हुरंगू देऊआ री एण्डो मरम्मत केरो जे हुरंगू बे दबारा लड़ाई करने री हिमत नी पोई।

ग्रामंग नारायणा संगे लड़ाई केरना रा ता हुरंगू देऊआ-बे भीरी हीसला नी पोऊ, पर कुल्लू धीरा बे एणे री कोशिश तेईए छोड़ी नी ता सो भीरी बी लड़ाई रा नाऊ ता नी थी लेदा पर कुल्लू-बे एणे री स्कीमा सोठदा रोह।

देऊ आखर देऊ होआ सा। तिन्हा-न किछ शक्ति एण्डो होआ सा जो होरी-न नी हुंदो। इन्हां शक्ति-बे बोला सी आध्यात्मिक शक्ति। हुरंगू देऊ ता ग्रामंग देऊ मील-घराटी केल्हा नी थी केरबे ते आध्यात्मिक शक्ति रा बी प्रदर्शन कराआ थी। असला-न ए शक्ति थी जुणी रा हुरंगू देऊए सहारा लेऊ।

तौवी काल मोटर-गाड़ी ता चलदी नी थी। कुल्लु रे लोक माण्डो जाइया जूमा री खानी-न लूण आणा थी। ए लूण ते पीठी पांघे चौकिया आणा थी।

एकी मेरे जियाणी, भमतीर ता समिरगा रे लोका गुमा लूणा आणदे थी न्हीठदे। कीबे जे गुमा दूर थी, दिहाड़ ज़्यादा लाग़ा थी, लोका प्रां-रे-प्रां कट्ट होइया लूणा-बे जाग्रा केरा थी। ज़ियाणी, भमतीर ता समिरगा रे ए लोका जेबे किरडू-न लूण पाइया लाग़ेदे थी एंदे, तेबे तिन्हें आप-पोपणी केरी— जो तकड़ा थी सो आगे-आगे सीकू, जो थोकदे लाग़े ते ज़रा पीछे रोहे। भूब ज़ांता री चढ़ाई ज़ूणीए चढ़ी री तेए जाणा सी। मोथी भाऊशी गोहर। जोते रे हेठा-न आउं भालना ता टोपी श्रीला सा। ऐसा भाऊशी बौना-न जेबे ते लोका लूणा रा भरोट पाइया आगे-पीछे आप-आपणे थोमे लाग़ेदे थी जांदे, तेबे सेभी-न पीछे बचारा एक लंगड़ा माण्हू बरेस्तू थी मजे-२ चोलड़ा। बाकी सेभ माण्हू खासी आगे निकले हुंदे थी। चढ़ाई-न बरेस्तू रा शाह फ़लारा थी, पसीना-री डक़हनी थी लाग़ेदो छुटदो। तांबे तेई रस्ते रे किनारे एक खापरा जेहां बेठादा हेर। खापरा बचारा शुकादा जेहां बशां केरदा बेठादा थी। ता एण्डा लाग़ा थी जे बमार सा ता थोकिया चूर हुआ हुंदा सा। तेई खापरे बेरस्तू-बे बोलू, “भाई छोक़रुआ ! हाऊं चोलूदा कुलूबे, किछ बमार सा, किछ हाऊं थोक़, चढ़ाई बी बख़ सीधी। यारा गाशी मूं चला ता आपणे एई किरडू-न, जात जे दे मूबे टपाइया।”

बरेस्तू बोलू “यारा बाबा, भाल हाऊं सा लंगड़ा, गरका मू आगे लूणा रा भरोट। तीबे किहां चौकनू हाऊं। सगी न्हीठे भाल मेरे बड़ी आगे। मेरे ता एंडा-ए नी तिन्हां ठिमकिणा। ती किहां नेनू हाऊं।”

खापरे भी बोलू “देख यारा छोक़रा जोकड़ू जेहा ता हाऊं सा। किरडू रे चाठू-न ए एणा मूं। परयाला-न तू बिठही लूण पाई।” पर बरेस्तू-बे न्हीसी हिमत पोई। सो बचारा सच्चा बी थी। बचाग लंगड़ा माण्हू, एण्डा-ए सेभी-न पीछुआ हुंदा थी ता खापरा-बे किहां चौकदा। पर खापरे श्रीरे जे सो मनाऊए। मनाऊ। तेईए बोलू

“देख भाई छोक़रुआ ! तू घबराइंदा मत। हाऊं जाणा सा तेरी मुश्कला बे खरी तरह। तू मूबे किरडू-न थाले पा यारा, तीबे नी किछ आऊ। हाऊं-नी गरका ओथो। नी तीबे गरका लाग़णा। पर एक शर्त तीबे होर केरनी पोणा।”

“सो की” ? बरेस्तूए पूछू—

“सो ए जे रस्ता-न हेरी तू बशां देदा जां ताई जे तू घौरा नी पुहचला।”

“एण्डा केण्डा होणा”, बरेस्तूए बोलू “मेरे एण्डा-ए एजिरा शाह शुकी। श्रीला-न तीबे ता मूबे बशां देणा पोआ सा। ता तू बोला सा बशां बी नी देणा। नी-नी यारा गाशी मेरे नी तू चौकदा भाई, तू किछ केर। दया ता ना मूं नी पांधे सा पर की केरनू। तू आपे बूझ।”

“तीबे नी आऊ किछ यारा,” खापरे बोलू “तू जुआन। केर हिम्मत। बशाऊं केल्हा हेरी तू केरदा।”

आखर बरेस्तू तेईए मनाऊ-ए। किछ तेई-बे हेरानी बी हुई, ता बूझू 'हेरनू भोला, गप की सा?' तेईए किरडू रा लूण छनेरू। खापरा थाले पाउ ऊभे-न लूणा री कोणी पाई। ता किरडू लेऊ—

‘एबे डे यारो ! भरोटू ता जोंडा फूला से हीं हौलका’ बरेस्तू हेरान हुआ। किरडा गरका होणा थी उलटा हौलका पे हुआ। हौलका बी एण्डा जो तेईए बूझू में पीठी पांधे बोझा पाहुदा-ए नी। तेइरी एक-एक गोई दस-दस गोई ढोई लोमी हुई। बशां री ता गल-ए नी सो जेंडा बुझणा उड़दा लागा। तेईए आपणे साथी एक-एक केरिया पछेरे ता जांता पांधे पुहचना बे ता सेभी-न आगे हुआ।

‘खौड़िया डे यारा बरेस्तूआ’ तेईरे संगीए बोलू। ‘तूसे केतरे एक खौड़ू ए थी डे मूबे। एजा-ना एबे मजे बरेस्तू लशा-लश तिन्हा-न आगे निकता ता घौरा घौरा-बे दबो-दब लागा होडदा। जेबे सो ग्रां रे नेडे जहे पहुता, आपणे घौरा ऊझ जें, तां तेईए मना-न सोडू ‘भला सो खापरा न गल केरदा न किछ। पता नी सो सा भी किरडू-न की नी। बोला थी बशां हेरी केरदा, ता में बशां बी नीं केरू’। एबे घौरा आगे ता हाऊं पुहता भालनू भोला तेई खापरा-बे, बशां बी देनू’। एतरा सोठदिया ता तेईए एकी टोल्ही पांधे किरडू डाहुए थी ता बस ! किरडू उठला गये। सी तीखे जामू जंडा। बरेस्तू गुन हुआ ता किरडू-न हेरू ता खापरा रा शकल हार। तेईए किरडू-न निकलदे बोलू—

“हाऊं सा हरंगू देऊ। मूं एणा थी तेरे घौरा-बे। पर ते आपणा बचन नी डाहू, ता बीता-ए बशां घीना। एबे मूं श्रीखे रोहणा। तेबे बी कोई हजं नी। तें हाऊं श्रीखे ताई आणू तेरा घौर हाऊं फलदा-फूलदा केरनू”।

बस देऊआ रा एक थी बरेस्तू रा घौरा ता धारनी लागी-ए लागी, आरे-पोरे ग्रां-इलाका-न बी खोल-फसल, अन्न-धन, सेर-टोल्हा खूब बोदू। लोके तोखे देऊआ रा डंहरा बणाऊ। रोथ बी बणाऊ ता तेईरी पूजा केरनी शुरू केरी।

एण्डी तरह हरंगू देऊ ग्रामंग देऊआ रे इलाका-न बी आगे निकता, ता एण्डी जगह निकता जीखे कोई होर देऊ नी थी श्रीथी। बल्कि एसा जगह रे लोका-बे राखस-दूत सताआ केरा थी। हरंगूए एक-एक केरिया ते सेभ राखस दूत शटे मारिया, ता तिन्हा रा नाश केरिया लोका-बे शान्ति ता धोनी-ए धोनी साथ सारा इलाका मालामाल केरू।

तेबे हरंगू देऊए लोगा ग्रां धीरे-बे ध्यान केरू, ता तिसा घौरा-बे बधणे री स्कीम केरी। पर तोखे भागा-सिद्ध देवी रा पोहरा थी। देवीए शतं डाही जें ‘एज जुए खेलणा। जे तें जीतू ता मूं आपणा इलाका छोड़ना। जें तें हारू ता भीरी हेरी इसे धीरे भालदा’। हरंगू देऊए शतं मोनी। पर जां जुए खेलदे लागे ता भागा-सिद्ध गों रे गोड़े रा पासा खोजू। बस एई हेरदेया हरंगू तोखा न मेभी ता टंडारी पुहता। जीखे तेईदें जागा मिली। टंडारी, गदियाड़ा रे लोका

रे कष्ट बी तीखे एजिया तेईए दूर करे । ता लोके एक डहरा हरंगू देख्या बे
टंडारी बी बणाऊ, ता तेईरी दूही जगह पूजा हुंदी लागी । ता हाजी बी
हरंगू नारायण केबकी जियाणी होया सा ता केबकी टंडारी । दूही जगह तेईरे
डहरे सी ।

शब्दार्थ

शब्द	अर्थ	शब्द	अर्थ
1. होरी	अन्य	16. भाउशी	तोषी चढ़ाई
2. घाइया	दर्शना	17. घोना सा	गिरता है
3. मना	मानने	18. भरोदा	बोझा
4. तेईए	जमाने	19. होनका	हलका
5. जोन	दुर्गम पहाड़	20. शाह फनीरा	साम चढ़ा हुआ
6. धीरे	की ओर	21. गरका	भारी
7. लोइवे	लड़ने	22. डरहनी	घार
8. पांचे	पर	23. खापरा	बूढ़ा
9. टाऊणा	बहरा	24. बशा	प्राराम
10. मोठदा	सावता	25. तोब	तुम्हे
11. तोधी काल	उन दिनों	26. ठिमकणा	कंच करना (पकड़ना)
12. चौकिया	उठा कर		या उनके पास पहुँचना
13. किरडू	किलटा	27. लशा-लश	जल्दी-जल्दी
14. सोकु	खला	28. तोमी	लम्बी
15. थोकवे	थकने		



नेउली देवी

बड़ी पराणी गल सा, कुल्लू रे राखे री एक राणी थी । सो राणी बड़ी
भगतण थी । दोथी, सोझा, रात, दिहाडी भगवती री पूजा केरा थी । जां ताई
तेसे पूजा नी केरी तां ताई मुँहा-न पाणी रा चूल् बी नी थी पांदी । दोथी उठिया
सेभी-न पहले निहाउइया, धोउइया पूजा-पाठ केरा थी, तेवे जाइया घारा रा होर
कोम केरा थी । राजा रे बेड़ा-न कौसी गला री कमी नी थी श्रीथी । घन-दोलत,
नोकर-चाकर, जेउर-गेहणा, टोलहा-नोपा, सेम किछु थी । भला राजा रे घोरान-
घाटा बी कीभी रा होई सका सा । नोकर-चाकर होवे होइया बी राजा री सेवा

सो आपू केरा थी। देवी री पूजा ता आपणे पति राजा री सेवा ते सारे बूई बड़े कोम थी, पर होंरो कोमा धूता-बे वो बुरा नी थी बुझदी।

राज महला रे सेभ मुख होंदे होइया बी तेसारे मना-बे शान्ति न थी औथी। एतरी पूजा-पाठ करिया-बी तेसा री गोद खाली थी। 'पता नी मेरी पूजा-न की कमी रोही होती जो मेरे कोई शोहरू शौरनू नी हूंदे।' राणी हर बेले एण्डा सोचदी रोहा थी, ता हेरान थी जो एई राज चलाणू आना तेसा रे नसीबान-न कोई नी श्रीथी। भगवान् रा ग्याय बी आपणा होश्रा सा। तेईरी कचहरी रा फंसला आपणा सा। पूजा-पाठ केरदे-केरदे राणी रे बेटा नी हुश्रा ता नी-पे-हुश्रा। राजा ता आपणा प्रबन्ध केरना-ए थी। जेबे तेईए हेरु जो राणी रे नसीबान-न सतान नी श्रीथी, तेबे तेईए दूजा व्याह केरु।

राजा-बे दूजे व्याहान-न राज-घराणे री राणी ता नी मिली, पर चौहान राजपूता रे खरे घोंरा री लड़की थी। छं के-न दूजी राणी छरानिदी टेकी। दोबे सो पुर्भण थी ता बड़ी राणी-बे पता नी की हुआ? तेसे होछी राणी-बे बोलू 'तेरे होणी शोहरी, पर तेसा जीणा नी सा श्रीथी।' सची-ए टेण्डा-ए हुश्रा। होछी राणी री बेटो हुई, पर हुंदेया-ए मूर्ई। किछ बोशा बाद होछी राणी रा भीरा री पैर भारी हुश्रा। बड़ी राणीए भी बोलू 'एबे तेरे मोद होणा, पर तेई बी बचणा नी सा।' होछी राणीए बूझू एसा सा सोकण झीक, एसा रे बोले की सोचीए मोरना। पर हुआ गौच-ए तेंडा। राणी रे बेटा हुआ जो किछ दिहाड़े भीरी मुश्रां होछी राणीए बड़ी राणी-न दूर दूर रोहणा शुरू केरु। एकी-दूजी आगे एणा जाणा बंद हुआ। पर जेबे तीजी घरे बां बड़ी राणीए कंडी तरह पता लाऊ ता परेजगण लाई ता होछी राणी ता हुई कोधान फुकुइया पटाह- 'डाइण रोंड भाई, एसा रा ता मूं एबे चांदा फूकणा। डाइण डणयाग मेरे शोहरू खांदी पोईरी। आपणे ता नी गूठीए खाजणा बे होरी रे गाभरु खांदी पोईदी।' तेसे सारी गल राजा-बे शणाई ता बोलू 'जां ताई ए डाइण घोंरा सा, घोंरा रा ठिकर बाणता। एसे बच्चे ता खा-ए-खाए घोंरा रा कोई जिंदा नी डाहणा राज-वंश जो चलदा डाहणा ता ए घड़ी भर बी होर जिंदी नी डाहणी।

तौपी काल-ए रामगढ़ा रे घोणे बोणा-न एक बड़ा भयानक राखस निकलू हुंदा थी। तेईए सारे इलाका-न सारे माणू एक-एक चूंधियां खाणे लाआदे थी, ता सारा-न हा-हाकार मचाऊहुंदा थी। राजा-बे बड़ा खरा मौका मिलू। तेईए देरी नी केरी। हुकम धोना 'राणी-बे रामगढ़ा जंगला शेटी एजा।' पर राणी-न आखर अवगुण की थी, तेसा-रा दोष की थी। सो ता धर्मात्मा थी, पूजा-पाठ केरा थी। जो बच्चे मोरने री गल तेसा-बे पहला-ए पता लाग़ा थी। ता कसूर की हुश्रा। बोणा पूजिया जां राखस तेसा-बे खाणे-बे दीउड़ू तेसे आपणी कोन्ही गूठी काटिया झट तेईरे टीका लाऊ ता तेई-न जान बखशणा री अर्श केरी जो राखसे कबल केरी। बोहू रोजा बाद दोबे राजा-बे खबर मिली जो राणी ता खरी तकड़ी मुख-सान्ता सुंगे बेठीदी सा ता तेईरा तेसरा डाइणी होणा रा भीरम पका हुश्रा।

ता राजे सलाह केरी जे एसा-बे नेउली नाऊं री जगह जिंदा दबाई शेता । राजा रा हुकम कुणी टाल्णा थी । राणी-बे बोणा-न आणिया जिंदा पीयणा रा प्रबन्ध केरू । एक डूधी खातर कोतिया जेबे राणी पीयणी लाई, ता राणीए बोलू 'मूं पीथा ता ज़रूर, पर एक प्रार्थना सा जे बारह बोरशा भीरी मूंवे ज़रूर कोती ता तुसा-बे पता लागणा जे मेरा की, कंडा ता केतरा कमूर थी । ए मूं आपू हसणा ।' राणीए एतरा-ए बोलू थी ताबे ता राजा र नोकरे सो पाथरे-माटे बबाया शेटी ।

जुआणी महादेऊ तीधी काल राजा रा कुल देवता थी । देऊ आखर देऊ होआ सा होर सो आपण वक्ता-न सेभी-न बड़ा देऊ थी । देऊबे ए सेभ गला पता लागी, ता तेईए राजा-बे सुपना-न दसू जे राणी-बे बारह बोरशा बाद खोजू ता तेसा देशा री सेभी-न बड़ी देवी बोणना ता राज-पाठ रा बी नाश करना । जुआणी महादेऊआ बे राजा-न बी बड़ी आपणी फिकर थी । तेईए राजा-बे बोलू 'जे राणी-बे दसा बोरशा बाद ए खातरी-न खोजिया आपण सामने मारा ।' राजा नेउली पुहता, आपू सोंगे जलाद बी आणें ता राणी बे बाहर खोजणा रा हुकम धीना । पर जेबे तीसे कोतिया भालू ता किल्ल नी थी आंथी । राजा बेढा-न वापस पुहता ता तेईए याणी ता रोटी-न कीड़े-ए-कीड़े लागे निकलदे । राजा-बे आपणी बेरहमी ता गलती रा पता लागा । रात-दिहाड़ तेई बे चैन न्हीसी पोई । राणीए सुपना-न दसू जे बेकसूरा रा लोहू जां नी जांदा । राजे राणी री मृत आत्मा-न माफी मूंगी ता तेसा री पूजा केरनी शुरू केरी ता हाजी भी तेसा-से नेउली राणी या नेउली देवी रे नाऊंए पूजा केरा सी ।

शब्दार्थ

शब्द	अर्थ	शब्द	अर्थ
1. कोम बूता	काम काज	8. खोजणा	बताना
2. ज़रे	अच्छे	9. ठिकर खोणना	घर का घराह बनाना
3. शीहरी	सड़की	10. छूँघिया	खुन कर
4. रोहणा	रहना	11. शेटी	फकी
5. परेउगण	प्रनुमान	12. बोणा	बन में
6. कुहुइया	जलकर	13. पूजिया	पहुँच कर
7. जोड़ा	सिर		

काग भाखे राखसणी री मौत

एकी ग्राम-न दुई दुहरे रीहा थी। एक खीश ता तेईरी लाड़ी खीशण। ते दुहे उमरा-न होछे-ए थी जेबे तिन्हा रा ब्याह हुआ ता हाजी दी होछे-ए थी तां-बे ता याण-माठे रं चैयण चैयण-पहले एक शोहरी हुई, भीरी होर शोहरी, भीरी होर; पर शोहरू नी हुआ। ता जंडे सेभ लाका बेटा री ताईए लोड़-फड़ाइया सो तंडे-ए ते दुहे दुहरे बी बटे रं लोभा लालच शोहरी जोणवे न्हौठ ता जाणन्द-ए राहे। जब तिन्हा री छोह शोहरी हुई ता खाशण सोतुई वरे बी छरालुई टेकी तबे खाश लाई-न मोरिया ता खाशणो-बे बोलू तू री आपण भागा-बी।

खाशा रे मोरना-न भीरी खीशणी रा हुआ कजोण। एक ता पहले-ए घोर्रा खाणा-बे गुजारा नी हुंदा, एबे दयाउणी किसे होला। छोह-छोह शोहरी धाचणा-बे आपू छरालुई। बुझा थी किसे जाणा। पर कां केरना, फाही थाड़ी-ए लाणी। जोणा पोआ सा। घाह-छोड़ी बोचिआ मसे गुजारा केरदी लागी। तिन्हा-रे घोर्रा सामने एक पराणा मोहरू रा बूटा थी। तेई बूटा पांचे एक काउड़ा गोज एजिया बाशे केरा थी। जां सो बोसदा लागे ता खीशण आपणी तिन्हा छोह बेटी-बे बोला थी 'शुणा ता शोहरीओ ए काउड़ा की लागेदा बोलदा'। पर शोहरी ता शोहरी थी, कोई लेखे नी पांदी ता खीशणा काउड़ा संगे जोंडी गला हुआ था।

"की कड़ा-कड़ा डे ! तू इन्हा शोहरी रा बाबू सा ? ओऊडे ओऊ बूझू, में तू जा"।

काउड़ा उड़दा ता भी भीरी एजिया बोसदा ता भी 'कड़ा-कड़ा' केरदा ! ता खीशण भी बोलदी—

"की डे कड़ा-कड़ा ! कोसकी एणा सा ? हो एणा होला शोहरी रे मामा"।

ता सोची-ए सोझा-बे पाहुणा पुहचा थी। पर छोहा-न एक शोहरी बी आपणी मां री गला धीरे ध्यान ना थी देदी, ना काउड़ा-बे उड़दा बोसदा भालदी। खीशण केभकी जो शोहरी बी सामने दुई बोला केरा थी 'शुणा ता शुणा-ए ए काउड़ा की लागेदा बोलदा' पर एक शोहरी बी कोन नी थी लांदी। खीशण आपूए बोलदी—

"की कड़ा-कड़ा केरा सा डे ? मेरे एबे गेटा होणा ?" पर काउड़ा उड़िया न्होठा। तेसे आपूए बोलू 'हो, गेटा नी होणा होला एबे बी ! तेबे-ए ता ए उड़ू"।

खीशा रे मोरना-न चार महीने बाद खीशण छरालुई ता सोतुई शोहरी

हुई। खोशणी पांघे पोई जेंडी बीज। न घीरा खाणा-वे, न कोई कमोणीया, न बशाह देंदा, न दुखा गुवा हुणदा कोई। सो चुकदी लागी, चुकदी रोही। हिमत चूटी, खाणे-वे कीछ नी, मास शूक, हाडक निकले ता बीजे बोखे तेमे बी लाई सोरिया।

सौता शोहरी-वे आपणा गुजारा आपू केरना पोऊ। जमीन-जगह ता गुजारा-वे श्रीथी नी थी। तिन्हा बूझ एवे छिड़ी बेचिया-ए पेट पालणा। पां रे नंड ता बटे झीटे पोके-ए काटिया मनेरी रे थी। दूर जेहां बड़ा घोणा बोण थी, जौखे लोक कोई नी थी जादे। बड़ी-ए बड़ी शोहरी-वे सेभान बड़ी जिमादारी थी। एक रोज तेसे दान राशा पाई ता तेई घोणे बोणा धीरा-वे सीके। जादे जादे पता नी की आई तेसा-वे खासी दूर निकती ता घोण बोणा-न रस्ता बी नी थी आंथी। दूर जेह तेसे तेरू घोणे बूटे ता भीड़ी भोकड़े रे बीचान खाली जेहा जगह थी। सो तिसा धंरे-वे फीरी ता एक भोपड़ी जेह तेसान ते रुई। धीरा-न जेवे सो बोणा-वे चोली थी ता एक काउड़ा साथ-साथ चौलुदा थी, ता एकी बूटान होरी बूटान 'कड़ा-कड़ा' केरदा उड़वा-पीछा केरदा लागीरा थी। जेवे सो शोहरी तेगा शीरण जेहे सेही टापरी आगे पुहती ता काउड़े जोरे-जोरे बाशणा शुरू केरू, ता बूटान फडराई मारिया सो शोहरी ताल पांघे जंझोरी। तेसे आपण मना-न बील 'एई काउड़ा वे की मौत पोडरी होली'। सो सट हांदरे तुरी, ता हांदरे एक खापरी थी कुणो आगे बेठीवी। तेसे बोल, "हाईए बेटीए ! तू कुण मा ए ? तू कौन आई"। शोहरी ए सारी गल शणाई। खापरीए जट बोल "खरा हुआ-ए हाऊं ता माण्ड निहालदी बेशा सा ओज तू भागे आई। ता की केरना-ए एवे घीरा जाइया। ओखे बेश। कीभी वे केरनी जूनी। ले एई लोटे ने। पार धीरले कमरान गाई सा। गाई आण दुहिया। आसे दूही दूध पीणा।

शोहरी ए लोटा चौकू ता भोल भाऊआ-न दूध दुन्हदी नहीठी। जां सो दूध दुंहदी लागी ता एक मुशटी निकती। सो चरू-चरू केरदी चारी पासे घूमी। पर शोहरीए नी सो लेख-ए पाई। मुशटी जेंडी लौडमड़ाउई। पर शोहरी धीरा-न तू मोर पोरे। तेसे दूध दूह ता खापरी आगे पुहतीए थी ता तेसे शरीऊ-परीऊ नहीठे। खापरी की ? तोखे ता एक भसतूली, बड़े-बड़े वोंदे आली, काली कलूट, उलटे घुंटे आली राखसण थी डाहण। सो माण्ड-वे खांदी नी थी। गाई तेसा री जादू री गाई थी। सो तेसा गाई रा दूध जुणो रे मुण्डा पांघे पात्रा थी सो दूध एक बूटी बोणा थी ता तिसा हारले ते मारे बूटे माण्ड-ए थी जुणा तेसे श्रीजा ताई जादू री गाई रे दूधे लाईया बूटी-बूटे बणाइरे थी। बस राखसणी ए शोहरी डीकी, तेसा आगा-न दूध मूंगू सो बाहरा-वे घशीटिया आणी। एकी जगह खड़ी केरी, तेसा रे मुण्डा पांघे दूध पाऊ, ता बस ! सो एक बूटी बोणी।

जेवे सो घीरा नी पुहती ता तेसा री होरी बेहणीए बूझू सो की-वे नहीठी

होली । धोर बीसदी न्होठी होली, की किसे गोभूई । बोह जेह रोज तेसा-न होछी शोहरी उडी; तसे बी दाच, रीशी पाई ता तिसा धीरा-बे खोचुई । बूझू छोड़ी-बी आणनू, भालनू बी भोला सो बेबी किस सा । पर, सो बी फिरदी फरांदी तोखे-ए पुहती । ता तेसा-बे बी बूठी बोणदेया बला नी लागी । एण्डी तरह बड़ी त छोहा-री छोहा बेहणी धीरा-न न्होठी, काउड़ री बाजणा रा कोई ध्यान नी धीना, ना मुशटी री चरू-चरां-बे किछ बूझू । ता छोहा-री-छोह बूटी बोणी ।

जेबे ते सेभ धीरा नी आई, ता सेभी-न होछी तेसे बी एकी रोज तेंडा-ए दाच रीशी खोम्की ता बोणा धीरा बे चोली । तां बे ता काउड़े फड़ा-कड़ा केरू । तसे तेईरी भाख समझी । जेबे सो मां रे पेटा-न थी, ता मां तेई कोउड़े संगे गला केरा थी, ता तेसे शोहरीए पेटा-न-ए ए भाख सीखीदी थी । तेसे तेई काउड़े बे बोलू—

“कीड़े बाबा, तें मेरी तिन्हा छोह बेहणी-बे न्होली बोली जे तूसे इसे मीता जादी । एबे मूबे की बोला सा ‘तू इसा मोत जांदी’ । मूं ता जाणा यानी जेडा होणा होला तेंडा सही ।”

तबे काउड़े बोलू “हाईए गेटीए मैं ता बोलू थीए सेभी-बे । तिन्हे न्होली फियाड़ी । तें मेरी गला फियाड़ी, ता तू मोत जांदी ।” तेसे बोलू ‘काग भाखा जाणी री नी होली तिन्हे । में जाणी री । पर मूं जाणा जरूर । मूं भालणा सेभ किछ आपू’ । सो नी मनी ता आगे-आगे सिकदी लागी । काउड़े भीरी बोलू ‘तू जा ता ना जा, मेरी गल ता तू शुणदी नी । पर तौबे होणा सा होर छलीतरा बी । तेंई धीरे ध्यान देई ।

बस, होछी शोहरी बी तेण्डीए तोखे पुहती । पर जेबे सो दुध दुहंदी लागी ता सो मुशटी भी निकती, चरू-चरां बाठी । तेसे शोहरीए पछियाणी गल, तेसे मुशटी-बे बोलू ‘की-ए आमां, तू की बोला सा’ ।

मुशटीए रोदे-बाणदेया बोलू ‘क्या गेटीए ! होरी आगे ता अकल नी थीए प्रीथी । तू ता अकली आली सा ना । कीबे सारे खानदाना रा नाश केरना । भग तू ओखान-सुधे भागे ।’

बस, मां-बाबे दूईए बोलू, ता सो बी मगी । आगान-न सी, पिछान-राखसण ! आगान-न सी पिछान-राखसण ! भगदी रोही, भगदी रोही । तेसे री आमे मुशटीए भगणा-न पहले तेसा-बे बोलू हुंदा थी “तू गाई रे आगे री बूहारी पा साथ । राखसण पीछान-नेड़-ऐ पुहचली ता ऐक-ऐक तुला शेटी ।” तेसे-बी जां राखसणा नेड़ जेहे आई पूजी ता ऐक तुला शेटना तेहरा बड़ा भार बोणा थी, ता राखसन तूई-न बला गया थी । आगे जेह दूई बोलव, भीड़िदे लागंदे थी । शोहरी बोलू—“ओरे-पोरे हुआ डे बोलवो ! सौत बेहणी थी आसे छोह खाई, हाऊं कली रोही; मूं-बे रास्ता देआ” बोलव ओरे-पोरे हूए । राखसणीए शुणी

सो बोलदी, तेसे बी एण्डा-ए बोलू 'ओर-पोरे हुआं डें बोलदो । सौत धंहणी थीं आसैं छौंह खाई, हाऊं केली रोही', ता बोलदे तेसा-बे बी रस्ता धीना । आगे नौई थी । नौई-बे बी तिन्हे बारी-बारी पहले सेहीं बोलू, ता नौईए रस्ता धीना । एबे तिसा शोहरी आगे बुहार-बी निभी आई, राखसण बी नेड़ पुहती । तेसे ब्रभू एबे की केरना । पर "जुणी रा नी कोई, तिन्हा रा परमेशरा तू होई" एण्डा बोला सी । तेसारे सामने एक केलू रा बूटा आऊ । तेसे झट बोलू —

“केलू मामा, केलू माया, तेरा मेरा एक-ए नामा ।

तू बी काला हाऊं बी काला, तेरा मेरा एक-ए डाला ।

मैं छूंगे तेरे चरण, दे तू मामा मू-बे शरण ।”

केलू रा बूटा बीचा-बीचा-न फटी । शोहरी तेईरी खोला न तुरी । केलू भट कट हुआ पर तेसारी कोन्ही गूठी बाहरे रोही । राखसणीए कोन्ही गूठी भट काटिया खाई ता बोलू “हा, कटे ! ओझ खाऊ मास, होछी बेहणी री गूठी बड़ीए मीठी” । केलू ए शोहरी बे शरण धीनी ता राखसण जे-फे केरदी वापस हुई ।

ए बोण पहलके बोणा-न दूर होरीए इलाका-न थी । तीथी काल ए तेई वेशा रे राजा रा बेड़ा लागा हुंदां थी बोणदा । राजे रे बढई खरी-खरी बूटी भालदे-भालदे तेसा बूटी आगे पुहते, ता तिन्हे बोलू “ए बूटी सा यारो खरी ए काटणी शोरा-बे ।” शोहरीए ते दुणिदे गुण तेसे बोलू —

“गुणा गुणा राज रे बढेई ।

ओरे पोरे काटा, मोंझ सा बेड़े री देई ।”

ते हेरान हुए, जे ए की हुआ । ते खाली वापस न्हौंटे ता राजा बे सारी गल शणाई राजे बोलू चीला, मूं आपू भालणा, की गल सा । जेबे ते तीसे पुहते, ता राज बोलू काटा एसा बूटी-बे । तेतरा-बे भी बी निकते ‘गुण-गुण राजा रे बढेई, ओरे-पोरे काट, मोंझ सा बेड़े री देई ।’ राजे बोलू ‘ठी सा ! ओर-पोरे-न काटा ।’ बढेईए ओरे-पोरे-न काटी बूटी, ता बीचा-न सुन्दर लड़की निकती । एबड़ी सुन्दर जे राजे सो आपणी राणी बणाई, ता महला-बे आणी । सो महला-न राणी बाणिया रोहदी लागी । थोड़े बोरशा बाद तेसरे दोलू हुए एक बेटा, एक बेटी ।

राजा री आगली राणी बी थी । तेसरे कोई याणो माठे नी थी ओथी । होछी राणी-रे जोड़ए बेटा-बेटी हेरिया तेसा बे बड़ी औग लागी, ता जतन केरदी लागी जे केण्डी तरह इन्हा-रा नाश केरना थी । दूहे भरयाळ बड़े हुंदे लागे । दूहे हेरने गुणने वे ता राजकुमार थीए, पर पौढ़ने, लिखने, चाल बाजी सेभ किछी न बड़े तेज थी । तिन्हां री मांए तिन्हां दूही-बे होर-होर बिद्या संगे काग ता मूशा-रो भाख बी सखाई जो तेसे आपणे आमा बापू-न सोखो री थी । केबकी सो गला, गला-न आपणी पुराणी आप-बीती बी शणाआ थी । तिन्हा री मासक मा बड़ी राणी री झीक-झीक बी रोज-बरोज बधदी-ए लागी । सो एई जतनान-न थी जे केण्डी तरह ए दूहे जानी-न शोटणे थी मारिया । तीथी काल तेसा राखसणी दे बारे-न

सेभ जाणा थी। बड़ी राणीए एक रोज़ महला रे नौकरा-बे चूकमा धीना, ता तिन्हें एण्डा मंत्रा केरू जे बे ते खेलदे लागेवे थी ते ठगिया नेए ता तेई जंगला-न जाइया शेते जोखे सो राखसणी थी। जेबे ते केल्हे शेते ता एक काउड़ा 'कड़ा-कड़ा केरदा निकता। तिन्हें आपणी मां-न काग भाखी सोखिदी थी, तिन्हें सो फियाड़ी सो बोलदा लाग़ा हुंदा थी—

“क्या धोतरुओ, क्या धोतरुओ ! कीबे चौली रे डे खाइणा। तूसे री मां बी मसे छूटिदी। तुसा रे छौह बड़ी आमा बी जुगा-बे बूटी बोणिया रौहिदी। तूसे वापस जाआ। हाऊं तुसा-बे रस्ता देआ सा खोशिया।” तिन्हें बोलू “नी नानू आसा की ता आपू मोरना की ता तेसा राखसणी-न बदला लेणा। वापस नी आसा जाणा। तू हाजी आसा री मदद केर”। काउड़े बोलू ‘हाऊं ज्यादा मदद ता न्होला सा केरी। मूबे नी पता सो कंडी रीआ सा, किबे जे सो बाहर घट-ए निकला सा। पर एक गल सा जे तूसे खाणे होया धीरले कमरा-न हेरी पहले जावे। तोखे रीआ सा राखसण। खेंजे होया रे कमरा-न जाई। ता खूब चतन हुई तेसा रा लोटा नी कदी भालूणा। असल जादू तेई लोटा-न सा। जेबे सो लोटा गाई-न रिहाऊ ता दूध रा असर होरी-बे हीआ, नाई ता तेसा राखसणी-बे-ए असर होणा। होरा गला दसणी तुसा-बे मुशटी, बुझू ?’ तिन्हें तां केरू ता सडा सड तोखे पुहते ता खेंजे होया धीरले कमरे-बे न्होठे। तां बे ता मुशटी निकती ता पटिकी। तिन्हें मूट पछियाणी ता बोलू “नानी ए तू सट पट आसा-बे राखसण मारना रा तरीका दस, होरा गला होली भीरी”। तेसे बी बोलू ‘तूसे लोटा ता नी डे हेरू’। तिन्हें बोलू ‘नाई’। “बस-बस फिकर मता केरदे, हौंसला केरा। एकी-ए केरा नोला दूधा-बे एकी-ए गाई नोला मिथर दूहां। तां बे एणा सा राखसणी हो। घबरावे हेरी। जा एली ता तेसरे टेंडा-न पाई दूध। सट-केरा सट। लड़के टोंऊ भट-पट नोला, ता लड़की ए गाई दुहणी गुरू केरी थी। तांवे ता सारा कमरा तौलू जेण्डा हिलण दूआ राखसण लेरा मारदी दुरूआजे आगे पुहती थी, राजे रे लड़के नोला रे दूधा रा पाऊ छपराला बस राखसण तोखे शिल बोणी।

तेबे मुशटीए भी बोलू “एबे तूसे एसा गाई गंचयाया, ता गोखे लाइया इन्हा सेभी बूटी छड़काऊ देआ। भेरीए भीरी एसा गाई पांघे बी छड़काई। एबी दयाउणी एक बेटड़ी सा। तिन्हें तेंडा-ए केरू। सेभ बूटा माणू बोणे, गाई बी जिदी बेटड़ी फिरी। तेबे की थी सेभीए तिन्हा दूही रा बड़ा आदर केरू। सारे इलाका पाघे खुशहाली हुई। लोका रौहवे बौसदे लागे। जमीना-न फसल बूटी बाही। लड़का राजा बणाऊ। बोहू रोजे ते इहे भरयारू आपणी छौह बड़ा आमां लेइया आपणी आमा आगे पुहते। सेभ खुश हुए। बड़ी राणी बे बी तिन्हें माफी धीनी ता दूहे इलाके भीरी संगे रौहवे बौसदे लागे।

शब्दार्थ

शब्द	अर्थ	शब्द	अर्थ
1. बूहल	पति पत्नी	14. सट	जल्दी
2. चेयणे चेयुए	भार से बब गए ।	15. हांवरे	आन्दर
3. जोणवे	पंदा करने	16. मुशटी	चुहिया
4. छरालिदी	गर्भवती	17. खापरी	बड़ी औरत
5. कजीण	बुरा जीवन	18. घसोटिया	रगड़ कर
6. धावणा	पालना	19. गोभई	छुप गई
7. उडिया	उड़कर	20. बलाग	देर
8. शुक्रदी	सूखती	21. फियाड़ी	समझी
9. भनेरी रे	खत्म किए	22. बोलद	बेन
10. रौशी	रस्सी	23. दोल	जूड़वां अच्छे
11. सीके	चले	24. मामक मां	सौनली माता
12. भोड़ी भोकड़	कटक	25. लेरा मारनी	जोर से रोना
13. फहराई	उड़ारी		



दादी हिड़मा

कई शौऊ बौषी पंहिले कुल्लू घौरा पांढे पीत्ती रं ठाकरा रा राज थी । ते बड़े जालिम थी । लोके तीन रं जुल्मा न छुटकारा पाणे री बड़ी कोशिश केरी । मगर सबे कोशिश असफल हुई । तीने एं रीजा री गल सा कि एक भंगमुनि नाग्रा रं जुग्राने कुल्लू री धौरती पांढे प्रवेश केरू । सौ मायापूरी रं बदरी नारायणा बं जाम्दी सड़का पांढे स्थित एकी नगरी, राज-घराने संगे सम्बधित थी । किच्छ बूरे ध्याड़ तेई रं कि तेईबं आपणा घोर छोड़णा पोऊ । कठिन ता खतरनाक यात्रा करणे न बाद सौ मंडी रयास्ता री हवं पार केरिए वजौरे पूजू । हाट ग्रं न आपणा डेरा लाऊ । एक रोसा अचानक तेईए सामने धारा पांढे एक मन्दिर हेरू । एं मन्दिर बिजली महादेऊ रा थी । तेइबं सुपना हुआ कि यदि सौ व्यासा ता पार्वती रं संगमा पांढे, झूईणा न पाणी रा एक लोटकू तेईए बिजली महादेऊ रं मन्दिरा जाईए तेई री पींडी पांढे पाणी छिड़कला ता तेई बं एक खास ता अद्भुत इनाम भेलना । दोती भीशा उठिए सौ संगमा पांढे नौठा ता पाणी रा लोटकू आटू ता आपणा रुख बिजली महादेऊ ए रं डेहरं घोरिए केरू ।

एई डेहरं बं पुजणे री यात्रा काफी कठिन सा । भंगमुनि दोती चालिया सौज पूजू, थकिए चूर हुआ, दयाऊणे जोए री ऊरा लागी ता सारा शरीर जौखिड़ ऊए बेटा । दूजे डेहरं ताई पूजदे पूजवे रात पौई बापस हाट ग्रं पुजणा रा स्वाने ए नई उठदा थी । तेइबं तीखे रात काटणे रं सिवाए कोई चारा नई रोहू ।

राती भंगमुनि बं भी सुपणा हुआ ता बिजली महादेऊ प्रकट हुआ । देऊए सुपणे न तेईबं नास्त, श्रीज का जग सुख, जाणे वे बोलू, जौखे तेईबं एसा तीर्थ यात्रा रा फौल मेलला । भंगमुनिए दोती उठिए देऊआ आगे मौथा टेकणे बाद ऊभी री राह तेई । आखिर सौ नास्त पूजू । औखे पुजिए सौ एकी कमाहरे रं घौरा न नोकर बेटा । एक रोज सौ एक बूटे हेठे सूता बा थी ता एक ज्वाला नाआं रं कशमीरी बामणा रा तीसी जाण हुआ । तेईए तेई छोकरे रं तला न पदमनि, राजरेखा हेरी । तेई बामणे सौ भंगमुनि नौदरा न चंकू ता बोलू कि सौ एक न एक रोज राजा बणला । नौजुग्रान राजकुमारे एसा भविष्यवाणी पूरी होणे पांढे धाने रं किच्छ रोपे एई बामणा बं देणे केरे ।

लोक पीत्ती रं ठाकरा रं जुल्मा न बडे तंग थी। भंगमुनि प्रतिभाशाली ता थीए, तेईए तीन रं विरुद्ध लोक कट्टे करणे आरम्भ केरे। भंगमुनि लोका रा नेता बण। तीन तेई रं नेतृत्व न ठाकरे रं विरुद्ध विद्रोह केरू। ठाकरे री बूरी हार हुई। लोके भंगमुनि आपणा राजा मन्तू। मगर आजी ताई सारे राजा न गृह युद्ध आली हालत थी। दुजे पीत्ती रं ठाकरे रं किच्छ समर्थक होथ धोईए भंगमुनि री जानां पीछ पीए दं थी। तीन भंगमुनि मारणा रा षडयन्त्र रचाऊ। कोसकी ढंगा संगे भंगमुनि वं एई षडयन्त्रा रा पत्ता लागे। राजे आपणी जान शुरू ग्रं री देवी रं डेहने न गोजुऊईए बचाई। धीरे धीरे सारी रयास्ता न गृह युद्ध समाप्त हुअ, चौऊ धीरए शान्ति फली। भंगमुनि आपणे गुप्त स्थाना न बाहर आऊ ता लोके वड़ी खुशी मनाई। भंगमुनि राजगद्दी पोंदे बशाऊ। एसा खास घटना रं अवसरा पोंदे जग मुख ता ऊई रं नरसीकी ग्रं न चचोहली री जाच मार्च महिने न ओजा ताई होआ सा।

जादी काल भंगमुनि शुरू ग्रं न आपणे गुप्त स्थाना न गोजुऊईए वेठा दा थी ता एक रोज़ सी जगमुख ग्रं न आपणा भेत बदलिआ शाऊणे जाचा हेरदा नोठा। रस्ते न तेईवें एक खापरी बेटड़ी शं फं केरदी मौला रा किलडू चंकिए जगसुखा धीरए जान्दी मेली। भंगमुनि वं तंसा पांदे तरस आऊ कि दयाऊणी जई वं जाचा आले रोज़ा वी कौमा न वारी नई भंगमुनि तंसा खापरी रा किलडू आपू चंक्। तं दुहे जगसुखा धीरए चौले। ग्रं न किच्छ दूरी पोंदे तंसे खापरिए भंगमुनि वं किलडू धसकी डाहणे वं बोलू। तेईए किलडू धीरती डाऊ। खापरिए तंई वं आपणी कौमा पांदे उकलणे वं बोलू। पहिले ता सौ थोड़ा जाआं भिभक् मगर खापरी मनिए नीछी ता तंइवें तंसा रा कहणा मंनणा पौऊ। कौमा पंदे उकलणे न बाद तंसे खापरिए तंई न पूछ :-

“तौ न कौ न कौ ताई देश हेरिया सा ?”

“कोडी वजीरे न तेई ए रोटंगा ताई, भंगमुनिए बोलू जा एं मेरा वरदान, जुण जुण देश तौन हेरिया सा, तेई रा तू राजा वणला,” तंसे खापरिए तंई वं वरदान धीना। ऊई न एक दम बाद सौ खापरी तेई री नेजरा न राऊई। खापरी रं भेसा न एं बेटड़ी हिडमा देवी थी।

समय गुजरने संगे भंगमुनि सेचमुच कुल्लू रा राजा वण। जुणी बामणे तेई रं राजे बणने री भविष्यवाणी केरी की तेईवें राजे आपणे बाईदे अनूसार रोपा धीना, जुण रोपा ओज बी जुवाले बामणे रं वारिस, जुण जगलोढ़ रं नाआं पांदे प्रसिद्ध सी खाआ सा। भंगमुनि न ओरु ओजा ताई कुल्लू रं राज घराने न देवी हिडमा री वंडी मानता होआ सा। इना रा कोई काज ऐस री मर्जी ता उपस्थिति रं बिना पूरा नई वुजिदा।

शब्दार्थ

शब्द	अर्थ
1. पूजू	पहुँचा
2. लोटकू	गड़बो
3. भीया	सुवह
4. डेहरा	मन्दिर
5. सोजा	शाम को
6. दयाऊणा	बेचारा
7. जोखड़ु डग्रा	झकड़ कर
8. मौया टेकना	प्रणाम करना

शब्द	अर्थ
9. गोमुउहए	छुप कर
10. चौऊ पासे	चारों ओर
11. मौल	गोबर
12. बेटड़ी	झोरत
13. शें फें	साँस चढ़ा हुआ
14. धूसकी	नीचे
15. उकलणे वं	चढ़ने को
16. रोपा	घान का खेत



रूप-वसन्त

एक थी राजा एक थी राणी । दुई तिन्हरे बेटे थी । बड़ु रा नां थी रूप ता हीछे रा ना थी वसन्त । एक रोज राणी एतरी बमार हुई जे तेसरे वचने री कोई उम्मीद नी रोही राणी री नजर एक रोज एकी चिटू रे कोहला पन्ध पोई । एई कोहला न चिडू चिड़ी होर तिन्हरे चार बच्चे रोहा थी । कौसी बोगन चिडू बाहरे जा थी ता तिन्हां बं चंग ता दाणा पाणी आणा थी ता कंब के चीड़ी दाणा पाणी बं जा थी । एक रोज चिड़ी चंग आणदी बाहरे नोटी ता एकी माहणुएं मकाईया डाई । जब्बे तेसा नी एजिया खासी देर हुई ता चिडू तेंस्सा बं तोपदा नोटा ता की हेरा सा जे चीड़ी एकी जग्गा मुईदी पोईदी । चीड़ बड़ा भारी रूप होर सोठदा लागा जे ऐतरे सारे बच्चे मू अब्बे किहां पालण । कुण इन्हरी देख-भाल केरला कुण इन्हां बं दाणा पाणी आणला । तेईए सोठ जे बंटड़ी छट्टी ता घोर नी चौलदा मू होर चिड़ी आणनी । अ सोटीया तेईए होर चिड़ी आणी । नऊई चिड़ी लागी सोठदी जे आये ता मुम्मे होर भिगट सा गुम्मे अजादी नी सेलणी होरी रे बच्चे सी पालण बं । तेंस्सा बं एक रोज अिक आई तेंस्से ते बच्चे बाहर खोलिया घोरती शेते । शेतेदेआ सार-अे ते बच्चे मरी गोए । राणी अे निभ किछ हेरदी लागीदी थी तेंस्से सोठ जे सोकए बुरी होआ सा । जब्बे जे मू मोरना ता मेरे बच्चे रूप होर वसन्ते रा भी अे अे हाल हीणा । जे राजे होर राणी आणी ता मेरे बच्चे भी अन्देपटकाईया शेटण ।

तेतरे न राजा भी तोखे पूजू ता राणीए बोलू "राजा माहव मुम्मे एक बचन देया ।" राजे बोलू जे की ? ता तेंसे बोलू जे मू मोरने न बाद दुज्जा व्याह हेरीत केरदे । राजे राणी री अ गल्ल मन्नी । राणी दुई चार रोज बाद मुई । किछ रोज ता राजा राणी रे अफसोसा न बेटा पर फिरी तेई रे मन्त्री होर बजीर बोलदे लागे जे राजा राणी बाक्षी शोभा नी देंदा । तिन्हरे बोलण पन्ध राजे होर व्याह केह । नोऊई राणी री तईए एक नऊअं चवतरा बणाऊ होर मां तीखे रोहन्दी लागी ।

राणी आपणे चवारे न बंशी रोहा थी ता रूप होर वसन्त दियाऊणे केहेले खेलेवे रोहा थी । एक धियाड़ी ते दूअे खलडे लागे दे थी ता रूपे गी गीन्द राणी रे कमरे न पोई । जब्बे रूप गीन्द लेन्दा अऊ ता राणीए बोलू जे तू मुम्मे बोस ।

रूप हेरना गुणना बड़ा शोभला थी। राणी री अं गल गुणीया रूप बड़ा भारी हैरान हुआ होर बोलदा लागा जे माता जी तुस्से अं गल की दूणी तुस्से ता मेरी मां री जग्गा सी।

राणीए बोलू अछड़ा। तंसे की केरु जे आपणा चौहड़ा खलार होर रोण पीठण पाऊ। राजा रोणा गुणीयां आऊ होर पुछदा लागा जे अं की गल ? ता सो बोलदी लागी जे रूपे मेरा ए हाल केरु बोलदा लागा जे मुम्बे बोस जब्बे मैं बोलू जे ए किहां होई सका सा ता तेईए हाऊं डीसी होर मेरा ए हाल केरु। रा जे बं बड़ी भिक आई। राजे रूप होर वसन्ता बं देश निकाला देईधीना।

रूप वसन्त घोर छोडुया बाहर चीले, चीलदे चीलदे जंगला न पुज्जे होर तोखे तिन्हा बं रात पाई जब्बे जंगला न सोन्दे लागे ता तिन्हें सोदू जे ओखे ता आसा जंगली जानवरा तंग केरने होर फंसला केरु जे एकी सोणा ता दुज्जे बिऊदे रोहणा होर पोहरा केरना। वसन्ते बोलू भाई जी तुस्से सोआ हाऊं पोहरा केरनू रूप सोई गोऊ। तंतरे न तोखे एक तोता होर मैना आए। तोत बोलू मैना कथा दे। मैने बोलू मूं की कथा देणी। जुण आसाबे एकी तीरा संधे मारला होर मैना बं खाला सो राजा बणला। जुण तोते बं खाला सो बजीर बणला वसन्ते सी गल गुणी तंईए बाही। तोता मैना दूए मूं तोता वसन्ते लाऊ मैना रूपा बं भूनी रखी।

औधी राती रा बोगत हुआ ता वसन्ते आपणा भाई रूप जगाऊ ता बोलू जे भाई जी में तुस्सा बं शकार डाऊदा सा तुस्से तुईबं उठिया खात होर तुस्सरा सीणे रा बोगत भी अब्बे खत्म हुआ अब्बे मूं सोणा।

चार बजे रा बोगत हुआ ता रूप संर केरदा नौठा पिच्छे न वसन्त कीड़े चीटू होर तोखे मोरीया रोहू। जब्बे रूप वापस आऊ ता हेरीया हैरान हुआ होर रोन्दा लागा होर सोठदा लागा जे मूं एईरा हिन्दू धर्म केरना। बोता न तेईबे पाँज सपाही मेल। जुण तोखरा राजा थी तेईरा राज नष्ट होई गोऊदा थी होर ते सपाही अंद्रे मांहणू बं तोपदे चीले दे थी जुण जे दोथी दोथी तिन्हां बं मेलदा होर सो ए तिन्हां राजा बणाणा थी। जब्बे तिन्हां बं रूप मेलू ता तिन्हें सो ढोकू होर राजा बणाणे री तंईए नेऊ।

वसन्त तोखे पोऊदा थी ता एकी साधुए सो भालू होर एक जंगली बूटी देईया जिन्दा केरु। जब्बे वसन्त जीन्दा फिरु ता सो तिस्से धीरे चोलू जोखे जे रूपे रा राज थी तोखे राक्षे री डोरे एक बड़ी भारी बड्डी दिवार धीनी दी थी होर तेई राजा न अं फंसला हुआ दा थी जे एक माहणू बारी बारी तेई राक्षा बं देणा तदी एक बुढी रे शोहर री बारी थी वसन्त तोखे पुजू ता बुढी न रोटी मोंगी। तेस्से बोलू जे मैं राक्षा बं रोटी बणाणी लाईदी सा पहले तेईबं रोटी देणी, फिरी शराबे रा घड़ा ता फिरी माहणू री जग्गा मेरे बेटे री बारी सा।

वसन्ते बोलू जे श्रोज तेरे बेटे री जग्गा हांऊ बेशनू मुन्ने रोटी दे । बुढी री खुशी रा कोई ठकाणा नीं रोहू होर तेस्से वसन्ता बं रोटी धोनी ।

वसन्त तीर कमान लईया बंठा । रोटी री जग्गा तेईए किरडे न गोछे पाए शराबे री जग्गा घड़ न गौन्त्र पाऊ । श्रोधा राती राक्ष आऊ सिभो न पहले तेईए किरडे न होथ पाऊ ता गोछे होथा न लागे । पीन्दा लाग़ा ता होर भी भिक आई फिरी लाग़ा सो दरवाजे लोड़दा पर जब्ब छोड़ई नीछा ता बोलदा लाग़ा जे श्रंटा बुझीया सा जे तू कोई खास सा तू आपणा होथ दस जे केबड़ा होथ सा तेरा । वसन्ते तोरी मौक्षे शांज ठाकी । राक्षे शांज चापी होर आपणा होथ तईबे तरीणने व पाऊ । वसन्ते लेऊ ता तेईरा होथ काटोया टाहू ।

जब्बे सपाही बं वसन्ते री भादरी रा पता लाग़ा ता तिन्हें वसन्त कैद करू होर दस्सू जे बुढी रे बेटे श्रे राक्ष काटू होर इनामें रा श्रोधा हिस्सा बुढी न लेणे रा बचन करू । होर तंदा केरीया इनाम तकमीम करू ।

तेई राजा न एक शाहूकार थी तेईरी बेड़ी चोल्णे न रुकी होर श्रन्दा बोलू जे माहणू री बोली री जरुरत आखे सा । शाहूकार राजे आगे नीठा जे कोई माहणू दे । बजीरे कंदखाने न वसन्ते रा ना थीना शाहूकारे वसन्ते री बोली लेणी लाई ता तईए बोलू जे की तुस्सा बेड़ी लोड़ी चोली की बोली ए लोड़ी शाहूकारे बोलू जे बेड़ी लोड़ी चोली । वसन्ते आपणी कोन्हरी गूठी काटी होर लोऊतुई पन्धे गेट ता बेड़ी चोली पोई ।

शाहूकारे एकी तेली बं बोलू जे मेरे एई नौकरा बं आपू आगे रख जब्बे हांऊ एन्नु ता तब्बे मूं ए नेणा । वसन्त कोल्हू पेला थी होर धनोट पन्धे राग गान्दा रोहा थी । एक राजकुमारी तेईरा ए राग रोज गुणदी रोहा थी होर तेई पन्धे मोहित होई गोई दी थी । एक रोज देई बोला सा जे मूं तो संघे व्याह करेना । वसन्ते बोलू ठीक सा ।

तेसे आपणे बापू बं भी दस्सू स्वम्बरे री तयारी होन्दी लाग़ी । देई फुल्ले रे हार होर केसरे री कटोरी लइया हान्बरे न आई पर तेस्सा न वसन्त नीं बालू आ तेस्से राजे बं बोलू जे बापू जी श्रोधी रियास्त नीं आई । राजे बुज्जे ध्याड़ी सिभ नांढे, टाटे होर लंगड़े शधाए । वसन्त भी एकी कूण न बंठा दा थी । देइए केसरे री कटोरी वसन्ता पन्धे पेरी गोला न फुल्ले रा हार पाऊ सो तेसरा खसम हुआ । सारे राजकुमारे थू थू छी छी केरी राजे तिन्हां बं दूर कुटीया पाई होर कोदरा खाने बं धीना । किछ ध्याड़ी परन्त राजे बं पता लाग़ा जे श्रे वसन्त ता राजे रा बंटा सा ता तेइए ते दूए शधाए होर दाज दान धीना होर दबारा तिन्हरा ब्याह करू ।

एक रोज जब्बे शाहूकार आऊ ता तेईए तेली न वसन्ते रे बारे न पुछू ।

तेलीए वसन्ता बं दस्सू ता वसन्त शाहूकारा संघे जाणें बं तयार हुआ। राजे ते दाज दान देईया विदा केरे। शाहूकारे दुए बेड़ी न पाए।

ओधे समुन्द्रा न पुजीया शाहूकारे रे दिल्ता न बेईमानी आई होर तेईए वसन्त धाका देईया समुन्द्रा न शेठ। देई रोन्दी लागी शाहूकारे बोलू ए मेरा नोकर थी एई की देणा थी तौमे। अब्बे तू मेरी शाहूकारन बणी।

वसन्त बचारा रुददा रुददा मगरमच्छे निगलू। मगरमच्छे रे पेटा न सो सावता—ए रोहू जब्बे तेईबं भूख लागी ता तेईए मगरमच्छे रा कालजा काटणा गुरु केरू। दुई चार ध्याड़े परन्त तेईए मगरमच्छे रा कालजा खाईया खत्म केरू। मगरमच्छ जब्बे मूंआं ता भीरे थोड़ा थोड़ा काटणा रोज गुरु केरू। जब्बे हड्डी केल्ही रोही ता वसन्त हान्दरे न बोलू “भाई भीरा सूले सूले काट” भीर भीरनी हैरान हुए जब्बे तिन्हें सो खोलू बड़े खुश हुए होर तिन्हें सो आपू आगे डाऊ।

भीरनी कई घरे राजे बं फुल दंदी जा थी। एक ध्याड़ी वसन्ते बोलू जे मूं भी जाणा संघे। भीरनी ए सो याणी रे भेसा न नेऊ। तोखरा राजा रूप थी। राजे पुच्छू जे अरे कुण सा ता भीरनी ए बोलू जे अरे मेरी बेटी सा।

राजे तदी तोखे कथा देणे री तईए किछ लोका शाघे दे थी। शोहरीए बोलू मूं भी कथा देणी। राजे बोलू दे। तेसे बोलू आपबीती कि जगबीती। राजे बोलू कथा आपबीती होए ता जादा मजा एला। पर याणीए बोलू जे कथा हाऊं पड़वे न देसा सा राजे पड़वे रा इन्तजाम भी केरू।

वसन्ते आपणी कथा शुरू केरी। जब्बे शणान्देआ शणान्देआ जंगला न कीड़े खाणे रे बारे न होर आपणें भाई रूपे रे बारे न दसदा लाग़ा ता राजे बं याद आई जं मेरा भाई भी वसन्त थी। मैं सो जंगलां न छोड़ू थी। तब वसन्ते बोलू ऐतरी—ए ओज, एतरी—ए काल। राजे बं बड़ा दुःख हुआ तेईए तेस्सा भीरनी बं बोलू जे काल भी एजी कथा लागी सी।

वसन्ते राक्ष मारने दोई कहाणी शणाई। फिरी बोलू एतरी—ए ओज ता एतरी—ए काल। राजे रूपा बं बड़ी झिक आई तेईए बुढी रे शोहरू जे फांसी धीनी। तिन्हां सपाही व भी फांसी धीनी।

तरीजे रोज कथा भी लागी शोहरी बोला सा वसन्त जब्बे काटणा लाऊ की मूं काटीया सा फायदा कि बेड़ी लोड़ी चोली। गूठी रा लोऊ देईया बेड़ी चोली। शाहूकारे वसन्त तेली आगे बेचू। तेलीए वसन्त कोलू पेलूदा लाऊ। वसन्ता बं पिछली याद आई। बड़ा दुःख हुआ। तेईए गाणा केरू। राजे री देईए शुणू। सो अंडी मुगध हई जे तेसे वसन्ता संघे व्याह केरू। शाहूकारे वसन्त लाड़ी सन्मेत वापस नेऊ। लालचा न एजीया धाका देईया समुन्द्रा न शेठ। मगरमच्छे निगलू।

फिरी शोहरी बोला सा एतरी ओज एतरी काल । राजे बं शाहूकारे री भिक आई होर सपाही बं बोलू जे शाहूकारा बं ढोका होर फान्सी देआ । राजे शाहूकारा बं फान्सी धीनी माल आपणे खजाने न डाहू देई भी बेदे न रखी ।

मालणी री शोहरी बोला सा जेबे वसन्त समुन्द्रा न पाऊ सी मगरमच्छे निगलू । वसन्ता बं सूख लागी तेईए मगरमच्छे रा कालजा काटू । मगरमच्छे रा मास लिछिया खत्म हुआ । वसन्ते बोले भाई भीर सुल्ले सुल्ले काट । वसन्त श्रीरे बाहर कोटू । याणी रे रूपा न डाऊ । झिगती माली रा काम भी केरा थी । एक रोज वसन्ते बोलू मूं भी जाणा राजे आगे । सो शोहरी रे रूपा न ओज कथा दंदा लागादा सा "भाई रूप वसन्त ओज दूए भाई आपू न मेलू ।"

शब्दार्थ

शब्द	अर्थ	शब्द	अर्थ
1. कोल्हू	घोसला	13. चोटू	इसना
2. कब-के	कभी	14. ढोका	पकड़ा
3. मुईदी	मरी हुई	15. भानू	देखा
4. रणू	राया	16. गोष्ट	उपले
5. सोटु	सांचा	17. शांज	लोहे की छड़ी
6. भिगट	भंभट	18. चापी	चबाई
7. भिक	गुस्ता	19. कोन्ही गुट्टी	सब से छोटी अंगली
8. शंटे	फेंक	20. भानू प्रा	देखा गया
9. बाभी	बिना	21. शधाए	बुलाए
10. चौहड़ा	मिर के बाल	22. रुढ़ा-रुढ़ा	बहता-बहता
11. खलाह	खुले करना	23. निगलू	निगल गया
12. दासी	पोतना		



शुरू री देवी

ए ता सिभ जाणा सी जे कुल्लू देवभूमि रे नांव संघे मशहूर सा । एकी-एकी फरलांगा पन्धे देऊ देवी रा बास सा । जग्गा जग्गा देऊए रे डेहरे हेरने बं मेला सी । देऊ देवते पन्धे कुल्लू रे लोके रा बिदवास भी बड्डा सा किबे जे देऊ देवते सदा ए मुसीबतां न बाल बंदे आए । सिभी देऊ देवी री आपणी आपणी कहाणी होआ सी । कोई कंठे चाणे प्रगटे ता कोई कंठे चाणे । ग्रंठी ए शुरू री देवी रे प्रगटणे री भी कहाणी सा ।

हामटे जोता न हेठे म्हारे देवे री प्रतिष्ठित देवी शबरी रा स्थान सा ।
बे एसा शाकम्भरी भी बोला सी । होर भी कई नां एसरे सी । जडे जे नगरे री देवी
'त्रिपुरा सुन्दरी' देवी भुटन्ति दोबे मोचे जेसरा स्थान बरशाई कोठी न सा बड़ा
मानता रखा सी तडे शूरु री देवी भी कुलजे रे रूपान मननीया सा ।

कई शोक बोशा पहिले री गल सा जब्बे जे शूरु प्रीणी री जग्गा ऋषि
लोके री तपस्या री भूमि होआ थी । शोभली जग्गा होंगे केरीया तपस्या केरने
री तईए ए जग्गा ठीक बुझीया थी जंड जे प्रीणी न जमलू देऊ रा स्थान (जुणी बं
जे जमदग्नी भी बोला सी) सा ।

एक बारी एक जमीदार जूण जे नांदा थी होल बांहदा लाग़ा दा थी ।
बांहदे बांहदेआ तेइरा होल एकसी टोहली न फसो गोऊ तईए बोलदा बं जोरे
आर लाई नांवे आली गल थी तईए । "एईग" केरी । ऐ देवी रे मन्त्रे रा
पहला अक्षर बां होआ सा जोसा बे बांज मन्त्र भी बोला सी । एई नांवे रे अंडा
बोलणे संघे देवी तोखे प्रकट हुई । हाजी भी तेस्सा टोहली पन्धे होल रे 'चोरे रा
नशाण' ता बोलदे रे खूर हेरने बं मेल़ा सी जोखे न जे एस्सा गल्ला रा पक्का
सबूत मेल़ा सा ।

बोला सी कई बोषा तईए पहाड़ी इलाके न बरखा नों होंगे केरीया अकाल
पोऊ ता देवी रे तपा संघे शाग ए शाग लाग़ा होर शाग खाइया लोका जीन्दे रोहे ।
तब्बे एसा बं शाकम्भरी भी बोला सी । ऐ मन्दर हेरने लायक सा जो खे जेसो टोहल
थी तोखे ओ मन्दर बणूदा सा होर ध्यान लाग़े री तईए बड़ी शोभली जग्गा सा ।

शब्दार्थ

शब्द	अर्थ	शब्द	अर्थ
1. कुलज	कुल देवी	6. बांहदा	चलाता था
2. शोक बोषा	सो साल	7. टोहली	पत्थर
3. बुझीया थी	समझी जाती थी	8. नशाण	चिन्ह
4. नांदा	गूंगा	9. बोलदे	बोल
5. होल	हल	10. शाग	साग

रुमू री कथा

एक रुमू नां रा भेड़ रा बच्चा थी। सो रोज़ होरी भेड़ा संघे चोरदा जा थो एक घ्याड़ी तइये आपणी मामा बी बोलू जे मू ठेली बी चोरदे जाणा। पर तेईरी माम्मे नाहं धोनी जे केहल नो जाणा किब्बे जे जंगली जानवरे रा डोर होआ सा। पर तेईए हठ करी होर सो केहला ठेली बं मोठा आगे जान्देआ तेइबे एक ब्राघ मेलू तेईए बोलू मू तू खाणा। रुमू बड़ा भारी घबराऊ पर भट्टे तेईबे एक भाना घ्याना न आऊ। तेईए बोलू जे ब्राघ मामा मू ठेली चोरीया एणा होर मोट्टे होणा तब्बे तू मुभे खाई। ब्राघ मनी गौऊ। आगे तेइबे मालू मिलू तेइबे भी तेइए ऐ जवाब धोना फिरी गोदड़े सो खाणा लाऊ तेईबे भी तेइए बोलू :—

“लाऊलू मंघाउलू चोरी एज नूं।

मिजरे कोशटू भारी एज नूं” ॥

मतलब खूब चोरीया चरवी वधाइया एन्तू तबे तुम्से मुम्भे खाइत।

जब्बे सो चोरीया खूब तकड़ा टुआ ता सो रोन्दा लागा जे वापस किहां जाणा। तबे एकी चील तेइन पुछू रुमू मामा तू किबे लागा रोन्दा तेइए तेइबे सारी बिथा शणाई तब्बे तेस्से तेईबे एक मलाह धोनी जे भुरज पोत्तर मेलरे सघ आपणे फेर लपेटी जबे ब्राघ बगरा तांमे पुच्छले जे भुजणू मामा रुमू मामा भी हेरु थी ता तू अंदा बोली :—

“रुमू दुभू हाऊं नो जाणदा।

भुजणू मामे बे बीत छोड़ा” ॥

तू अंदा बोलदा जाई होर भगदा जाई। तेइए तंदा केरू जे भूरज पोत्तर लपेटिया भगू। आगे तेईबे ब्राघ मिलू तेइए पुच्छू भुजणू मामा रुमू मामा भी हेरू तों। तेइए बोलू :—

“रुमू दुभू हाऊं नो जाणदा, भुजणू मामे बं बीत छोड़ा”

तंदा बोलिया सो सभी जानवरा न बचीया निकलू आगे तेइबे गोदड़ मेली। सो बड़ी भारी चलाक थी तीस्से बोलू भुजणू मामा मेरी गुठ्ठी काटुई भुज पोत्तर वे ता थोड़ा जेहा गुठ्ठी फेर लपेटणें बं तंठे चाणे धोले संघे तइए जब्बे भुज पोत्तर उच्चेड़े तेतरी समें रुमू बं ए बिलकुल याद नो रोही जे उईरा नतीजा की होणा। जंठे भुज पोत्तर उच्चेड़े ता हेठे ऊना निकली होर रुमू पछियाणुई गौऊ अब सो पछतांदा ता बड़ा लागा आपणी गलती पांथ पर एतरी समें किछ भी होई नो सकदा थी। गोदड़िये सघ जानवर कट्टे केने होर तिन्ने सभीये मिलिया सो लाऊ।

शब्दार्थ

शब्द	अर्थ	शब्द	अर्थ
1. चौरवा	घास चरने	9. हेरू	देखा
2. ठंली	खरागाह	10. बोल	रास्ता
3. केहला	झकेला	11. बल्लूचीया	बच कर
4. भट्टे	जल्दी हो	12. गुट्टी	अंगूठी
5. बिथा	व्यथा	13. काटुई	कट गईं
6. सेलरा	बरोला	14. उचेड़	निकले
7. फेर	इवं गिदं	15. खाऊ	खा लिया
8. भग्नू	भाग		



बाबा फुझारी

द्वापर युग की कथा या महाभारत रं वारें न ता सभोअं जुणुदा सा पोहूदा भी हाला जं कौरवा रा ता पांडवा रा यूढ़ हुआ ती तुइनें कौरवा पांडवा वं वनवास धीना ती जं पांडव तेरह साल तई कोईचं मिले ता तिना वं कोई जगह या रियास्त नहीं मिलनी पौज भाई पांडव वनवासा वं निकतं तिन्हें वनवासा न कई जगह कई देश घुमें एण्डी तरह वनवासं रं अखीरी साला न ते उत्तरा खण्ड (हिमालय की आंचल) वं आये तिन्हें अखीरी साला न आखें कई मन्दिर बणाये इनहां मन्दरा न खास केरिया ज्यादा जें मन्दर भगवान शंकर ता कृष्ण भगवाने रं तिन्हें वनायें अवे बी ते मन्दर सी तेडी कारीगरी देरिया अं सब विश्वास केरा सी, कई वज्रगां व अं गल आसं ओज भी जुणा सी जं पांडवें ए मन्दर एकी राती न बणाएँ दे सी ते राती कौम केरा ती ता ध्याडी आराम केरा ती जुण कौम ते जुणी राती न केरना शुरू केरा ती ता ते तेसाअे राती न तेई कौमा वं मुकमल पूरा केरा ती आसं बजुर्ग हाजी बी बोला सी जं प्रां नगरा न पांडवे स्वर्गा वं पोड़ी बणाणी लोईदी ती तिनें सौ कौम राती शुरू केह पर दोती होणं वं सी किछ अधुरा रोहू सौ पुरा नहीं हुआ ता ते सारी पोड़ी ढौली गोई दुजें म्हारे कुल न छाकी प्रां आगे छाकी नोई पंदे एक पाथर बड़ा भारी सा सौ एकी ओछ जे पाथरा पंधे अंटी कूदा सा सब लोक बोला सी जें सौ पांडवें री ठूठी (चिन्म) जगल दसा सी ओख धीरें तीन्हें बशां केह ती ता तमाकू पीऊ ती एंडी कई गला म्हारे उतर खंडा न सी हर जगह हर प्रां न बड़े २ इतिहास छपेंदे सी ऐंडा अं एक मन्दर पाण्डवें रा प्रां नगरा न ठाउआ नां री जगह न बणाऊ अं मन्दर ओज बी तौखें खड़ा सा अं 'मुरली धर' रा मन्दर नां केरीया मशहूर सा ।

एई मन्दरा रं आगणा न एक गौवर रा बुटा भी सा, लोक अती रं अनुसार अं गौभर रा बुटा अबुं न जुण जं भगवान कृष्णा रा भक्त हुआ तइरें नां केरिया सा लोक पुराणे हाजी भी बोला सी जे जंबे कृष्ण भगवान ओखे न कोईचं वं नोठे ता अं गौभर रा बुटा जुका सा कई घेरें अं घटना घटीदी सा । सर्वे लोका तौखेवं मना सी सगे भगवान कृष्णा वं भी तत्काल समझा सी । अवे हाऊं तुआवं बाबा फुझारी री कथा बसन् ।

ओजा न किछ वीर्ष पहले एक बाबा नगरी न जीड़ी मन्दरा न आऊ तीखे तेईअं आपणा डेरा जमाऊ सौ फौल वगैरा खा ती तेंवे तेईरा नां फलारी पौऊ अवं अं बिगड़द-र आ फुआरी पौऊ अं बाबा बड़ा भक्त संघं सिद्ध पुरष ती ऐइअं तीखे मन्दरा न आपणी गुफा बणाई अवं बी अं गुफा फुआरी गुफा रें नो संगे मशहूर सा जुणा तेईं बौकता न तीखे पुजारी होआ ती ते हाजी भी बोला सी जं बाबा फुआरी ता ठाऊआ रा ठाकर (मुरली धर) दोती रोज तीखेन मणीकर्णा वं नाइदें जा ती, हाजी ओजा कोई दुई त्रा वीर्षा तेंईं सौ गौलू तीखे ती जिसी ते मणीकर्णा वं नाइदें जा ती अवं सी बाढ़ें रें पाणी संगे ढौलू दा सा । ते मणीकर्णा न काफी देर बाद सेजा ती, ऐंडी तरह हर रोज एजीआ ते पूजा केरा ती ।

एकी वीर्षा कुल्लू रें राजे बड़ा भारी कुष्ट निकता तेंवे कुल्लू रा राजा एई बाबे आगे आऊ तेईं बाबे आगे आपणा रोणा रोऊ । बाबा फुआरी हागे दुआले न त्रा नारसिंह ती बाबे बोलू मू हागे त्रा नारसींह सी पहले रा नां लटूरीया दूजे रा नां भूरीया ता त्रिजे रा नां चकोरिया ती, इनां न लटूरीया नारसिंहा खे मनीकर्णा न स्थापना केर ता चकोरीय री कुल्लू दुआले त्रिजा तिन्हें तीखे आपणी गुफा न डाऊ । संघं बोलू जं तु कौसी तरीके अयोध्या न रामचन्द्रे री मूर्ति आण ता तुइरी स्थापना कुल्लू न केर राजे वं अं देसिया राजा आपणे महला न आऊ तेईये जंडा बाबे बालूदा ती तंडा अं केरु । किछ आदमी दर-वारें र खर्चा संघ अयोध्या वं भेजे तीना वं सब राशन वगैरा भौरीया धिना ते अयोध्या वं नौठे तीने तीखे पुजीया हेरु जं अौखे भगवाने री मन्दरा न बड़ी भारी मानता होआ सी ते भी तीखे जाइया मन्दरा न रौअे काफी अरसा ते तीखे रोहं, तीखे पुजारी संघं ते कौम खूब केरा ती, पुजारी बी सारा कौम तिन्हां न केरा ती, काफी रोजा बाद तिन्हें भगवान राम चन्द्रे री असली मूर्ति रा पता लाऊ तिन्हें एक राती न सौ मूर्त तीखे न चोरी ता रातीअे तीखेन निकली मोअे पिछे न तीखे पता लाग़ा ता ते तिन्हां पिछे दौड़े काफी रसता तें केरिया ते तिन्हांवे रस्ते न मिले अयोध्या रें पाण्डे ते रस्ते न ढौके ता तिन्हें सर्भा अं सौ मूर्ति झूकसी डाई ता तिनावे बोलू जं भाई भगवान रामचन्द्रा जौखे वं भी जाणा होला अं भगवाने री मर्जी सा तुसे भगवाने री मुति वं चका ता आपणी अयोध्या वं नेआ । तिन्हें पुजारी पाण्डे भगवाने री मूर्ति चकणी लाई पर ते तेसा मूर्ति वं नहीं चकी सके ओच्छो जेई ता मूर्ति ती पर भगवान रामचन्द्रा री आपणी मर्जी भी उतराखण्डा न ऐणे री ती तिन्हें केतरा जोर लाऊ पर ते मूर्ति वं ढोकी नहीं सके, तेंवे कुल्लू बे तिन्हें मूर्ति चकणी लाई ता सौ तिन्हें चकी तेंवे अयोध्या रें पाण्डे निराश होईया तीखे न वापस आपणी अयोध्या नागरी न नौठे । तिन्हें मूर्ति आणोया कुल्लू पजाई । तीखे राजे तेइरी स्थापना केरी ।

कुल्लू न अवं भी सौ मूर्ति सा कुल्लू सुलतानपुरा । रघूनाथपुरा न रघुनाथ रा मन्दिर सा तुईन बाद राजे आपणा सारा राज पाठ रघुनाथ जी वं धिना

भापू तिन्हारा नूमाईदा बणीया कीम चलांदा लाग़ा । तूईन बाद राजा रा कुण्ट हट्टू । तैदी न बाद अं कूल्लू दुशहरा भी रघुनाथ जी री गात्रा सेग सम्पन होआ सा । बाबा फुआरी जी अं राजे री सारी बिमारी दुःख-दलित्त्र दूर करे ।

बाबा फुआरी रोज नहाईदे मणीकर्णा बं जा ती, ते मणीकर्णा न एदेआ बड़ो बलाग पा ती, दुआले रं पुजारी रोज वंडे तंग लागे एदे, तिन्हावे एक रोज अं गप्प सुभी जे जिसी फुआरी बाबा मणीकर्णा बं जा सी तेई गोलू न लाख शेटीआ डाहणी, दूजे रोज तिन्हे तंडाए केरु जेवं बाबा फुआरी वापस आवे ता तिन्हे तीखे लाख शेटीं धिन्नी तिन्हे तुइंरा भतलव समझी लऊ ता तदी न बाद मणीकर्ण जाणा छोडू तवे ते तीखे न ते नोठी सब म्हारं पुराणे आदमी बोला सी जे बाबा फुआरी एई जिस्मा समेत अमर सी, तुइन बाद ते कदी ओखे नहीं आए । कई बार तिन्हे रं दर्शन कई लोका बं तीखे होआ सी ते साधू रं भेशा न अं मिला सी । अं में तुआवे बाबा फुआरी री कथ जे म्हारं काफी मशुहर सा तुसा बं बी देसी भावो री बोहा बं काफी आदमी ओखे बाबा फुआरी जी री गुफा बं ऐजा सी 19 भादो री राती जागरण केरिया 20 भादो तीखे तिहाइया सी, बड़ा पवित्र, एकांत जंगला न अं जगहा सा जुण भी ओखे जा सा जेतरी देर ओखे वेशा सा ता साधू बणी जा सा सतसंग ता तीखे रोज अं होआ सा । बाबा फुआरी म्हारी महान हस्ती सी । राजे रं घीरा न अं दे भी एक आंवे रा पोट सा तूईने बाबा फुआरी जी रं वारं न लिखुंदा सा जे, जेबे कल्लू न रामशिला नामक जगह रे चोदहा टुकड़े होले ता हाऊं दर्शन देनू ।

“ऊतरा खण्डा न मनू जो हुअं ।

हाऊं ता बुझा सा,

ओखे न सुरित री रचना हुई ।”

शब्दार्थ

शब्द	अर्थ	शब्द	अर्थ
1. ध्याही	बिन को	9. हाजी भी	अभी भी
2. डोली	गिर गई	10. गोलू	छोटा रास्ता
3. नोई	नदी	11. एजीआ	आ कर
4. ठूठी	बिलस	12. रोगा रोज	अध्या सुनाई
5. पोऊ	पीया	13. पुजोआ	पहुँच कर
6. नोबळ	नोम्बू प्रजाति का एक फल	14. खोरी	खुराई
7. कोईवे	कहीं	15. डोके	पकड़े
8. गुका	सुखा	16. बलाग	बेर
		17. ग्राम्बा	तांबा

जचीली जातर

बड़ी पराणी गल सा जगतमुखा आगे अनारा नां रे रां न एक राणा रा किला थी। सौ राणा बड़ा दुष्ट थी। तादि कालके रिवाजे रे मुताबिक हर रोज एक आदमी आराणी बारी संगे राणा वें दुध देया थी। जुण दुध नई थी वेई सकदा तेई वें बड़ी बुरी सजा मेली थी। अंदे चराणे हर आदमी ठिक बौगता पंदे राणे वें दुध पजाई देया थी।

एकी रोज एकी ब्राह्मणे री बारी थी। बड़ी कोशिश केरी तेईए पर दुध रा इत्तजाम नी हुआ। अवं ता तेई सामणें मीत नीचदी लागी। सौ बड़ी फिकरा न थी पौउदा जे अवं की केरनूं कीन आणनू दुध। तेई ब्राह्मणे रे घौरा एक बच्चा थी हुआदा। तेईयें आराणी लाड़ी रा दुध राणे वें नेऊ ता आपणी जान छुड़ाई। रीजा साई राणें दुध री खीर वणाणे रा हुकम धिना। जवें राणे खीर खाई ता तेईवें सौ बड़ी खरी लागी। राणा बड़ी सोच न पौऊ थी जे ऐ खीर स्वाद किबे सा तेईयें सौ ब्राह्मण डाधाऊ ता तेईन सब किछ पूछ। ब्राह्मण आपणी जान वचदी हेरिया सब किछ ठीक-२ दस्सी धिना।

अब ता राणा खुशी संगे पामल होई गोऊ थी तेइयें हुकम धिना जे मेरे राजा न जुण भी बच्चा पंदा होला तेईवें कत्त केरी देआ होर दुध मुंव पजाई देआ। राणा रा राज थी जुल्म पूरें जोरा पंदे थी। कौसरी मजाल थी जे राणे रे हुकमा वें न मने? पंदा हौंदे सारे बच्चे लाए मारने होर दुध राणा वें मिलदा लागी। एई घोर पापे रा रौला चोऊ पास खूब पौऊ पर कौसी री वो हिम्मत नई थी जे सामणें एजिब्रा राणा रा विरोध केरे।

एकी रोज एक आदमी घुमदा-२ जगतमुख पूजू। सौ बड़ा भारी थकी गोऊ थी। सौ एकी टोहली पंदे बंठा तौसे तेईवें नींदर झाई गोई। सौ नांगी जाँगे थी। बोला सी जे तिसी फंदे एक बुडि बेटड़ी थी चौलीदी तेसरी पीठी न किरड़ा थी। तेस बुडि तेईरी जाँघा धीरे भालु तेस हेरू जे तेइरी जाँघा न राज रेखा सा। तेसे सौ जगाऊ ता आपू संगे नेऊ। किरड़ें न पाइया तेसे सौ महला हांदर नेऊ। तेस सारे लोका जगाए होर ते तेस पास होई गाए। अवं तेस बुडिऐ आराणा चमत्कार दसू। सौ भाऊ-२ वधदी गोई होर बड़ी भारी लौमी होई गोई। सौ आदमी तेस आराणे कीन्हा पंदे थी डाऊदा। फिरी तेस तेइन पूछ जे तौन की लागी सा हेरीदा। तेइयें बोलू-बारी दलासणा भाऊ ता छोटे वेलंगा न भयाऊ।

तेस बुद्धि ए एलान केरु जे तू एई देशे रा राजा सा । सारी जनता राणे रे बरखलाप ती संगे रौहली । वस फिरी की थी राणे रा जुलम खत्म हुआ । ए बुद्धी थी देवी हिडमा । श्रौख न लेइया कुल्लू न राणा खानदान खत्म हुआ ता राजा खानदान शुरू हुआ ।

शब्दार्थ

शब्द	अर्थ	शब्द	अर्थ
1. नीचदी	नाचती	10. बेटड़ी	घोरत
2. सोचा न	सोच में	11. घोर	की घोर
3. गधाऊ	बलाया	12. जगाऊ	उठाया
4. रौला	शोर	13. संगे नेऊ	साथ में गई
5. कोसी री	किसी को	14. भाऊ-भाऊ	ऊपर-ऊपर
6. एजिआ	आ कर	15. हेरिदा	दिखाई देता
7. टीहन	चटान	16. भयाऊ	नीचे
8. नौंदर	नींद	17. गूर	जिम में दैविक शक्ति प्रवेश करे
9. नांगी जींगे	नंग पांव		

दिपारी ठाकर

कुल्लू देऊ देवता री भूमि मने जा सा । औबे थोड़ी-२ दूरी पंढे कीसी न कोसी देऊ या देवी रा डेहरा हेरने व मिला सा । तफरीवन हर घाएं रा घापणा-२ देऊ हौआ सा होर घां न तेइरा डेहरा होआ सा । हर देऊ-देवी संगे कोई न कोई कथा जरूर होआ सा । सिर्फ देऊ-देवी नंग ए कथा ना हौंदी पर रावसा री कथा भी बुजुर्ग न गुणन व मिला सी । ए कथा जुणा जे कांचे भी लिबुई दी नई हौंदी पर लोका व जवानी याद हौआ सी लोक कथा कहला सी ।

एडी ए कथा लोका एक दूजे न गुणीआ याद रखा सी होर आगे न आगे ए कथा चोलदी रोहा सी । कई बारी ता ए कथा वदलुइया होरे री होर भी होई जा सी ।

कौसी देऊ या देवी रा डेहरा कदी वणु ए ता पता लाणा बड़ा मुदकल हौआ सा । हां ए डेहरा एंडा किब वणु ऊंदरी दारे न फिरी भी पता लागी सका सा ।

विजली महादेऊ रा डेहरा बोला सी सेभी न पैहले गलाऊ ए आपणा जाला बुणीआ कणाऊ थी तुइन बाद ए डेहरा बिल्कुल तंडा वणाए गोऊ जंडा जाला थी । श्रंटी-२ होर मन्दिर होर डेहर र वार न भी कथा सी । दियारी ठाकरे रा डेहरा बोला सी डेगा केरिया सा केरुदा । ए डेगा बोला सी देऊ-२ री आपणी लड़ाई संगे सा हुआदा ।

रावस ता देऊ आपून लड़वें आए पर कभ-२ देऊ भी आपून लड़ी पीड़ा सी । देऊ री देऊ संगे लड़ाई ता बड़ी बुरी हौआ सा किबे जे दुई आगे बड़ी

ताकत होआ सा । कुल्लू न दयार नां री एक जगा सा । औखे दियारी ठाकर नां रें देऊ री बड़ी मानता सा । उई जगा एई देऊ रा डेहरा भी सा । दियारी ठाकरे रा डेहरा डंगा सा । एंडा बोला सी से एं डेहरा डंगा केरिया केरदा सा ।

कुल्लू न खोखण नां री एक जगा सा औख रे लोका आदी-ब्रम्हा नां रे देऊ वें मना सी । उई जगा न आदी ब्रम्हा रा डेहरा भी सा । एंडा बोला सी जे एकी वारी कौसी गला पंदे दूई देऊ रें बीच थोड़ा जेहा भगड़ा हुआ । दूए देऊ बड़ी ताकती आल थी तवे हार मनण आला भी नई थी कोई गल एतरी वधी गोई से दूए देऊ आपन भौटिदे लागे दयारी ठाकरे लाए वाण मारने ता आदी ब्रम्हा रोह लुकिया । वेयारी ठाकरे बडे भारी बोहू तीर मारे पर आदी ब्रम्हा वें नी लागे कोई तीर । एं लड़ाई खासी देर चौली । दयारी ठाकरे जवें तीर मारिया थकी गोऊ ता सी आपणे डेहरें हांदर चली गोऊ । खोखण जांदी घरे हाजी तंग भी दियारी ठाकरे रें मारए तीर हेरें जाई सका सी जुणा से अवे 'ओड़ी' बणी गोए सी ।

अब जब भे दियारी ठाकर खूब तीर मारी मारीया थकी गोऊ थी होर डेहरें हांदर थी वेठादा तवें वारी आदी ब्रम्हा री थी । आदी ब्रम्हा कोई तीर नी मारु पर तेइयें एक होछा जेहा गोशटू लेऊ ता सी आपणी पूरी ताकत लाइया मारु गोशटू ठिक दियारी ठाकरे रें डेहरें पंदे लागे । गोशटू एतरी जोरें थी मारुदा भे दियारी ठाकरे रा डेहरा डंगा होई गोऊ । गोशटू बिल्कुल ठिक जगा भी लागे । वस तदी न लेइया बोला सी से दियारी ठाकरे रा डेहरा डंगा सा होई गोऊदा जुण से हाजी दोई भी डंगा सा । एं डेहरा डंगा ता सा पर एं डोलुदा नई । इटली न एक टावर सा जुणी वें पीसा रा टावर बोला सी सौ भी डंगा सा होर सौ भी डोलुदा नई । एंडी गल नई आथी भे तोखे भी कौसिए गोशटू मारु होला होर सौ टावर डंगा केरी शेट होला ।

शब्दाथ

शब्द	अर्थ	शब्द	अर्थ
1. कौखे	कहीं भी	8. एतरी	इतनी
2. कौली	किसी	9. भौटिदे लागे	लड़ने लगें
3. डेहरा	देव मन्दिर	10. लुकिया	छुप कर
4. गलाऊ	मकड़ी	11. हांदर	अन्दर
5. जाला	जाल	12. गोशटू	उपले
6. डंगा	देढ़ा	13. डोलुदा	गिरता
7. कभे-२	कभी-२	14. शेट	फँका

सोमसो (त्रैमासिक पत्रिका)

हिमाचल कला-संस्कृति-भाषा अकादमी के तत्वावधान में पर्वतीय संस्कृति-कला एवं भाषा के विभिन्न पक्षों को उजागर, संरक्षित तथा पोषित करने के उद्देश्य से एक त्रैमासिक पत्रिका **सोमसो** का प्रकाशक जनवरी 1975 से हो रहा है। पत्रिका का वार्षिक चूदा मात्र 12 रुपये है तथा यह प्रदेश के कालजों व स्कूलों के पुस्तकालयों के लिए शिक्षा निदेशक हिमाचल प्रदेश द्वारा स्वीकृत है।

पत्रिका के अब तक के अंक भी अकादमी कार्यालय में प्राप्य हैं। संस्कृति, भाषा एवं कला के अध्ययताओं के लिए यह पत्रिका नये कीर्तिमान स्थापित करती है।

कृपया निम्न पते पर सम्पर्क स्थापित करें—

सचिव,
हिमाचल कला-संस्कृति-भाषा
अकादमी, परीमहल,
शिमला-171009

हिमाचल कला-संस्कृति-भाषा अकादमी परीमहल शिमला-६ के प्रकाशन

1. **पहाड़ी लोक रामायण**
(प्रदेश के विभिन्न जनपदों में प्रचलित राम कथा के रूपों का संकलन तथा सारगर्भित विवेचन) । 12-00
2. **कृतम्भरा**
(प्रदेश के संस्कृत कवियों की कविताओं का हिन्दी अर्थ सहित संकलन) । 6-00
3. **माला रे मणके**
(हिमाचल के प्रसिद्ध पहाड़ी कवियों की कविताओं का संकलन) । 6-00
4. **छनाट**
(संस्कृत के प्रसिद्ध नाटककार महाकवि भाम के छः नाटकों का पहाड़ी भाषा में रूपांतर) । 12-00
5. **श्यामला**
(प्रदेश के प्रसिद्ध हिन्दी कवियों की कविताओं का संकलन) । 15-00
6. **कथा सरवरी भाग-1**
(हिमाचल प्रदेश के शिमला, सोलन, सिरमौर तथा कुल्लू जनपदों की लोक-कथाओं का संकलन) । 2-50
7. **कथा सरवरी भाग-2**
(हिमाचल प्रदेश के चम्बा, कांगड़ा, ऊना, मण्डी, हमीरपुर तथा बिलासपुर जनपदों की लोक-कथाओं का संकलन) । 2-50
8. **इन्दु काव्यम**
(भूतपूर्व सिरमौर रियासत का संस्कृत भाषा में इतिहास) । 15-00
9. **उर्दू काव्य संकलन**
(प्रदेश के उर्दू कवियों की कविताओं का संकलन) । (प्रेस में)

नोट—हिमाचल कला-संस्कृति-भाषा अकादमी के सभी प्रकाशन प्रदेश के पुस्तकालयों के लिए स्वीकृत होते हैं ।